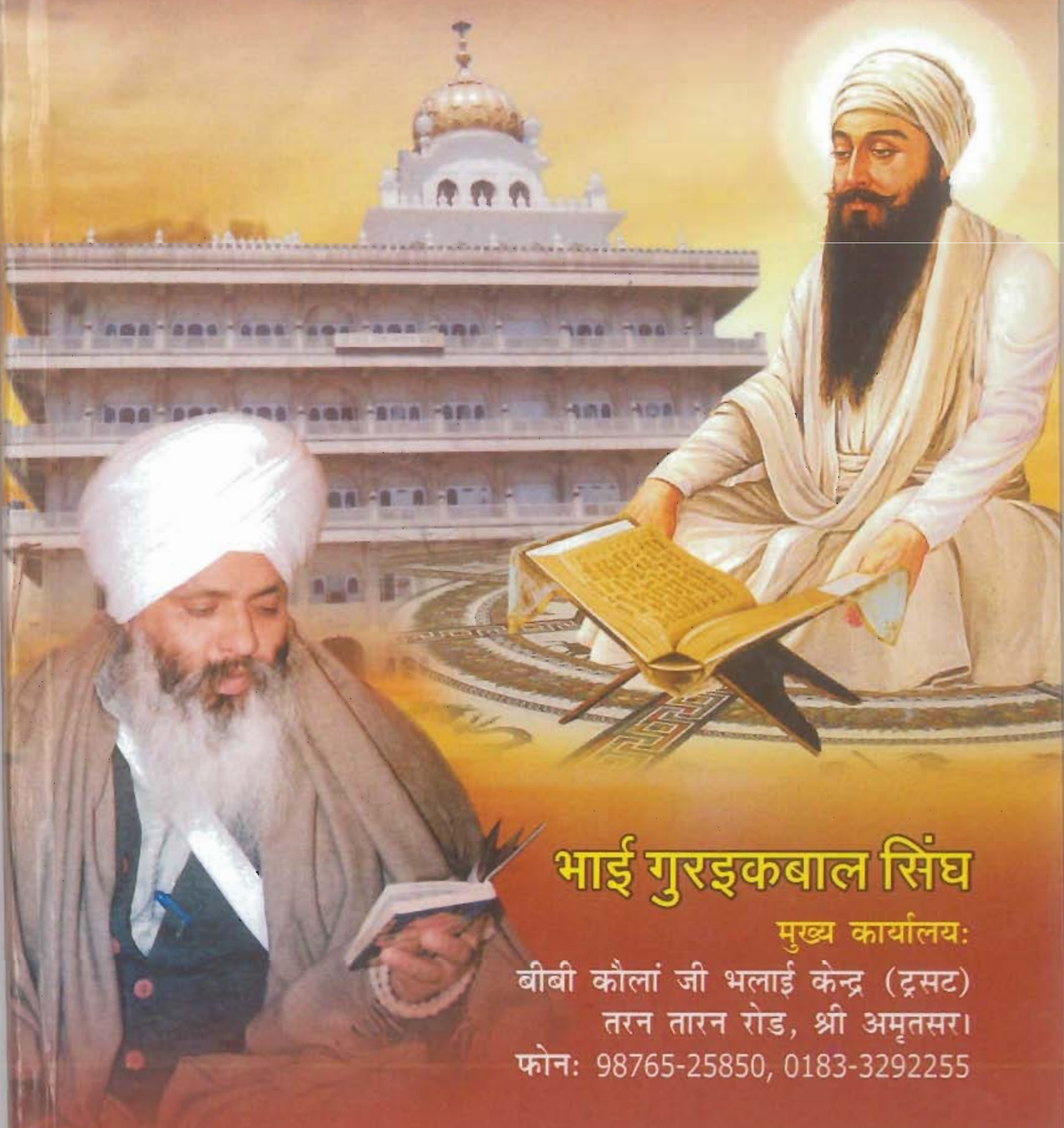
श्री गुरु अर्जुन देव जी के ४०० वर्षीय शहीदी पर्व (शतावदी) को समर्पित

नौ विशेषताएँ

श्री सुखमनी साहिब जी



भाई गुरइकबाल सिंघ

मुख्य कार्यालय:

बीबी कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रसट)

तरन तारन रोड, श्री अमृतसर।

फोन: 98765-25850, 0183-3292255

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नौ विशेषताएँ

श्री सुखमनी साहिब

लेखक

भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंघ जी

माता कौलां जी टकसाल वाले

प्रकाशक

भा. चतर सिंघ जीवन सिंघ

अमृतसर।

ISBN : 81-7601-794-9

प्रथम संस्करण दिसंबर 2006
द्वितीय संस्करण अक्तूबर 2015
भेटा : 150-00

प्रकाशक—
भा. चतर सिंघ जीवन सिंघ
बाज़ार माई सेवां अमृतसर।
फोन/फैक्स : 91-183-2542346, 2547974, 2557973

Website : www.csjs.com

मुद्रक : जीवन प्रिंटर्ज, अमृतसर।

समर्पण !

नौ विशेषताएँ

श्री सुखमनी साहिब

श्री गुरु अर्जुन देव जी के ४०० वर्षीय
शहीदी पर्व (शताब्दी) को समर्पित

आशीर्वाद



आदरणीय भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंघ जी से सतिगुरु *आपि जपै अवरह नामु जपावै* की महान सेवा ले रहे हैं। गुरमत्त के प्रचार हेतु जहाँ भाई साहिब गुरुबाणी कथा-कीर्त्तन द्वारा देश-विदेश में संगतों को गुरुबाणी से जोड़ रहे हैं। वहाँ धार्मिक पुस्तकें लिखकर भी बहुत बड़ा परोपकार कर रहे हैं। भाई साहिब जी की प्रथम पुस्तक ''मै दसिहु मारगु संतहो'' जिसमें प्रभु के मार्ग पर चलने की आठ अनमोल युक्तियाँ बताई गई थीं। जिसे संगतों ने पढ़कर बहुत प्यार दिया और अब भाई साहिब जी ने दूसरी पुस्तक ''नौ विशेषताएँ श्री सुखमनी साहिब जी'' की लिख कर भूले-भटके लोगों को श्री सुखमनी साहिब जी के खजाने से जोड़ने का प्रयास किया है। हमारी गुरु पातशाह के समक्ष प्रार्थना है कि श्रद्धालु इस पुस्तक को पढ़कर अधिक से अधिक श्री सुखमनी साहिब जी की गुरुबाणी से जुड़ जाएं।

दास

बाबा कुंदन सिंघ जी के सेवक

बाबा हरभजन सिंघ

(नानकसर कलेरां)

आशीर्वाद



परम आदरणीय भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंघ जी संचालक माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट जिस द्वारा अनेक संस्थाएँ चल रही हैं। भाई साहिब द्वारा प्रथम पुस्तक 'मै दसिहु मारगु संतहो' लिखी गई थी जो संगतों ने आशा से अधिक पसंद की जो पढ़ने से एक आत्मिक रस उत्पन्न होता है। प्रत्येक प्राणी प्रभु के मार्ग पर चलने का यत्न करता है।

आज जब सिक्ख कौम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से मिलकर सभा सोसाइटियों के भरपूर सहयोग से शहीदों के सिरताज पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी की चौथी शताब्दी मना रही है। उस में विशेष सेवा करने के लिए गुरु रामदास जी ने भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंघ जी को बहुत ही निर्मित व सही सोच देकर यह दूसरी पुस्तक श्री सुखमनी साहिब जी की नौ विशेषताओं वाली लिखवाई है यह संगतों के हृदयों को शान्ति प्रदान करेगी। इस पुस्तक में जो मैटर है वह पढ़कर ही अनुभव होगा कहने का विषय नहीं है क्योंकि जैसे सतिगुरु जी ने इनकी कथनी में रस भरा है वैसे इनकी लिखाई में आए शब्द भी रस भरपूर हैं। मेरी हार्दिक प्रार्थना है सतिगुरु जी अपनी सेवा उन से लेते रहें और यह सिक्ख धर्म में मार्गदर्शन साबित हो।

गुरु पंथ का दास

सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ

मुख्य ग्रंथी सच्चखंड श्री हरिमन्दिर साहिब,

श्री अमृतसर।

आशीर्वाद



श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के भीतर मानवता की भलाई करने हेतु सतिगुरु जी ने समय की बाणियां प्रदान कीं, महीने सफल करने हेतु 'बारह माह' जी की रचना की। दिन सफल करने हेतु 'श्री जपुजी साहिब' जी की रचना की। एक दिन सिक्खों ने विनती की कि सतिगुरु गुरुबाणी में श्वास-श्वास नाम जपने की बात बार-बार आती है। इसलिए हम पर कृपा कीजिए कि दिन-रात के हरेक मनुष्य जब चौबीस हजार श्वास लेता है वह सफल हो जाएं। सतिगुरु जी ने सिक्खों की विनती सुनकर श्री सुखमनी साहिब जी की रचना की और इसका नाम रखा 'श्री सुखमनी साहिब' मन को सुख देने वाली रोगों की औषधि सिमरन करके ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ नवनिधि देने वाली और ज्ञान-ध्यान, तत्व-बुद्धि देने वाली इस बाणी के आधार पर सिक्ख धर्म के महान कीर्त्तनीए भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंघ जी नौ विशेषताएँ लिखकर श्री गुरु अर्जुन देव जी पातशाह की खुशियाँ ले रहे हैं। सिक्ख पाठकों को विनती करता हूँ कि यह पुस्तक पढ़कर आप जी गुरु की ओर दो कदम अवश्य आगे बढ़ोगे।

दास

सिंघ साहिब ज्ञानी जसविन्द्र सिंघ

ग्रंथी सच्चखंड श्री हरिमन्दिर साहिब,

श्री अमृतसर।

धन्यवाद

धन्यवाद है श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का और गुरु साहिब के प्यारे बाबा नंद सिंघ जी का, बाबा कुन्दन सिंघ जी का, जिनकी संगति और जीवन पढ़कर श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी से प्रेम हुआ। मौजूदा महापुरुष बाबा हरभजन सिंघ जी (छोटे) और सच्चखंड श्री हरिमन्दिर साहिब जी के सिंघ साहिबानों का अत्यंत धन्यवाद जिनके आशीर्वाद से बल मिला।

इस किताब के लिखने से छपने तक जो भी गुरु साहिब जी ने गुरुमुख प्रेमियों से सहयोग दिलवाया है उन में हरविन्द्र सिंघ (डी सी वीर जी) सहायक संपादक सिफति सालाह जी का अत्यंत धन्यवाद है, जिन्होंने दिन-रात भाग दौड़ करके सारे डिजायन और शुद्धिकरण एवं अन्य जिम्मेदारियाँ निभाई हैं। भाई जसविन्द्र सिंघ पटियाला और इनके साथियों के अत्यंत धन्यवादी हैं जो सारी रूप-रेखा की शुरूआत करवाते हैं। हरवीन कौर बहन जी ग्रीन एवेन्यु जिन्होंने दिन-रात एक करके सारी किताब की फाइनल रूप रेखा तैयार करवाई है और विशेषकर भाई जसविन्द्र जी सिविल लाईन वाले, भाई पाल सिंघ जी जिन्होंने किताब बारे अनेक जिम्मेदारियों में सहयोग दिया है और भाई चत्तर सिंघ जीवन सिंघ फर्म जिन्होंने सारी छपाई, कम्प्यूटर कार्य एवं किताब प्रकाशित करने की जिम्मेदारी बाखूबी निभाई है।

अन्य भी गुरु के प्यारे और गुरु की संगतों के आशीर्वाद इसी तरह दास गरीब के सिर पर बांधते रहें।

दास

भाई गुरइकबाल सिंघ

जरूरी निवेदन

संगतों के प्रति नम्रतापूर्वक निवेदन है कि यह नौ विशेषताएँ कोई अंत नहीं है, यह जितनी खोज गुरु साहिब जी ने करवाई है उतनी आप जी के समक्ष आई है। श्री सुखमनी साहिब जी की विशेषताओं की कोई फाइनल गणना नहीं कर सकता।

—दास : लेखक

विषय सूची

भूमिका

जगत के उद्धारक, सोढी वंश के आभूषण, प्रत्यक्ष हरि, पारब्रह्म का स्वरूप, श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने संसार में केवल परोपकार हेतु ही शरीर धारण किया। आप जी का हृदय इतना कोमल, इतना दयावान है कि उस हृदय में संसार के जीवों का दर्द हर वक्त धड़कन बनकर धड़कता है। किसी का दर्द देख भी नहीं सकते।

गुरु अर्जुन देव जी के परोपकार गिनोगे तो आप कहोगे, 'सतिगुरु तेरे जैसा तू ही हैं।' ऐसी देनें दे गए, कोई गिनती नहीं, उन देनों से कितनों ने लाभ प्राप्त किया, कितने प्राप्त कर रहे हैं और कितने प्राप्त करते रहेंगे।

तरनतारन साहिब, गुरु साहिब के कोमल हृदय में से निकली बख्शिश ने पता नहीं कौन-सी ताकत भरी कि त्वचा के कई रोग, जैसे कुष्ठ, इत्यादि कोई भी अन्य शारीरिक दुख, कष्ट हो, सतिगुरु के चरणों का ध्यान धारण करके पावन सरोवर में स्नान करने से सब दुख निवृत्त हो जाते हैं।

जालंधर के समीप नकोदर रोड पर गुरुद्वारा मालड़ी साहिब के स्थान पर ऐसी बख्शिश कर दी कि किसी को जोड़ों का दर्द हो, उस स्थान पर उपस्थित होने से कष्ट से छुटकारा मिलता है।

यही नहीं, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की देन, श्री सुखमनी साहिब की देन, अमृतसर में गुरुद्वारा संतोखसर की देन, हरिमन्दिर साहिब की निराली मर्यादा को बांध कर एक जहाज सिक्ख धर्म को देने की देन। यहाँ तक कि, दुखियों को सुखी बनाने के लिए इस पवित्र दाता ने तो अपना शरीर भी अर्पण कर दिया। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि उस समय पता नहीं दुनिया पर कौन-सी मुसीबत आनी थी, कौन-सी अग्नि बरसनी थी, जिसे वक्त के मालिक, गुरु

नानक की पाँचवी ज्योति, कभी किसी का दुख, कष्ट, विपदा न देख सकने वाले अन्तर्यामी सतिगुरु ने, अपने शरीर पर सारा दुख लेकर, दुनिया को उस भयानक अग्नि से बचा लिया। जिस दिन प्रेम-दृष्टि से देखोगे, कहोगे, यह शीश भी तेरे चरणों में भेंट हो जाए, वह भी थोड़ा है। हमारे शरीर का एक-एक रोम भी गुरु अर्जुन देव जी की देनें नहीं दे सकता, क्योंकि जितनी उन्होंने कृपा की वह कुछ दामन में डाल गए।

बाबा नंद सिंघ जी के वचन हैं : कोई पिता पुत्र के लिए फल लेकर आता है, कोई धन लेकर आता है, कोई वस्त्र लेकर आता है, परन्तु हमारा पिता, गुरु नानक अपने बच्चों के लिए 'धुर की बाणी' लेकर आया है। अपने बच्चों के लिए धुर से गुरुबाणी की देन लेकर आया है। गुरुबाणी की देन दामन में डालकर सारी दुनिया पर बहुत बड़ा उपकार किया। सारी दुनिया के कल्याण हेतु बहुत सारी बाणी उच्चरित करके जीवों के आत्मिक बल को ऊपर उठाया। दुखियों के दर्द बांटने वाले, सारी दुनिया पर दयादृष्टि करने वाले, पांचवें जन्म में और मेहर के घर में आए। इन्होंने अमृत रूपी सुखमनी की देन सारे जगत के दामन में डाली। दया के सागर, पांचवें गुरु नानक ने, सदैव स्थिर रहने वालीं, बहुत बड़ी देनें हमारे दामन में डालीं, जिन महान देनों में एक महान देन, कृपानिधि है— 'श्री सुखमनी साहिब'। यह इहलोक में भी सुख देती है और परलोक में भी उत्तम पदवी दिलवाती है।

सुखमनी साहिब का नित्य पाठ करने से इन्सान को अनेकों ही बख्शिशें प्राप्त होती हैं।

इह लोक सुखीए परलोक सुहेले॥
नानक हरि प्रभि आपहि मेले॥

(अंग २९२)

क्या-क्या प्रशंसा करें, सतिगुरु के दिए इस अनमोल खजाने की। हाथों पर सरसों जमाने वाली बातें हैं, कोई सुनी-सुनाई नहीं। जिस किसी ने भी इस बाणी का सहारा लिया है, चाहे वह किसी भी धर्म का हो, चाहे उसने बाणी तन करके पढ़ी हो और चाहे मन

करके, इस बाणी ने उसका लोक-परलोक ही संवार दिया है।

सुख़मनी साहिब की बाणी श्री गुरु अर्जुन देव जी ने गुरुद्वारा मंजी साहिब, रामसर के साथ श्री अमृतसर साहिब में 'गउड़ी राग' में उच्चारण की। यह बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंग २६२ से अंग २९६ तक दर्ज है।

इसकी प्रत्येक अष्टपदी की आठ पउड़ियाँ हैं। एक-एक पउड़ी में १० पंक्तियाँ हैं। केवल पहली पउड़ी में 'रहाउ' की दो पंक्तियाँ अधिक हैं–

''सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु॥
भगत जना कै मनि बिस्राम॥ रहाउ॥

यह पंक्तियाँ सारी बाणी का मूल रूप हैं, शेष सारी बाणी अनुवाद रूप है। कलियुग के घोर समय में पता नहीं अपनी कितनी कमाई देकर गुरु अर्जुन देव जी ने यह हीरे-लालों जैसा भण्डार हमारे दामन में डाला है। अनंत बड़ाई हैं सुखमनी साहिब की। पिता की देनों और देनों की बड़ाई को गिनती में लाना संभव नहीं। केवल जितनी डुबकी लगाई जाए, उतनी गिनती आ जाएगी, उसके आगे 'समाप्ति' नहीं आ सकती। सुखमनी साहिब की बाणी का महात्म्य किसी न किसी विधि आप सब तक पहुँच सके, इसी मकसद की खातिर, गुरु साहिब की प्रेरणा, गुरु साहिब की कृपा के कारण भाई गुरइकबाल सिंघ जी ने यह अनंत बड़ाईयों में से ६ विशेषताएँ सुखमनी साहिब की विवरण सहित किताब लिखने का प्रयास किया है। भाई साहिब का एक ही चाव है कि गुरु कृपा करे, हर बच्चे, युवक, वृद्ध को इस बाणी से प्रेम हो जाए, हमारा सभी का सुखमनी साहिब की बाणी एकाग्रचित्त होकर पढ़ने का नित्य का नियम बन जाए।

द्वारा :

बहन हरवीन कौर
३२१, ग्रीन एवेन्यु, अमृतसर।

पहली विशेषता

"श्री सुखमनी साहिब जी का एक पाठ श्रद्धापूर्वक करने से २४००० श्वास सफल होते हैं।"

एक दिन श्री गुरु अर्जुन देव जी प्रभातकाल स्नान करके बेरी के नीचे बैठकर नित्यनियम में व्यस्त थे। जब नित्यनियम से निवृत्त हुए तो कुछ सिक्खों ने विनती की सतिगुरु जी के चरणों में कि सच्चे पातशाह जी, बाणी द्वारा उपदेश मिलता है कि श्वास-श्वास नाम जपो, बंदगी करो, कोई भी श्वास व्यर्थ न जाए, गुरु को वह भाता है जो श्वास-श्वास नाम जपे।

गुरु रामदास जी की पंक्तियाँ भी हैं :–

"जो सासि गिरास धिआए मेरा हरि हरि
सो गुरसिखु गुरू मनि भावै॥"

(अंग ३०५)

सिक्खों ने विनती की, सतिगुरु यह श्वास-ग्रास की अवस्था एकदम नहीं मिलती, समय पश्चात मिलती है। पउड़ियां हैं :–

एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस॥

(अंग ७)

यहाँ ध्यान देने योग्य बात है, ध्यान देना–

यह नहीं कि उद्यम ही नहीं करना। हम सब को उद्यम नहीं छोड़ना चाहिए, इन पउड़ियों (सीढ़ियों) पर चढ़ने का प्रयास करते रहना चाहिए, दिल छोड़ कर नहीं बैठ जाना कि मैं तो यहाँ पहुँच ही नहीं सकता।

द्वापर युग के अवतार श्री कृष्ण जी ने एक कीड़े की उदाहरण दी थी। अपने घरों में कई बार देखो, एक कीड़ा दीवार पर कितनी बार चढ़ने का प्रयास करता है, गिरता है, फिर चढ़ने का प्रयास करता है। कई बार जहाँ हाथ धोते हो वाश-वेसिन, अथवा कुछ अन्य ऐसे स्थानों पर जहाँ फिसलन हो, वहाँ कीड़ा चढ़ता है, गिरता है, फिर चढ़ता है, फिर गिरता है। कृष्ण जी ने कीड़े की ओर देखकर कहा था, देखो, दस बार गिरा, पंद्रह बार गिरा, बीस बार गिरा, लेकिन इक्कीसवीं बार चढ़ने में सफल हो गया। कीड़े से ही शिक्षा ले लो, प्रयास जारी रखना, एक दिन अवश्य सफलता मिल जाएगी। एकदम नहीं अवस्था बनती।

भाई साहिब भाई वीर सिंघ जी जो कि रस से भरे जीवन का आनंद हर समय प्राप्त करते थे, बड़ी नम्रता वाली बंदगी करने वाली आत्मा थे। उन से भी कुछ प्रेमियों ने आध्यात्मिक प्रश्न किया था कि भाई साहिब ! 'वाहिगुरू' 'वाहिगुरू' जाप करते हैं 'रस' नहीं आता। उत्तर में भाई साहिब जी ने विनती की, प्यारो ! यह सहज का मार्ग है। यह अवस्था शीघ्र नहीं मिलती। गुरु अमरदास जी भी तो मोहर यहीं लगाते हैं। जीवन में आनंद आ गया, सच्चे गुरु का मिलाप हुआ है, परन्तु यह मिलाप हुआ है सहजता से :

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ॥
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ॥

(अंग ९१७)

भाई वीर सिंघ जी ने वचन किया कि यह सहज का मार्ग है। उदाहरण देकर समझाया कि जैसे युद्ध के मैदान में सैनिक शत्रु से लड़कर जीत प्राप्त करता है तब फिर सैनिक को 'आनंद' अर्थात् 'रस' अर्थात् प्राप्ति (अवस्था) प्राप्त होती है। जीवन में भी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार एवं आगे से कई शत्रुओं, ईर्ष्या, निंदा, चुगली इत्यादि इन से जब तक युद्ध है तब तक रस कहाँ। 'वाहिगुरू' 'वाहिगुरू' रूपी गोले रसना और मन रूपी तोप में से चला कर दुश्मनों को शांत करने के पश्चात् ही श्वास-श्वास जपने

एवं रस की प्राप्ति होती है।

एक बार कोई २६-२७ वर्ष का नवयुवक बाबा नंद सिंघ जी के पास आया और कहने लगा कि मैंने सुना है, आप जी ने गुरु नानक के दर्शन किए हैं, बाबा जी ने न ना की और न हाँ, सोचा यदि कहते हैं कि किए हैं तो अहंत्व है, यदि कहते हैं नहीं किए तो झूठ है। कहने लगे, तू क्यों पूछ रहा है ? कहने लगा, इसलिए पूछ रहा हूँ कि आप ने किए हैं तो मुझे भी करवा दो। बाबा जी कहने लगे कितना पढ़ा है ? कहता एम.ए. पढ़ा हूँ। बाबा जी कहते हम तो सिर्फ पाँच अक्षर पढ़े हैं।

(संत वधावा सिंघ जी हुए हैं, बाबा नंद सिंघ जी के विद्या-गुरु। उन्होंने न तख्ती ली थी और न ही स्लेट। मिट्टी पर ही लिखा था 'उ अ इ स ह' और आगे कह दिया 'कटा यम का बंधन।' और कहा तेरे लिए इतने ही काफी हैं। यहाँ यह मत समझ लेना कि महापुरुष अनपढ़ थे, सांसारिक विद्या यहाँ तक थी। बाणी की मर्यादा में, गुरु ग्रंथ साहिब जी की मर्यादा में जो सूक्ष्मता महापुरुषों ने निकाली वह सामान्य आदमी की सोच से भी दूर हैं। जहाँ सांसारिक विद्या समाप्त होती है, वहाँ गुरु नानक के घर की प्रथम की पढ़ाई आरंभ होती है। एक विद्वान व महापुरुष में बड़ा अन्तर है।) बाबा जी कहते तू एम.ए. पढ़ा है, हम तो प्रथम भी नहीं पढ़े। तू ऐसे कर, हमें बैठे-बैठे एम.ए. करवा दे, हम तुझे गुरु नानक के दर्शन करवा देते हैं। वह नवयुवक कहने लगा, एम.ए. बैठे-बैठे कैसे हो सकती है, इसके लिए मेहनत करनी पड़ती है, शेष क्लासें उत्तीर्ण करनी पड़ती हैं, फिर एम.ए. होती है। बाबा जी कहने लगे, गुरु नानक के दर्शन भी एकदम नहीं होते। उसके लिए भी मेहनत करनी पड़ती है, उद्यम करने पड़ते हैं।

दास का यह कुछ उदाहरणें देने से भाव है कि सीढ़ियां चढ़े बिना मंजिल नहीं मिलती। श्वास-ग्रास की अवस्था बने, यह सीढ़ी बहुत ऊँची है, परन्तु हमने उस कीड़े से शिक्षा लेनी है, उद्यम नहीं छोड़ना। सिक्ख कहने लगे कि श्वास-श्वास नाम चले, यह सीढ़ी बहुत ऊँची है, इस अवस्था पर पहुँचने से पहले ही यदि मृत्यु आ

गई तो हमारा क्या बनेगा? गुरु रामदास जी कहते हैं :–

जो सास गिरास धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिख गुरू मन भावै॥

(अंग ३०५)

कोई सरल मार्ग बता दें महाराज जी।

दूसरी विनती :– सिक्ख कहने लगे, हम अल्पज्ञ जीव हैं, हमारी सोच 'छोटी' है, गृहस्थी का कामकाज भी करना है, बच्चों की देखभाल भी करनी है, आने-जाने वाले अतिथि की सेवा भी करनी है। आप ही कोई सरल मार्ग बताएं। सतिगुरु जी !

बाबा बुड्ढा जी व भाई गुरदास जी भी कहने लगे, सतिगुरु ! अनेक मत्तों में जीवों के कल्याण हेतु कुछ रचा गया है। जैसे सनातन मत्त वाले गीता का पाठ करने में ही जीव का कल्याण मानते हैं। आप जी भी कोई ऐसी बाणी की रचना करो जिसका पाठ करने से जीवों का कल्याण हो जाए और २४००० श्वास सफल हो जाएं। आप जी के सिक्ख कहीं भटक न जाएं।

सिक्खों की इस अरदास के बारे में सूरज प्रकाश ग्रंथ में भी जिक्र है–

"ता ते रचो एक आध बानी। नित जिस पढ़त होहि अघ हानी।
रिदै बसावै कमावै जोई। बहुरि न जनम मरन तिस होई।"

'अघ' कहते हैं पापों को, कमजोरियों को, बुरे विचारों को। 'हानि' से भाव है खत्म होना। यह सूरज प्रकाश में लिखा है कि सिक्खों ने विनती की, सतिगुरु जी, ऐसी बाणी की रचना करो जिसे सिक्ख प्रतिदिन पढ़ें और उनके पाप निवृत्त हो जाएं। पढ़ने के उपरांत, इसे यदि कोई हृदय में बसा ले और कमा ले, उसका जन्म-मरण मिट जाए।

सिक्खों की यह प्रेम एवं नम्रता भरी विनती सुनकर सतिगुरु के कोमल हृदय में सारी सृष्टि के श्वास सफल करने के लिए उमंग अंकुरित हुई कि क्यों न ऐसी बाणी की रचना की जाए, जिसे पढ़ने से मनुष्य के एक दिन में लेने वाले २४००० श्वास सफल हो जाएं।

सिक्खों की विनती पर गौर करते हुए रामसर साहिब के पवित्र, सुहावने, रमणीय माहौल वाले वातावरण में बैठकर जीवों के कल्याणार्थ सुखमनी साहिब की बाणी उच्चारण की। सतिगुरु ने अपनी आत्मिक बख्शिश बांट कर यह अनमोल खजाना संसार के दामन में डाला।

शहीद भाई मनी सिंघ जी वाली टकसाल के मुखिया की सेवा निभाने वाले संत कृपाल सिंघ जी, जिन्होंने सुखमनी साहिब का अनुवाद किया है, वह अपनी लिखत में लिखते हैं कि एक साधारण व्यक्ति रोजाना २४००० श्वास लेता है। योगियों के मत्त में एक ग्रंथ है 'जोग कल्पतर'। इस ग्रंथ अनुसार सच्चे योगी-संत जन रोज़ाना २१६२४ श्वास रोज़ लेते हैं। शेष श्वास उनके जमा रहते हैं। जैसे सरकारी नौकरी करने वाले का जितना वेतन होता है, महीने उपरांत वेतन देते वक्त कुछ रुपए 'प्रोविडैंट फंड' के काट लिए जाते हैं। जिस समय नौकरी की अवधि पूरी हो जाती है, फिर उनके रुपयों के साथ कुछ और रुपए मिलाकर वापिस किए जाते हैं। इसी तरह जो सच्चे योगी परमात्मा की नौकरी करते हैं, रात-दिन भगवान के सिमरन में ही व्यतीत करते हैं, उनके २१६२४ श्वास निकलते हैं, शेष श्वास जमा हो जाते हैं। इसी कारण योगियों की आयु बड़ी होती है।

गुरु अर्जुन देव जी ने यह बाणी सर्व-सांझे चारों वर्णों के लिए रची है। एक सुखमनी साहिब के पाठ के पूरे अक्षर कुल २१६२४ हैं और २३७३ अक्षर पैरों में हैं। जैसे 'प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै।।' 'प्रभ' अक्षर के प के पैर में 'र' अक्षर है। इस तरह अक्षरों का जोड़ २१६२४+२३७३=२३६६७ बनता है। तेरहवीं अष्टपदी की दूसरी पउड़ी में तीन अक्षर बढ़ाए हैं, सारी पउड़ी में 'संत' शब्द आया है, परन्तु तीन पंक्तियाँ हैं जिन में 'संतन' है।

१. "संतन कै दूखनि काग जिउ लवै॥"

२. "संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ॥"

३. "संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै॥"

इन तीनों पंक्तियों में संत की बजाय संतन लिखकर तीन 'न' बढ़ाकर २३६६७+३=२४००० अक्षर पूरे किए हैं।

इसका भाव यह है कि चाहे योगी इस बाणी को पढ़ें अथवा सामान्य गृहस्थी, सभी के ही सारे श्वास सफल होते हैं। कलयुगी जीवों के लिए भी कृपा की, योगियों के लिए भी।

यदि कोई श्वास-ग्रास की अवस्था पर नहीं भी पहँचा, एक पाठ भी सुखमनी साहिब का श्रद्धा-भावना से कर ले, उसके २४००० श्वास सफल हो जाएंगे।

सूरज प्रकाश में इस बारे पंक्तियाँ अंकित हैं :—

प्रात समय इक मन करि पाठ।
मिटहि पाप किरत जाम जु आठ।
जनम मरन तिन को कटि जाइ।
पठि प्रभु चरननि रहे समाइ।

भाव एक पाठ भी प्रातःकाल मन लगाकर कर लो, आठ प्रहर के पाप मिट जाते हैं।

यह है सुखमनी साहिब की बाणी की पहली महानता, विशेषता कि सुखमनी साहिब की बाणी का एक पाठ श्रद्धापूर्वक करने से २४००० श्वास सफल होते हैं।

दास यहाँ एक बात स्पष्ट कर दे। कई जिनकी उच्च अवस्था बन जाए, वह कह देते हैं, अब हम श्वास-श्वास नाम जपते हैं, अब हमें सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ने की आवश्यकता नहीं। यह तो महापुरुष जानें कि इस में कितनी गहराई है। बड़े-बड़े महापुरुष जिनकी श्वास-श्वास नाम जपने की अवस्था है, उन्होंने भी सुखमनी साहिब का साथ नहीं छोड़ा। दास कुछ महापुरुषों का जिक्र कर रहा है—

संत संगत सिंघ जी कमालपुर वाले, रोज़ाना पाँच पाठ सुखमनी साहिब जी के मुख से करते थे अथवा श्रवण करते थे। संगतों से भी लाखों पाठ सुखमनी साहिब के करवाए। वह जानते

थे कि इसमें खजाना है। संत उत्तम सिंघ जी जिन्होंने बाल्यावस्था से सुखमनी साहिब का पाठ कंठ किया और जीवन भर अन्तिम श्वासों तक नित्य नियम से सुखमनी साहिब के कई-कई पाठ बड़े प्रेम व विश्वास से करते और सुनते रहते थे।

संत निहचल सिंघ जी यमुनानगर वाले रोज़ाना दो पाठ सुनते थे।

संत जवाहर सिंघ जी मिठे टिवाने वाले रोज़ाना दो पाठ करते थे।

नूरपुर निवासी संत गुलाब सिंघ जी रोज़ दो पाठ सुनते थे।

शाह जीवने वाले संत हरिदर्शन सिंघ जी ने रोज़ सुखमनी साहिब के पाठ करने भी और सुनने भी।

बाबा नंद सिंघ जी प्रतिदिन पाँच पाठ सेवक से सुनते थे। यह नहीं कि इन महापुरुषों के अन्य नित्यनियम नहीं थे अथवा श्वास-श्वास नाम नहीं थे जपते, परन्तु सबकुछ होने के बावजूद भी सुखमनी साहिब का साथ नहीं छोड़ा।

संत ज्ञानी गुरबचन सिंघ जी खालसा भिंडरांवाले श्वास-श्वास की उच्चावस्था के स्वामी थे, पर रोज पाँच ग्रंथी का नितनेम करते थे। सुखमनी साहिब का नियम उन्होंने भी नहीं छोड़ा। कई बार यात्रा में ही होना, सेवकों ने सो जाना, पर आप सुखमनी साहिब का पाठ करके विश्राम में होते थे।

संत हीरा सिंघ शाहपुर वाले सारा जीवन सुखमनी साहिब का नियम नहीं छोड़ा। और भी असंख्य संत-महापुरुष होंगे जिन्होंने सिमरन-बंदगी होने के बावजूद भी सुखमनी साहिब का साथ नहीं छोड़ा।

हमने बड़ी प्यारी यह शिक्षा जरूर लेनी है कि श्वास-श्वास अवस्था नहीं बनी, सुखमनी साहिब जी का श्रद्धा से पाठ करो, आठों प्रहर के २४००० श्वास सफल हो जाएंगे। श्वास-श्वास अवस्था बन भी गई तो भी सुखमनी साहिब का साथ नहीं छोड़ना।

यह पहली विशेषता है कि एक पाठ श्री सुखमनी साहिब का करने से हमारे दिन-रात के २४००० श्वास सफल हो जाते हैं।

१. यह पहली विशेषता पढ़ने के उपरांत किसी भाई, बहन, वृद्ध का एक पाठ भी श्री सुखमनी साहिब जी का नियम बन जाए तो गुरु की कृपा से यह प्रयास हम सफल समझेंगे।

—द्वारा : दास लेखक

दूसरी विशेषता

''कलियुग से रक्षा के लिए
श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी
बहुत मजबूत किल्ला है।''

यह जो समय चल रहा है, घोर कलियुग का चल रहा है। कलियुग के लक्षण बढ़ रहे हैं।

जैसे एक उदाहरण है, कोई राजा हो किसी देश का, उससे सभी डरते हैं, क्योंकि राजा जो चाहे कर सकता है, अपनी मर्जी से चाहे कोई भी कानून बना सकता है, जिसे चाहे फांसी लगवा सकता है। पूरी ताकत का मालिक होता है।

यह जो युग जा रहा है, इस पर कलियुग का राज है। पहले सतियुग, फिर त्रैता, फिर द्वापर और अब कलियुग का राज है। क्योंकि वह राजा है। पाँच इसके सेनापति हैं– काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। 'आलस्य, निद्रा, द्वेष, ईर्ष्या, चुगली, दारिद्रता, बुरा सोचना और भी बहुत इसके सैनिक हैं।

यदि सुखमनी साहिब की बाड़ लगी हो तो इसके समक्ष कलियुग, उसके सैनिकों, उसके सेनापतियों का भी कोई ज़ोर नहीं चलता।

कभी नोट करो कि कोई शुभ कर्म ऊपर आए, प्रभातकाल (अमृत वेला) बन जाता है, पर कुछ समय उपरांत ही कभी उठा जाएगा और कभी अवकाश हो जाएगा अथवा किसी स्वेच्छाचारी का संग घेर कर ले जाएगा। जब प्रभातकाल उठने का समय होगा, मन कहेगा सो जा। कहीं तो प्रभातकाल अमृत जैसा रस लेते होंगे

और कहीं कलियुग इतना भारी हो जाता है कि कहता है सो जा। कई बार हमारे साथ ऐसा बीतता है जब समय तो अमृत-पान का होता है, मगर निद्रा अपना जोर डाल देती है।

कोई गुरुमुख प्यारा दास को मिला और कहने लगा, बड़ी कोशिश करता हूँ, प्रभात काल (अमृत वेला) बन जाए, पर नहीं बनता। अलार्म भी लगाता हूँ, एक नहीं दो-दो, तीन-तीन घड़ियों पर भी अलार्म बजता है, पर नींद इतना जोर डालती है, वश नहीं चलता, अलार्म बंद करके सो जाता हूँ। अर्थात् कलियुग जोर डालता है, नहीं उठने देता।

एक बार कलियुग, गुरु नानक साहिब के समक्ष आकर खड़ा हो गया और कहने लगा, कि मुझसे हीरे, मोती, जवाहरात ले लो। यह प्रभातकाल गुरुबाणी न पढ़ो और न ही पढ़ाओ। पास भाई मरदाना भी खड़ा था, कलियुग से पूछने लगा, मुझे एक बात बता, यह तूने जो अपने ऊपर चादर ली है, वह तो सारी फटी हुई है, तेरे पास तो अपने ऊपर लेने के लिए कोई अच्छा वस्त्र भी नहीं और तू हमें हीरे-मोती देने की बातें करता है। कलियुग कहने लगा– यह भी तेरे नानक की समस्या है। भाई मरदाना कहता है कि मेरा गुरु नानक तो अमृत बांटता है, समस्या नहीं। कलियुग कहने लगा– जब सिक्ख प्रभात काल उठने लगते हैं, मैं उन पर यह अपनी आलस्य रूपी चादर डाल देता हूँ। जो कच्चे होते हैं, वह तो इस चादर की लपेट में निद्रामग्न रह जाते हैं और जो पक्के होते हैं, टांगें मार कर आलस्य की चादर को दूर फैंकते हैं और स्नान करके जुड़ जाते हैं। उन्होंने टांगें मार-मार कर मेरी चादर फाड़ दी है।

भाव कि रोकता है कलियुग।

गुरु नानक देव जी ने कलियुग के प्रति यह शब्द उच्चरित किया :–

रागु सिरीरागु महला पहिला १ घरु १॥

मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ॥

कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ॥ १॥
हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ॥
मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ॥ १॥ रहाउ॥
धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ॥
मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ॥ २॥
सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ॥
गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ॥ ३॥
सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ॥
हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ॥ ४॥ १॥ (अंग १४)

बाबा नंद सिंघ जी के इतिहास में से भी एक बड़ी अद्‌भुत साखी मिलती है। बाबा जी ने सवा बारह बजे उठना, जप-तप करना, आप भी जुड़ना और दुनिया को भी गुरु नानक से जोड़ना। कलियुग से बर्दाश्त न हुआ। बाबा जी एक बार नानकसर कलेरां में (जहाँ आजकल सरोवर है, उस समय जंगल भयानक था, बड़े बड़े वृक्ष, सुनसान क्षेत्र था। यह तो बाद में बाबा ईशर सिंघ जी ने जंगल को मंगलमय किया, सरोवर तैयार करवाया, सुन्दर स्थान बनवाए) वहाँ तप कर रहे थे और सेवक से सुखमनी साहिब के पाठ श्रवण कर रहे थे। (बाबा जी एक चौकड़ी पर पाँच पाठ रोज़ाना सुनते थे)।

क्या कौतुक हुआ। एक बड़ी भयानक शक्ल का जीव बाबा जी के समक्ष आ खड़ा हुआ। महापुरुषों ने नेत्र खोले और पूछा, भाई ! तू कौन हैं ? वह भयानक चेहरे का जीव कहने लगा, मैं कलियुग हूँ, जिसका सारी सृष्टि पर राज चलता है। बाबा जी कहते फिर

हम क्या करें, हमने तो तुझे नहीं बुलाया, यहाँ हमारे पास क्या लेने आया है ? कलियुग कहता है मैं आपसे बहुत दुखी हूँ। बाबा जी कहते हैं, हमने तुझे कौन-सा दुःख दिया है, हम तो यहाँ गुरु नानक को याद कर रहे हैं, भजन बंदगी कर रहे हैं। कलियुग कहता है, मैं उन सभी से ही दुखी हूँ। जो नाम जपते एवं जपवाते हैं। मेरा राज है और मेरे राज में तो कामवासना की लहरें चलनी चाहिएं, मांस, शराब के दौर चलने चाहिएं और आप नाम की आवाज़ दे रहे हो, यही मेरे लिए सबसे बड़ा दुःख है। बाबा जी ने पंक्ति पढ़ी–

''कबीर संतु न छाडै संतई
जउ कोटिक मिलहि असंत॥''

(अंग १३७३)

बाबा जी कहते हैं, तेरे जैसे हजारों कलियुग भी आ जाएं, हमने यह मार्ग नहीं छोड़ना। जब यह जवाब सुना तो कलियुग की आँखें लाल, क्रोध में आगबबूला, हाथ एवं मुट्ठियां दबाता हुआ कहने लगा– बिगाड़ तो मैं आपका बहुत कुछ सकता हूँ लेकिन यह जो यहाँ सुखमनी साहिब की बाणी चल रही है, इस पर मेरा कोई जोर नहीं चलता। बाबा जी मुस्करा दिए और कहने लगे, अपनी कमजोरी तूने स्वयं ही बता दी है। अपनी बीमारी का उपचार स्वयं ही बता दिया है। यदि तू सुखमनी साहिब से डरता है, हम पहले पाँच पाठ सुनते थे, आज से २४ घण्टे सुखमनी साहिब का पाठ चलेगा, कभी समाप्ति नहीं होगी। तब से लेकर अब तक नानकसर में सुखमनी साहिब के पाठ निरंतर चल रहे हैं।

अब स्वयं अनुमान लगा लो सुखमनी साहिब की शक्ति का। जिसका राज है, उसका भी इस महान बाणी के आगे वश नहीं चलता। पक्की बात है, यह जो घोर कलियुग का समय चल रहा है, इससे कब की दुनिया नाश हो गई हो, इस जलते संसार में यदि नाखुन जितनी मर्यादा कायम है, यह संसार यदि प्रलय से बचा है तो वह महापुरुषों की साधना एवं सुखमनी साहिब की बाणी के प्रवाह का कारण है।

दास ने अपने अनुभव से यह बात नोट की है, जरूरी नहीं ठीक ही हो, गलत भी हो सकती है। जब भी सुखमनी साहिब की बाणी को पढ़ो, नींद ज्यादा जोर डालती है। एक बार दास सोचने लगा कि शेष बाणी पढ़ते समय ऐसी कोई बात नहीं लेकिन सुखमनी साहिब का पाठ करते वक्त ही यह जोर ज्यादा पड़ता है।

दास ने जो महसूस किया कि कलियुग पर प्रतिबंध लगाने में गुरु साहिब ने इस बाणी में इतनी शक्ति भरी है कि कलियुग कहता है, कहीं यह किसी के हृदय में न बस जाए। सारी सेना भेज कर ज़ोर लगाता है। इस बाणी से कलियुग डरता है कि यदि यह सिक्ख के अन्तर्मन में बस गई तो मेरी जड़ें उखड़ जानी हैं। विशेषकर जब पंद्रहवीं, सोलहवीं अष्टपदी होती है, आदमी अपने घुटने पर घूंसे मारता है कि कब यह पाठ सम्पूर्ण होगा। यह कलियुग प्रतिबंध लगाता है, क्योंकि जोरदार औषधि है। उसे अपना डर पड़ जाता है कि यदि इसने पाठ सम्पूर्ण कर लिया तो इसके दिन-रात के २४००० श्वास सफल हो जाएंगे, मेरी तो जड़ उखड़ जाएगी।

६५ प्रतिशत झूठ का प्रसार है। जगत जल रहा है। टीवी का जोर, नींद का जोर, ईर्ष्या, चुगली, द्वेष सर्वत्र छाया हुआ है। एक कमरे में आग लगी हो और कोई कहे उस कमरे में से निकल कर दूसरे कमरे में जाना है और आँच भी न लगे, कितनी कठिन बात है। अर्थात् कोई कहे कि मेरी अन्तिम श्वासों तक गुरु के चरणों से निभ जाए, सारा जीवन गुरु के चरणों से जुड़े, नाम से जुड़े, गुरुसिक्खी से जुड़कर बीत जाए, यह है दूसरे कमरे में जाना।

गुरु अमरदास जी भी बाणी में लिखते हैं :–

"जगत जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि॥"

(अंग ८५३)

कबीर जी कहते हैं –

"कबीर जगु काजल की कोठरी अंध परे तिस माहि॥
हउ बलिहारी तिन कउ पैसि जु नीकसि जाहि॥

(अंग १३६५)

कभी नोट करो, घर में काजल (आँखों में डालने वाला सुरमा) पड़ा हो, कहीं बिखर जाए, आप कहो इसे इकट्ठा करना है और हाथ भी न लथपथ हो, मगर ऐसा नहीं हो सकता, हाथ जानबूझकर लथपथ हो जाता है, कहीं न कहीं कालिख लग ही जाती है। कबीर जी कहते हैं कि यह जग काजल की कोठरी है। जन्म से लेकर मृत्यु तक इसमें रहना काजल की कोठरी में रहना है, साथ ही कहते हैं, रोशनी भी नहीं, है भी अंधेरा, कहीं अंधेरे में सुरमा इकट्ठा करना हो तो कहे दाग न लगे, और भी मुश्किल बात है। रोशनी हो तो थोड़ा ध्यान भी रखा जा सकता है।

गुरु अर्जुन देव जी ने संसार को अंधकूप कहा है–

"अंध कूप महा भइआन नानक पारि उतार॥"

(अंग १२७३)

'अंध' का अर्थ है अन्धेरा, 'कूप' का अर्थ है कुआं। मार्ग में कुएं ही कुएं हों तो होगा अन्धेरा ही अन्धेरा, बच कर चलना बहुत मुश्किल है। संसार ऐसा है, कहीं टीवी नहीं छोड़ता, कहीं विकार नहीं छोड़ते। कभी ऐसी आंधियां भीतर चलने लग जाती हैं, ऐसे ख्याल मन में प्रगट हो जाते हैं जो गुरु को अच्छे नहीं लगते। कभी कोई लहर मस्तिष्क पर ऐसा दबाव डाल देती है कि जुड़ा हुआ मन भी टूट जाता है।

नामदेव कितने बड़े भक्त, ७२ बार दर्शन हुए भगवान के, कितनी बड़ी भक्ति! फिर भी क्या कहते–

तारि लै बाप बीठुला॥

(अंग ११९६)

भक्त नामदेव कहते हैं, हे भगवान्! मैं तेरा नाम तो जपता हूँ, परन्तु कई लहरें आती हैं– कभी लोभ की लहर, कभी मैं की लहर, अहंत्व की लहर, कभी कोई और कभी कोई। कलियुग का समय है, लहरें बहुत मज़बूत हैं, पता नहीं, किस समय, कौन-सी लहर डुबो दे।

अर्थात् बहुत मुश्किल है कलियुग के भयानक समय में अन्तिम

श्वासों तक इन चीजों से बचकर गुरु चरणों से निभाना। जैसे एक गाथा भी है– एक वेश्या किसी महापुरुष को प्रतिदिन व्यंग्य करती थी कि 'बाबा तेरी दाढ़ी सफेद कि मेरे कुत्ते की पूंछ।' जब महापुरुष ने गुजरना, उसने यही प्रश्न करना, पर महापुरुष ने कोई उत्तर न देना, चुपचाप गुजर जाना। जिस दिन महापुरुष का शरीर त्यागने का समय आया, अपने शिष्य को कहते, जाकर उस वेश्या को बुलाकर लाओ। शिष्य बड़े चकित कि अन्तिम समय पर वेश्या को क्यों बुला रहे हैं। महापुरुष कहने लगे, वचन का पालन करो, बुलाकर लाओ। शिष्य वचन का पालन करके वेश्या को लेने गए। जब वेश्या आई तो महापुरुष कहने लगे, स्त्री तू रोज हमें एक प्रश्न करती थी कि, 'बाबा मेरे कुत्ते की पूंछ सफेद कि तेरी दाढ़ी सफेद', आज तुझे तेरे प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं कि मेरी दाढ़ी सफेद है। वह वेश्या कहने लगी कि आज विशेषकर बुला कर मुझे जो उत्तर दिया है, यही उत्तर तब दे देते, जब मैं पूछती थी।

प्यारो, बात की सूक्ष्मता पकड़ना। महापुरुष कहते हैं स्त्री, तब मैं यह बात नहीं कह सकता था कि मेरी दाढ़ी सफेद है, क्योंकि अभी मेरे श्वास शेष थे और शेष श्वासों में पता नहीं यह पापी मन किस समय कौन-सी भूल कर बैठता, पाप कर्म कर बैठता, मुझसे कोई कुकर्म हो जाता, फिर मेरी दाढ़ी सफेद नहीं रहनी थी, दाग लग जाना था, मेरी दाढ़ी से तेरे कुत्ते की पूंछ सफेद होनी थी। अब मैं जा रहा हूँ, मेरे श्वास समाप्त हो गए हैं, इसलिए यह कह रहा हूँ कि मेरी दाढ़ी तेरे कुत्ते की पूंछ से सफेद है।

सोचा करो गहराई में जाकर, जब गहराई में जाओगे तो कहोगे सचमुच पता नहीं इस कलियुग के राज में किस समय कोई लहर हमारा ही दिमाग खराब कर दे, किसी स्वेच्छाचारी का साथ हमें घेर कर ले जाए, दुनिया के झूठे पर मनमोहक रंग हमें अपनी तरफ खींच कर ले जाए, क्योंकि झूठ का प्रसार अत्यधिक है। सत्यवादी का चलना बहुत मुश्किल है।

इस कलियुग के घोर समय में गर्म आँधियां व बहती लहरों से यह सुखमनी साहिब की बाणी हमारी रक्षा करती है। कितनी

ताकत भरी सतिगुरु ने इस पावन बाणी में। यदि आपके पास सुखमनी साहिब का धन है, फिर कलियुग आप पर भारी नहीं हो सकेगा, यह दुनिया के रंग आपको अपनी तरफ आकर्षित नहीं कर सकेंगे।

असली मर्द तो वही है जिसकी अन्तिम श्वासों तक गुरु के चरणों से निभ जाए। जीना तो उसका है। बड़ों को देखते हैं, कई बार बहुत चाव होता है प्रभातकाल जागने का, बाणी पढ़ने का, गुरुद्वारे जाने का, अमृतपान करके गुरु के सिक्ख बनने का, परन्तु सामान्य देखने में आता है कि कईयों का ६ महीने, साल उपरांत अथवा दो साल पश्चात सारा चाव ठण्डा हो जाता है, फिर जिन्दगी कहाँ की कहाँ नरक में तबाह हो जाती है। कलियुग ऐसा प्रभाव डालता है, प्रभातकाल (अमृत वेला) भी टूट जाता है, गुरसिक्खी जीवन भी नहीं रहता, दूसरी बहुगिनती घेर कर ले जाती है। यदि सुखमनी साहिब का दामन पकड़ोगे फिर उन्नति करते जाओगे। अपने घरों में अधिक से अधिक सुखमनी साहिब का पहरा रखा करो।

२. यह दूसरी विशेषता पढ़ने के पश्चात् यदि एक सज्जन भी इस मजबूत किल्ले श्री सुखमनी साहिब का नेमी बन जाए तो हम यह प्रयास गुरु की कृपा से सफल समझेंगे।

—द्वारा : दास लेखक

तीसरी विशेषता

"श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी तन के भी रोग ठीक करती है।"

पाठक जनो ! आप जी ने कृपा के भण्डार से भरी बाणी श्री सुखमनी साहिब जी की दो विशेषताएँ पढ़ी हैं। पहली कि सुखमनी साहिब जी का एक पाठ नियम से प्रतिदिन करने से २४००० श्वास सफल हो जाते हैं। यह पंचम पातशाह जी की दया है कि जिज्ञासु कामकाज कारोबार, गृहस्थ जीवन में विचरण करते हुए भी कुछ समय सुखमनी साहिब की बाणी पढ़कर आठों प्रहर के श्वासों को सफल कर लें। दूसरा सुखमनी साहिब जी की बाणी कलियुग से हमारी रक्षा करती है। विवरण सहित आप जी पढ़ आए हो।

तीसरी विशेषता यह बाणी हमारे तन के रोग भी ठीक करती है। जिन्दगी में विचरण करते हुए शरीर को किसी दुख अथवा रोग ने आकर घेरा यह सामान्य बात है। तीसरी विशेषता बारे कुछ लिखने की महाराज सेवा लें, दास एक नुक्ता व्यक्त करना चाहेगा। हमारा जीवन हमारे कर्मों पर निर्भर है। सकुशल चलते-चलते यदि कोई दुख आ गया तो सोचो क्यों आया। उत्तर है बोया था। किए कर्मों ने बोया था, आज काटना पड़ रहा है।

ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करंमा आपणिआ॥
जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना॥

(अंग ४३३)

यह अन्तर है कि बीज बोने और फल काटने में अंतराल है समय लगता है। सरल-सी बात है आज गेहूँ बोओ तैयार होने में समय लगता है। आप कहो मैंने आज आम का पौधा लगाया और माह उपरांत फल खा लूँ, नहीं फल तो दस वर्ष पश्चात आम ने देना है। इसी तरह यदि कोई रोग अथवा दुख आया कभी बोया था तो आया है। यह नहीं मालूम कि कब बोया था। कब ऐसा दुष्कर्म कर बैठे हैं जिसे भोगने हेतु समयानुसार वह रोग बनकर सम्मुख आ खड़ा हुआ। तन रोगी हो गया। यह तीसरी विशेषता है कि सुखमनी साहिब जी की बाणी तन के रोग भी ठीक करती है।

सुखमनी साहिब जी की बाणी की तीसरी महानता यह है कि यह तन के रोगों से भी छुटकारा दिलवाती है। हाँ एक होते हैं तन के रोग, एक होते हैं मन के रोग। दोनों में अन्तर है। आपके घर में किसी सदस्य से विचार न मिलने पर मनमुटाव हुआ हो, आप यह नहीं कहते मेरी बांह दर्द होती है, मेरी टांग दर्द होती है, तब आप कहते हो मेरा मन दुखी है। एक समय का भोजन हो, दूसरे समय का न हो, लोगों का कर्ज देना हो, आप कहते हो मेरे मन को चिंता लगी है कि इसके पैसे कैसे देंगे। अर्थात् चिंता, खीझना, परेशानियां, हर समय सोचों में पड़े रहना यह मन के रोग हैं। शरीर का कोई अंग पीड़ित हो, हाथ दर्द करता है, कान दर्द करते हैं, कंधा दर्द करता है, पैर दुखता है, सिर दर्द करता है, पेट में कोई तकलीफ है, अर्थात् शरीर के अंगों को यदि कोई तकलीफ है, यह तन के रोग हैं।

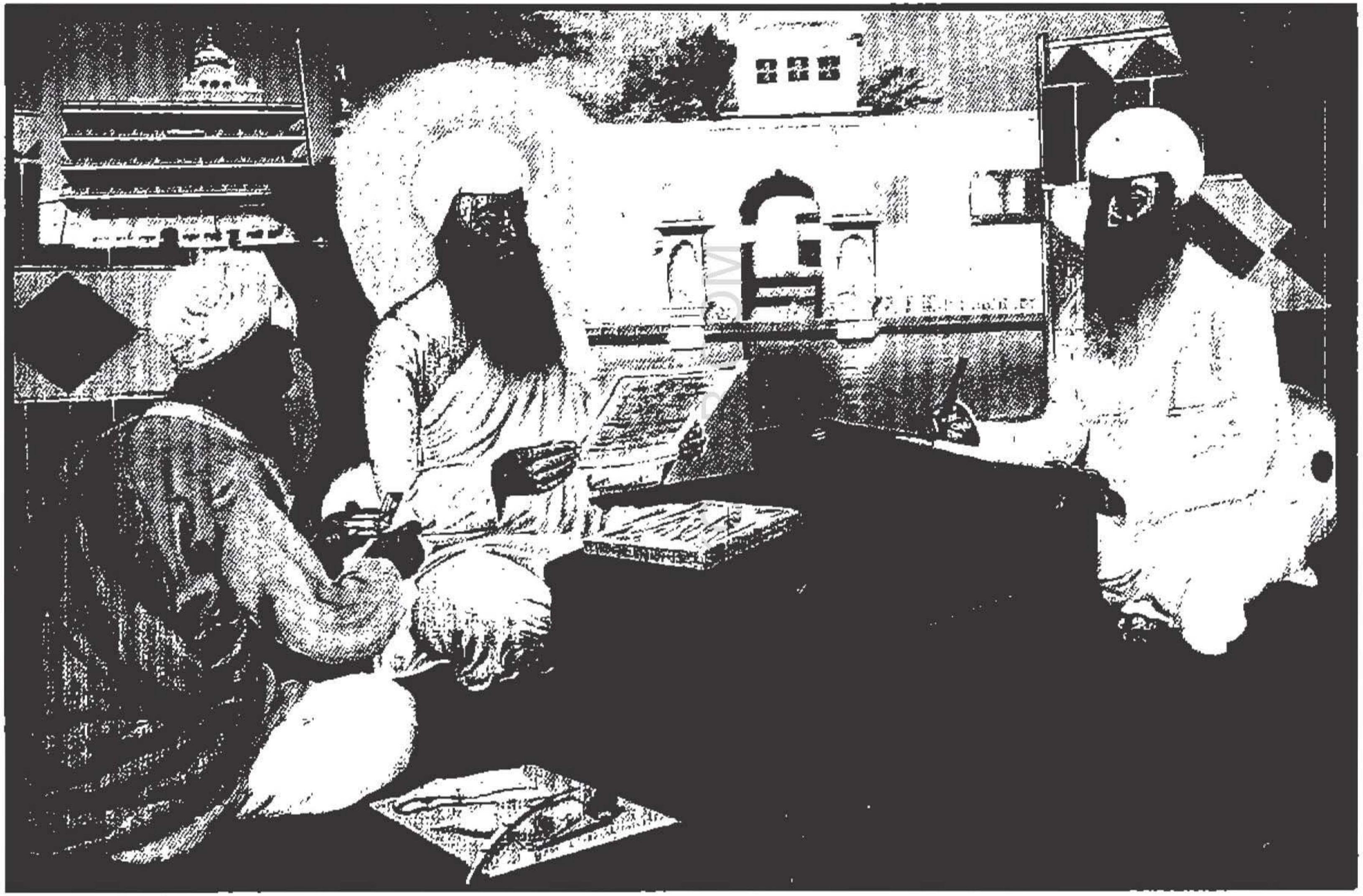
भाई वीर सिंघ जी को एक बार किसी ज्ञानी ने प्रश्न कर दिया कि सुखमनी साहिब जी की बाणी से मन के रोग ठीक होते हैं, लेकिन यह बाणी तन के रोग कैसे दूर करेगी ? भाई साहिब जी ज्ञानी जी की यह बात सुनकर कहने लगे, क्या आपके भीतर इस पवित्र दरगाही बख्शिश से भरी हुई बाणी के बारे में शंका है ? भाई साहिब कहते हैं, ज्ञानी जी, क्या आप सुखमनी साहिब जी का पाठ करते हो ? ज्ञानी जी कहते हैं, जी हाँ, नित्य करता हूँ। भाई साहिब कहते हैं, क्या आपको मालूम है इस बाणी की पहली अष्टपदी कहाँ



माता कौलां जी श्री सुखमनी साहिब का पाठ करते हुए

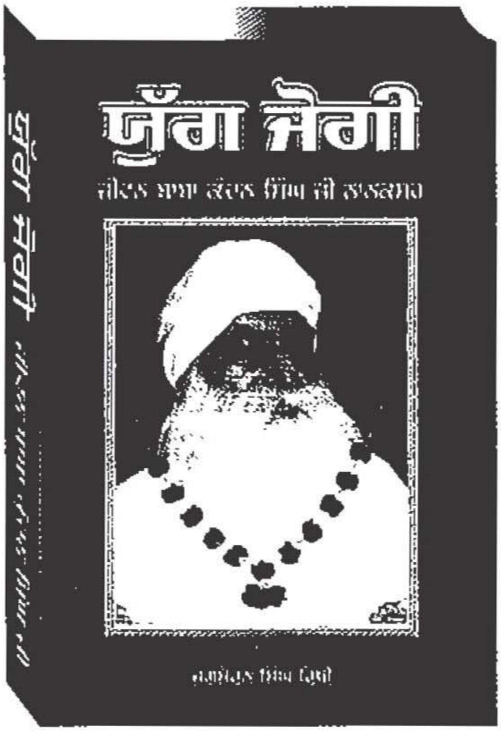


भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंघ जी की निष्काम रूप में धार्मिक एवं सामाजिक सेवाओं को मद्देनज़र रखते हुए सिंघ साहिब ज्ञानी जोगिन्द्र सिंघ जी वेदांती (जत्थेदार श्री अकाल तख्त साहिब) और श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी त्रिलोचन सिंघ जी द्वारा भाई साहिब जी को "संत सुजान सिंघ जी अवार्ड" से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संत सुजान सिंघ जी के पौत्रे संत प्रकाश सिंघ जी, भाई चमनजीत सिंघ जी दिल्ली वाले, भाई दविन्द्र सिंघ जी सोढी एवं अन्य प्रमुख हस्तियां भी शामिल थीं।

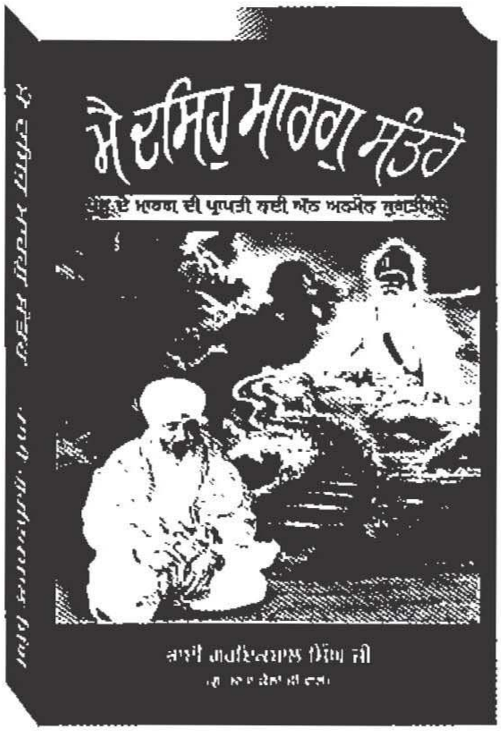


पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी, भाई गुरदास जी से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी लिखवा रहे हैं।

गुरमति सत्संग सभा धन्य धन्य माता कौलां जी (रजि.) द्वारा छप चुकी पुस्तकें



बाबा कुन्दन सिंघ जी नानकसर, कलेरां वाले महापुरुषों की जीवनी इस पुस्तक में पढ़ो



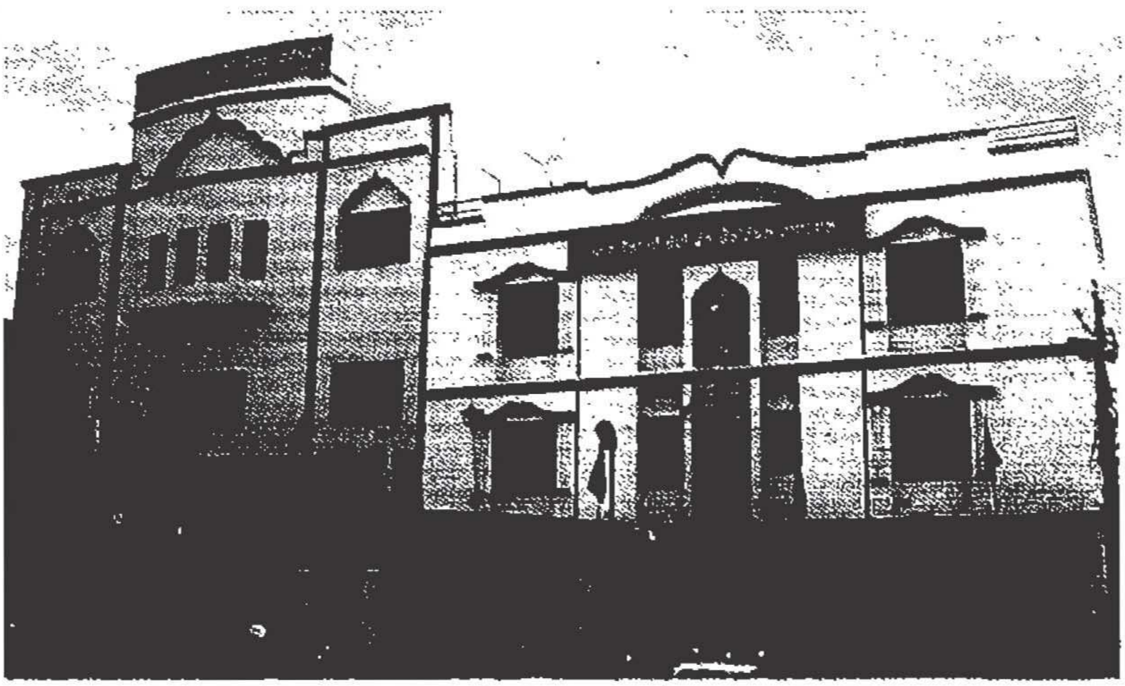
भाई साहिब द्वारा लिखी गई प्रथम पुस्तक





घर बैठे कीर्तन सीखने के लिए अमूल्य पुस्तक





१. गुरु साहिब जी की अपार कृपा से तरनतारन रोड, श्री अमृतसर में चल रहा माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट (विधवा औरतें) यहां हर महीने गुरु साहिब जी की कृपा से लगभग १२०० विधवा औरतें निःशुल्क राशन प्राप्त कर रही हैं।

२. सतिगुरु जी की कृपा से गुरमति सत्संग सभा द्वारा सेवा के क्षेत्र में एक अन्य मील पत्थर माता कौलां जी बंदी छोड़ चैरिटेबल अस्पताल के रूप में एक अन्य नवीन प्रयास जिसका शुभारम्भ २८ फरवरी, २००५ को हुआ। जिसमें रोजाना ८५० रोगी लाभ हासिल कर रहे हैं।

गुरमति सत्संग सभा धन्य धन्य माता कौलां जी (रजि.)

समूह सभा के प्रेमी व समूह देश–विदेश की संगतों को हाथ जोड़कर विनती की जाती है कि इस समय निम्नलिखित जत्थे गुरमति सत्संग सीभा धन्य–धन्य माता कौलां जी (रजि.) व माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट के प्रेममयी नेतृत्व में निष्काम सेवा देश तथा विदेश में निभा रहे हैं।

1. कूकर गुरु दरबार भाई गुरइकबाल सिंघ जी
2. भाई अमनदीप सिंघ जी
3. भाई हरविन्द्र पाल सिंघ जी (लिटल मास्टर)
4. भाई हरदेव सिंघ जी दीवाना
5. भाई जसविन्द्र सिंघ जी
6. भाई गुरदीप सिंघ जी
7. भाई तेजपाल सिंघ जी
8. भाई जतिन्द्र सिंघ जी (बिटू वीर जी)
9. भाई अरविन्द्र सिंघ जी लौंग मास्टर
10. भाई मनजीत सिंघ जी मजीठा रोड वाले
11. भाई हरमिन्द्र सिंघ जी बाबा जी कथावाचक
12. भाई अंतरप्रीत सिंघ जी
13. भाई कंवलजीत सिंघ जी दिल्ली वाले
14. भाई हरभजन सिंघ जी लुधियाना वाले
15. भाई बलविन्द्र सिंघ जी कथावाचक, देहरादून वाले
16. भाई गगनजोत सिंघ जी जालन्धर वाले
17. धन्य धन्य माता कौलां जी महिलाओं के सिविल लाईन व शहर के सारे जत्थे

से आरम्भ होती है ? वह कहने लगा, जी हाँ, मालूम है। भाई साहिब कहने लगे हमें बोल कर बताओ। ज्ञानी जी पढ़ने लगे –

''सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ॥
कलि कलेस तनि माहि मिटावउ॥'' (अंग २६२)

भाई साहिब ने यहाँ ही रोक दिया और कहने लगे, ज्ञानी जी क्या पढ़ा है, 'कलि कलेस' -- ज्ञानी जी ने आगे पंक्ति पूरी की 'तनि माहि मिटावउ'। भाई साहिब कहते हैं, ज्ञानी जी, यह तो नहीं लिखा कि *'मन माहि मिटावउ' 'तनि माहि मिटावउ'* लिखा है अर्थात् शरीर पर भी यदि कोई कलह-क्लेश हो अर्थात् तकलीफ हो, यह बाणी उसका भी नाश करती है। यह बाणी शारीरिक रोगों से भी बचाती है।

आप कभी नोट करो, शिक्षित व्यक्ति का विश्वास बनाना सबसे कठिन होता है, क्योंकि शिक्षित विद्वान हर समय दिमाग को, बुद्धि को आगे रखता है। आप भी जरा डालो अपने मन पर ध्यान, जीवन के हर मोड़ पर अपनी बुद्धि आगे रखते हो अथवा परमेश्वर पर भरोसा आगे रखते हो ? बहुत ज्यादा बातों का ज्ञानी, बातों का विद्वान बुद्धि को आगे रखेगा, अपनी बुद्धिमत्ता को आगे रखेगा। नाम जपने वाले, परमेश्वर के रंग में रंगे हुए के भीतर भरोसा होता है।

महापुरुष विराजमान थे। किसी ने कहा, महापुरुषो ! शब्द का जाप दीजिए। उन्होंने जब शब्द का ज़ाप दिया तो वह शरीर कहने लगा कि प्राप्ति कितनी देर में होगी ? महापुरुष कहने लगे, छः माह में। साथ ही कोई अन्य शरीर खड़ा था, वह भी कहने लगा, मुझे भी शब्द का जाप दीजिए। जब उसे जाप दिया तो उसने भी पूछ लिया, कितने समय में प्राप्ति होगी ? महापुरुष कहते हैं, तीन वर्ष लगेंगे। वह शरीर बड़ा हैरान ! कहने लगा, वह बिल्कुल अनपढ़ है, उसे आप ने कहा ६ माह लगेंगे, जबकि मैं शिक्षित हूँ, मुझे आपने कह दिया है तीन वर्ष लगेंगे प्राप्ति को। यह क्यों ? महापुरुष कहने लगे, उसके भीतर अहंकार नहीं है। निरक्षर होने के कारण जमीन

समतल हुई पड़ी है, कोई कमरा बना ही नहीं। जबकि तेरे भीतर इतने बुद्धिमत्ता के कमरे बने हैं, तीन वर्ष तो उन्हें ध्वस्त करते ही लग जाएंगे। अर्थात् शिक्षित व्यक्ति का ऐतबार बनाना बड़ा मुश्किल होता है।

यह कितनी बड़ी प्रसन्नता वाली बात है कि गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के शिक्षित डॉक्टरों की टीमों ने शिविर लगाकर, निष्कर्ष निकालकर अपनी पुस्तकों में फैसले दिए हैं कि सुखमनी साहिब जी की बाणी तन के रोगं भी ठीक करती है। सुखमनी साहिब सेवा सोसाइटी, गुरुद्वारा माता कौलां ज़ी, अमृतसर द्वारा, प्रत्येक रविवार संगतों में से किसी के घर में सुखमनी साहिब का पाठ होता है। सारी संगत सुखमनी साहिब का पाठ करती है और फिर एक घण्टा कीर्त्तन होता है।

कुछ वर्ष पूर्व की बात है, जिस घर में पाठ होता था, वहाँ गुरु नानक देव विश्वविद्यालय से डॉक्टरों की टीम आती थी और उस घर के बाहर मेज़ लगा लेती थी। जिसने भी अंदर जाना उसका रक्तचाप उन डॉक्टरों ने चैक करके भेजना। जिनका भी रक्तचाप कम अथवा अधिक होता, उसका नाम, आयु नोट करना। समाप्ति के पश्चात् उनके पुनः रक्तचाप चैक करते तो ठीक होते। उन्होंने शिविर लगाकर विवरण सहित निष्कर्ष दिया है कि जो सुखमनी साहिब जी की बाणी पढ़े अथवा सुने वह रक्तचाप, चिंता इत्यादि के रोगों से बचा रहता है।

अमृतसर का एक अस्पताल है। अस्पताल के निष्कर्ष में से उस अस्पताल में से रोगी सबसे अधिक स्वस्थ होकर जाते हैं। खोज करने पर पता चला कि अस्पताल में सभी रोगियों के कमरों में स्पीकर लगा है। सुबह भी और शाम को भी रोगियों को सुखमनी साहिब का पाठ श्रवण क़रवाया जाता है। गुरुबाणी की कृपा होती है। जहाँ डाक्टरी दवाई चलती है, वहाँ साथ-साथ गुरुबाणी की बख्शिश भी होती है।

आप भी कभी आजमा लो, चाहे आपके भी घर में कोई शरीर बीमार हो अथवा आपका बच्चा बीमार हो, दवाई लाओ, दवाई दो,

लेकिन साथ ही उसके पास बैठ कर एक पाठ सुखमनी साहिब का करो, देखो दवाई कैसे असर करती है। दवाई में साथ गुरुबाणी की ताकत, गुरुबाणी की बख्शिश भी शामिल हो जाएगी।

हमारे अमृतसर दास की कीर्त्तन की हाजिरी एक फैक्टरी में थी। वेरका बाईपास पर अविचल टैक्सटाईल नामक फैक्टरी जहाँ कीर्त्तन था। महाबली योद्धा बाबा दीप सिंघ जी की स्तुति में गुरुबाणी का प्रकरण लगा। कीर्त्तन के पश्चात एक सज्जन ने दास से आग्रह किया, मुझे पाँच मिनट का समय दीजिए। दास ने कहा, बताईए। वह सज्जन कहने लगे, मेरा नाम डा. परमजीत सिंघ 'राणा' है। दास ने कहा, बड़ी खुशी हुई मिलकर, सेवा बताओ। वह कहने लगे, मैं एक डाक्टर हूँ, गुरुबाणी की बख्शिश कई बार मेरे साथ भी बीती है। एक घटना सुनाना चाहता हूँ।

मेरे क्लीनिक पर एक महिला जिसे छाती के पास रसौली थी। ऐक्स-रे के पश्चात मैंने कहा, आपका आप्रेशन करना पड़ेगा। १० दिन का समय दिया। १० दिन पश्चात जब वह (महिला) आप्रेशन के लिए आई। मैंने दोबारा ऐक्सरे लिया। वह कहने लगे, मेरी आश्चर्य की सीमा न रही कि रसौली नाम की शरीर में कोई वस्तु ही नहीं। मैंने पहले ऐक्सरा देखा उसमें रसौली है, नए ऐक्सरे में रसौली है ही नहीं। डाक्टर राणा कहने लगे, यह कैसे हो सकता है। पहले ऐक्सरे में रसौली है, आज वाले में है ही नहीं।

वह कहते महिला ने बताया कि मैं जब १० दिन पूर्व आप जी से तिथि लेकर गई थी तो मार्ग में किसी गुरुमुख से सारी बात खुलकर हुई। उसने कहा, बाबा दीप सिंघ जी कलगीधर के प्यारे हैं। बाणी पढ़ने वाले पर बहुत दयालु होते हैं। उन्होंने मार्ग बताया कि बाबा जी के स्थान पर जाकर सुखमनी साहिब जी का पाठ रोज करो व ज्योत का घी रसौली वाली जगह पर लगाओ। प्रार्थना करो सतिगुरु कृपा करेंगे।

डाक्टर साहिब कहते उस महिला ने बताया कि वह 'गुरुमुख' के निर्देशानुसार मैं रोज श्री सुखमनी साहिब जी का पाठ करती रही और ज्योत का घी लगाती रही। मैंने सबकुछ इसलिए किया

है कि आप्रेशन ठीक हो जाए लेकिन डाक्टर साहिब कहने लगे, मैंने उससे कहा— सुखमनी साहिब व बाबा दीप सिंघ जी के स्थान की ज्योत के घी कारण आपकी रसौली जल गई है। दास के पास उस ड़ाक्टर का पता है। किसी को शंका हो वह उन से मिलकर शंका दूर कर सकता है। एक पढ़े लिखे डाक्टर इस बात पर सहमत हो गए हैं कि सुखमनी साहिब जी की बाणी शरीर के रोगों को भी ठीक करती है।

अमेरिका की नासा यूनिवर्सिटी में नौकरी करने वाला एक चोटी का ६४ वर्षीय वैज्ञानिक, श्री वासु भारद्वाज, जिसने चन्द्र ग्रह व मंगल ग्रह के बारे में दो किताबें भी लिखी हैं, उन्होंने मौखिक बताया है, "मैं पक्का नास्तिक था, मेरी पत्नी सिंधी परिवार में से थी और उसकी गुरुबाणी पर बड़ी श्रद्धा थी। उन्होंने बताया कि उनके सिर पर टयूमर हो गया, जिससे कैंसर का भयानक रोग हो गया। यह टयूमर दाएं कान के ऊपर होने के कारण, दाएं कान से सुनाई देना बिल्कुल बंद हो गया। बड़े-बड़े डाक्टरों ने जवाब दे दिया कि इसका कोई उपचार नहीं, आप इस कान से कभी भी सुन नहीं सकोगे। जब डॉक्टरों ने सिर के टयूमर के नमूने लिए और रिर्पोटों द्वारा बताया था कि आप केवल १५-२० दिन के ही अतिथि हो।

उन्होंने बताया कि मेरी साली का विवाह एक सिक्ख घर में हुआ था और उसका गुरुबाणी पर बहुत विश्वास था। उसने रोज़ अस्पताल में मुझे सुखमनी साहिब का पाठ सुनाना शुरू कर दिया और हरिमन्दिर साहिब अखण्ड पाठ नियत करवा दिया। उस परमात्मा की कृपा, मेरी हालत के बारे जान कर उन्होंने शीघ्र ही बारी दे दी। किसी तरीके स्ट्रैचर पर डालकर मुझे अखण्ड पाठ वाले कमरे में पहुँचाया गया। उन्होंने बताया कि डॉक्टरों द्वारा मुझे चौकड़ी मार कर बैठना वर्जित था क्योंकि कमजोरी के कारण हड्डियाँ बहुत ज्यादा कमजोर हो गई थीं लेकिन अखण्ड पाठ चलते-चलते जब श्री सुखमनी साहिब के पाठ पर आया तो मैं चौकड़ी मार कर बैठ गया और बड़े प्रेम व भावना से पाठ सुनने लग पड़ा। कहते

हैं श्री सुखमनी साहिब का पाठ सुनते-सुनते मेरे भीतर कुछ अजीब तरह की वाइब्रेशन होने लग पड़ी। इस वाइब्रेशन से इस समय के दौरान एक अजीब बख्शिश हुई कि मेरा दायां कान जो बिल्कुल बंद हो चुका था, एकदम खुल गया।

अखण्ड पाठ की समाप्ति के पश्चात मैं अपने पैरों पर खड़ा हो गया और पैदल चलकर अपने कमरे तक गया। अखण्ड पाठ रखते समय मैं आया स्ट्रैचर पर था, परन्तु वापिसी के समय पैदल चलकर कमरे तक गया। मेरे परिवार वाले और मैं सब हैरान थे। अपने शहर सूरत में जाकर जब अपने टैस्ट डॉक्टरों से दोबारा करवाए तो पता चला कि शरीर में से कैंसर खत्म हो चुका था। कैंसर के प्रसिद्ध डॉक्टर भी सुखमनी साहिब की बाणी की ताकत को मान गए। हो सकता है कि कोई इस बात को न माने, परन्तु डा. वासु भारद्वाज जी ने कैंसर ठीक होने की रिपोर्टें २०० दीवानों में संगतों को भी दिखाई थीं।

कई बार परमात्मा द्वारा मिले हुए सुखों में आदमी इतना लीन हो जाता है कि सुखों का दाता परमात्मा उसे विस्मृत हो जाता है और सुख देने वाले परमात्मा को भूल जाने के कारण जीव शारीरिक, मानसिक, आत्मिक तौर पर रोगी हो जाता है। दुख के समय परमात्मा याद आने के कारण जीव प्रभु के निकट हो जाता है और यह दुख ही उसके लिए दारू (दवाई) बन जाता है। बाणी में भी लिखा है :–

"दुखु दारू सुखु रोगु भइआ"

(अंग ४६६)

दास दावे से, गुरु के भरोसे से, बाणी की ताकत के भरोसे से लिख रहा है कि यदि आप पर कोई विपदा बन जाए, मुश्किल बन जाए तो घर में ही सुखमनी साहिब, गुटके से ही शुरू कर दिया करो। एक के बाद दूसरा शरीर उस समय अगली पंक्ति पर उंगली रखकर शुरू कर दे। इस तरह दुख का समय कम होना शुरू हो जाता है।

थोड़े दिनों की बात है कि संगत में से किसी प्रेमी का रात साढ़े नौ बजे फोन आया कि हमारा ३ महीने का बच्चा इतना बीमार हो गया है कि उसने सिर फैंक दिया है। छुट्टी का दिन होने के कारण कोई डॉक्टर भी नहीं मिल रहा। दास ने फोन पर ही गुरु साहिब की कृपा से कहा, घर में सुखमनी साहिब का पाठ शुरू कर दो। एक शरीर थक जाए तो गुटका साहिब पर ही उंगली से पंक्ति बताकर दूसरे शरीर को बैठा देना। सुखमनी साहिब की बाणी की बख्शिश के कारण कोई घण्टे पश्चात ही उसका दोबारा फोन आया। कहने लगा, शाम के छः बजे के चक्कर काट रहे थे, अपना फेमिली डॉक्टर नहीं मिल रहा था। जब घर सुखमनी साहिब का पाठ शुरू किया तो थोड़ी देर पश्चात् ही फेमिली डॉक्टर मिल गया। जो उसने टीका लगाया वह भी असर कर गया है। डॉक्टर ने कहा है कि अब खतरे वाली कोई बात नहीं, जो बच्चे ने सिर फैंक दिया था, वह भी ठीक हो गया है। देखो ! सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ी सब विधि बन गई, अपना फेमिली डॉक्टर भी मिल गया, दवाई भी सही असर कर गई।

पक्की बात है, कभी आजमा लेना, किसी को कोई तन का रोग हो, अपने नित्यनियम के अलावा सुखमनी साहिब जी की बाणी का पाठ शुरू कर दो, गुरु साहिब की कृपा से लिख रहा हूँ, तेज बारिश की तरह कृपा बरसती है।

एक अन्य घटना दास व्यक्त करना चाहता है। कोई भी उदाहरण इस कारण दी जाती है क्योंकि अन्यथा आप कहोगे यूं बातें ही हैं, ऐसे कभी रोगी भी ठीक होते हैं। घटित हुई उदाहरणों को पढ़कर बात हृदय को छू जाती है, भरोसा बन जाता है।

महिन्द्र सिंघ नामक एक व्यक्ति (दिल्ली) पता नहीं कौन-सा कर्म आगे आ गया, छाती में टीबी हो गई। डॉक्टरों ने चैक करने पर बताया कि तीसरी स्टेज की टीबी है। आप जी सभी पढ़े-लिखे समझदार हो, जानते ही हो कि पहली, दूसरी स्टेज की टीबी दवाईओं से पकड़ में आ सकती है, परन्तु तीसरी स्टेज की बीमारी बहुत खतरनाक होती है। डॉक्टरों ने दवाइयाँ तो दे दीं, पर साथ

ही कहा कि पता नहीं ठीक हो कि न, साथ ही यह हिदायत भी दी कि कहीं आना-जाना हो या कोई काम करना हो, मुँह पर कपड़ा बाँध कर रखना है, अन्यथा तेरी हवा के साथ किसी अन्य को भी यह रोग हो जाने का डर है।

यह महिन्द्र सिंघ, बाबा ईशर सिंघ जी राड़ा साहिब वालों का संगी था। जब इसने अपना दुख उन्हें बताया तो वह कहने लगे–इतना उदास क्यों हो गया है, दिल मत छोड़। एक पाठ सुखमनी साहिब का सुबह, एक पाठ सुखमनी साहिब का सायंकाल को बंगला साहिब (दिल्ली) गुरुद्वारे बैठकर करना है। जहाँ संगतें चरण धोती हैं, वहाँ सेवा कर, जूतों की सेवा कर, झाड़ू की सेवा कर, साथ कुछ अन्य प्रतिबन्ध लगाए कि किसी के घर मत जाना, वहाँ गुरुद्वारे ही केवल एक प्रशादा आधार के लिए खाना है।

(यहाँ दास एक बात स्पष्ट कर दे कि सद्पुरुष अपने-अपने ढंग अनुसार दवाई देते हैं, युक्ति देते हैं) १३ दिन इस तरह महापुरुषों की बताई युक्ति अनुसार उसने सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ी। जब चौदहवें दिन दोबारा डॉक्टरों के पास जाकर चैक करवाया गया, दोबारा ऐक्सरा करवा कर देखा गया तो डॉक्टर देखकर चकित हो गए। उस नए ऐक्सरे में छाती पर एक भी दाग टी.बी. का नहीं आया।

यहाँ दास एक विनती कर दे कि दवाई नहीं छोड़नी। कई शरीर कह देते हैं कि सुखमनी साहिब का सहारा लेना है फिर दवाई की क्या आवश्यकता है ? किसी शरीर को रोग है, दवाई भी खानी है, पर सहारा दवाई का नहीं, बाणी का देखना है, क्योंकि यदि दवाई नहीं खाओगे फिर सांसारिक मर्यादा गलत हो जाएगी। हमारा भरोसा यहाँ यह कायम हो कि दवाई असर तो ही करेगी यदि सुखमनी साहिब की बाणी की ताकत भी इसमें शामिल होगी, अन्यथा आप कई बार नोट कर लो वही दवाई किसी शरीर पर अपना असर करती है, वह ठीक हो जाता है, पर किसी को उसी दवाई से कोई फर्क ही नहीं पड़ता।

बात तो विश्वास की है। अमृतसर का कोई गुरुमुख प्यारा,

जिसके पुत्र के सिर पर फोड़े हो गए। डॉक्टर के पास गए तो डॉक्टर कहने लगा, इसका सिर सारा गला पड़ा है। इसके पहले केश कटवा कर आओ, मैं इस तरह उपचार नहीं कर सकता। (देखो आजकल कई शौक से केश पड़े कटवाते हैं, पर धन्य हैं गुरुमुख प्यारे जिन पर मजबूरी भी बन जाए तो भी बचाते हैं केशों को) वह गुरुमुख प्यारा कहने लगा, ''हम सिक्ख हैं, केश नहीं कटवा सकते, आप इस तरह ही दवाई लगा दो, गुरु साहिब स्वयं ही कृपा करेंगे।'' लेकिन वह डॉक्टर न माना।

वह गुरुमुख प्यारा अपने पुत्र की उँगली पकड़ कर उसे हरिमन्दिर साहिब, दुखभंजनी बेरी के स्थान पर ले गया। आप जानते ही हो कि सिर गला हो तो पानी डालने से घाव और खराब होने का डर होता है। उस गुरुमुख प्यारे की श्रद्धा, भरोसा, विश्वास, उसने केशों सहित अपने पुत्र को दुखभंजनी बेरी के सरोवर में स्नान करवा दिया और वहाँ ही दीवार से लगकर श्री सुखमनी साहिब का पाठ किया, भीतर जाकर देग करवाई और प्रार्थना की कि सतिगुरु कृपा करो।

नित्य ही उन्होंने इस तरह करना, अपने पुत्र को दुखभंजनी बेरी के स्थान पर सरोवर में केशों सहित स्नान करवाना, सुखमनी साहिब का खड़े होकर पाठ करना और देग करवा कर प्रार्थना करनी। सातवें दिन ही कृपा हो गई। सिर शुष्क होना शुरू हो गया और तेरहवें दिन बिल्कुल निर्मल खोपड़ी, एक फोड़ा भी नहीं सिर में रहा। यह तो वर्तमान समय की बातें हैं। कितनी बड़ी ऐतिहासिक साखी भी इस बात से संकलित है कि सुखमनी साहिब की बाणी तन के रोग ठीक करती है।

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने जब यह बाणी उच्चारण करके यह अनमोल भण्डार दुनिया के दामन में डाला तो संगतों को इस बाणी को नित्य नियम से पढ़ने का भी उपदेश किया, जिसके फलस्वरूप बहुत सारे सिक्खों ने इस बाणी को कंठ कर लिया।

जब गुरु अर्जुन देव जी गुरुगद्दी पर विराजमान थे, तब मुसलमान बादशाह जहाँगीर का शासन था और जहाँगीर का एक

विशेष अहलकार था जिसका नाम था वजीर खां। कर्मों की गति, उसे जलोदर का रोग हो गया। पेट में पानी भर जाना, अफारा हो जाना, दर्द से तकलीफ में वृद्धि होना, न कुछ खा सकना, न पी सकना, हर समय 'हाय-हाय' करते रहना। बादशाह का विश्वासपात्र अहलकार था, धन की कोई कमी नहीं थी, बहुत उपचार करवाया, परन्तु उपचार करवाने के पश्चात् भी कोई फर्क न पड़ा, अपितु रोग और बढ़ता गया।

अब वजीर खां हवेली से बाहर वाले कमरे में अकेला पड़ा सारा समय दर्द से तड़पता रहता और परमेश्वर के समक्ष प्रार्थना करता कि तू ही कृपा कर, कोई विधि बना दे। (दास ने अपने जीवन में तत्व निकाला है कि परमेश्वर सब कुछ कर सकता है, उसकी विधि बहुत मजबूत है। जब वह विधि बनाए, आदमी भी हैरान हो जाता है कि यह तो मैंने सोचा भी नहीं था)।

परमेश्वर द्वारा विधि बन गई। एक सिक्ख भाई भागू, रोज वजीर खां की हवेली के आगे से सुखमनी साहिब का पाठ उच्च स्वर में बोलकर करता हुआ निकलता था। (भाई भागू बाज़ार में से बाणी उच्च स्वर में पढ़ता हुआ निकलता था, इसका अभिप्राय कि वह अभ्यासी सिक्ख होगा, और उसने शर्म भी उतारी होगी)।

वजीर खां ने एक दिन नोट किया कि कोई सिक्ख कुछ बोलते हुए गुजरता है, और जितनी देर तक उसकी आवाज मेरे कानों में पड़ती रहती है, मुझे पीड़ा से आराम महसूस होता है। जब वजीर खां ने तीन-चार दिन निरन्तर ऐसा ही महसूस किया कि कोई सिक्ख, रोज सुबह, कोई कलाम जैसा पढ़ता गुजरता है तो उस समय मुझे दर्द नहीं होता, बड़ा चकित हुआ। एक दिन साहस कर के, उस सिक्ख को आवाज देकर भीतर बुला लिया और पूछा, "खुदा के नेक बंदे, यह तू क्या पढ़ता है, जिसे सुनने से मेरी तकलीफ दूर हो जाती है। यह आवाज जब मेरे कानों में पड़ती है तो मुझे बहुत राहत मिलती है, लेकिन जब यह आवाज आनी बंद हो जाती है तो फिर पीड़ा शुरू हो जाती है। सिक्ख ! यह तू कौन से कलाम पढ़ता है ?"

भाई भागू कहने लगा, ''यह तो पांचवें गुरु नानक, गुरु अर्जुन देव जी की उच्चारण की हुई बाणी श्री सुखमनी साहिब है।'' वजीर खां कहने लगा, ''सिक्ख ! मुझ पर तरस कर, मेरी विनती है कि तू यह सुखमनी साहिब का एक पाठ नित्य मुझे मेरे घर आकर सुना दिया कर, क्योंकि इसे सुनने से मेरी तकलीफ को आराम मिलता है।'' (जो गुरु के सिक्ख होते हैं, वह जाति-पाति अथवा धर्म का अन्तर नहीं देखते, वह तो सब का भला चाहते हैं)।

अरदास में भी यह पंक्तियाँ अंकित हैं— 'नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाने सरबत का भला।' गुरु ने रंग भरा है अपने सिक्खों में सब की भलाई का। कोई छोटी बात नहीं, कमाई भी देनी पड़ती है। दास ने भुचो मण्डी वाले महापुरुषों का वचन पढ़ा था कि जो साधु, संत, महात्मा लोगों के घर रोटियाँ ही खाता रहता है, वह कुछ माह में अपना सबकुछ खाली करवा कर बैठ जाता है। आज वहाँ भोजन, कल वहाँ भोजन।

बाबा हरनाम सिंघ जी भुचो मण्डी वालों का दास ने वचन पढ़ा कि जो रंगा हुआ गुरु का सिक्ख, किसी के घर भोजन सेवन करे, पाँच पाठ जपुजी साहिब जी के उस परिवार के नाम पर घर आकर करे। यदि किसी परिवार का कपड़ा ग्रहण करे तो पच्चीस पाठ जपुजी साहिब जी के उसके नाम पर करे। यदि किसी का धन ग्रहण करे तो १०१ पाठ जपुजी साहिब जी के उसके नाम पर करे। अन्यथा फिर कमाई जाती है। शरीर तो दुखों से भरा पड़ा है। (बाबा हरनाम सिंघ जी भुचो मण्डी वालों के जीवन से संबंधित १२ भाग हैं, अवश्य पढ़ना, जिन्दगी में चलने के लिए बहुत कुछ मिलता है।)

परोपकारी सिक्ख भाई भागू ने वज़ीर खां की विनती मान ली और नित्य सुबह गुरुद्वारे से दर्शन करके वापिसी पर आते वजीर खां को श्री सुखमनी साहिब का पाठ सुनाना शुरू कर दिया। (पुराना समय था, लोग समय भी निकाल लेते थे। आजकल तो समय ही नहीं)। वजीर खां ने भी चादर बिछा कर बैठ जाना और सिक्ख के लिए भी आसन लगाना और प्रेम से बाणी सुननी।

प्रतिदिन नियम से पाठ सुनने के फलस्वरूप वज़ीर खां को

आराम आना शुरू हो गया। ८० प्रतिशत रोग ठीक हो गया। वज़ीर खां का श्रद्धा का घड़ा भर गया। जो दुखी होता है, जब उसे आराम मिले तो यह वही बता सकता है। वजीर खां ने उस सिक्ख का हार्दिक धन्यवाद किया और विनती की कि कृपा करके, जिन्होंने यह बाणी उच्चारण की है, मुझे उनके दर्शन भी करवा दो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिन की बाणी सुनकर मुझे इतना आराम मिला है, उनके दर्शन करने से अवश्य मेरा रोग पूर्णतया ठीक हो जाएगा।

सिक्ख कहने लगा कि तेरी भावना को अवश्य भाग्य लगेंगे। वह सिक्ख वज़ीर खां को अमृतसर, गुरु अर्जुन देव जी के दर्शनों हेतु ले आया। जब दर्शन किए तो वजीर खां ने हाथ जोड़कर विनती की, ''पातशाह ! आपके कलाम में इतनी ताकत है कि आप जी के कलाम सुनकर मुझे बहुत सुकून मिला है, मेरा ८० प्रतिशत जलोदर का रोग ठीक हो गया है। आप जी कृपा करो ताकि मेरा रोग पूर्णतया निवृत्त हो जाए।''

सतिगुरु सच्चे पातशाह की मौज, बाबा बुड्ढा जी की ओर संकेत करके कहने लगे कि वह बाबा बुड्ढा जी सेवा कर रहे हैं, उनसे जाकर विनती कर। बाबा बुड्ढा जी उस समय टोकरियां उठवा रहे थे। (इस बात से भी अपने लिए सीख लेना, हरिमन्दिर साहिब के पहले मुख्य ग्रंथी हुए हैं, बाबा बुड्ढा जी तो टोकरियां उठवाते हैं, हाथों से सेवा में पूर्ण) इसने बाबा बुड्ढा जी को जाकर विनती की। बाबा जी भी मौज में आ गए और उसके धैर्य की परख करनी चाही।

बाबा जी ने परीक्षा लेनी चाही और कहने लगे, ''क्या हम यहाँ रोग ठीक कर रहे हैं, हम तो टोकरियां उठवा रहे हैं, चल दूर हट, हमें सेवा करने दे, हमारी सेवा में विघ्न मत डाल।''

ऐसे कठोर वचन यह परखने के लिए बोले कि यदि धैर्य होगा, विश्वास होगा, श्रद्धा से आया होगा, तो सहन कर जाएगा, अन्यथा भाग जाएगा इस मान से कि मैं जहाँगीर बादशाह का विश्वासपात्र अहलकार और मुझे कैसे बोले हैं।

वजीर खां ने इतने दिन नम्रता वाले सिक्ख की संगत की थी,

इतने दिन बाणी श्रवण की थी, उसका प्रभाव था कि बाबा बुड्ढा जी के वचनों का कोई क्रोध न किया। मन में किसी किस्म का भी द्वेष न आने दिया अपितु हाथ जोड़कर, नम्रतापूर्वक एक तरफ खड़ा हो गया कि मुझे एक तरफ खड़े होने का हुक्म किया है, मैंने हुक्म मानना है, एक तरफ खड़े होने का। दस मिनट, पन्द्रह मिनट, बीस मिनट, पच्चीस मिनट बीत गए, बाबा बुड्ढा जी ने देखा कि अभी भी वहाँ ही खड़ा है। (कहीं-कहीं गुरु भी चैक करता है, सीख लें, हमारा भी गुरु के चरणों से ऐसा प्यार हो, श्रद्धा से उसके चरणों से प्रेम हो जाए)

बाबा बुड्ढा जी ने जब देखा २०-२५ मिनट पश्चात भी वैसे ही नम्रता से खड़ा है, तो समझ गए, श्रद्धा से आया है। स्वयं पर बड़ाई नहीं ली और सेवा करते-करते सेवा की टोकरी इसके पेट पर निकाल कर मारी, जिससे सारा पानी इसके मुँह द्वारा बाहर निकल गया (जलोदर के रोग में पेट में पानी भर जाता है।) वज़ीर खां तंदरुस्त हो गया। बाबा बुड्ढा जी कहने लगे, "वजीर खां, श्री सुखमनी साहिब की बाणी प्रेम से सुनने के फलस्वरूप और पंचम पातशाह के श्रद्धा-भावना से दर्शन करने के फलस्वरूप तेरे शरीर को रोगों से छुटकारा मिल गया है।"

वजीर खां की इस ऐतिहासिक साखी से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सुखमनी साहिब की बाणी सुनने से तन के रोग भी दूर हो जाते हैं।

२-३ वर्ष पूर्व की बात है, अमृतसर के कोई ५-६ शरीर हेमकुण्ट साहिब के दर्शनों के लिए गए। यहाँ से चले तो पहले 'ऋषिकेश' थोड़ा-सा पड़ाव है। वह जब अभी ऋषिकेश ही पहुंचे थे कि उन में एक शरीर को पत्थरी का दर्द शुरू हो गया। (पत्थरी का दर्द अचानक ही होता है, पता ही नहीं होता कब शुरू हो) उन्होंने दवाई दी, टीका लगवाया और थोड़ी देर विश्राम करके आगे चल दिए, लेकिन वह शरीर सारे मार्ग उलटियां (कै) करता रहा। जैसे-कैसे गोबिंद घाट पहुंचे। वहाँ फिर दवाईयां दीं, लेकिन गोबिंद घाट से गोबिंदधाम, सारे मार्ग उसकी बहुत ही तबीयत खराब, दर्द से बुरा

हाल, उलटियां भी। शेष साथी भी उसके कारण परेशान हो रहे थे। एक शरीर के अस्वस्थ होने के कारण सभी की यात्रा के आनंद में विघ्न पड़ रहा था।

जब गोबिंद धाम पहुँचे, अचानक एक शरीर के दिमाग में आया कि सुनते हैं सुखमनी साहिब की बाणी दुखों का नाश करती है, सुखमनी साहिब की बाणी से तन के दुख भी दूर होते हैं, आज क्यों न सुखमनी साहिब का सहारा लिया जाए। यात्रा में हाँ, अन्य कोई समाधान भी नहीं। इतनी दूर पहुँच कर बिना दर्शन किए वापिस जाने के लिए भी मन नहीं करता। उसने जिसके दिमाग में यह विचार आया था, जब शेष सभी को बताया, सारे ही गुरुमुख थे, सहमत हो गए।

जिस शरीर को तकलीफ थी, उसे चौकड़ी मार कर बीच में बिठाया और शेष उसके आसपास बैठ गए। अरदास की कि सतिगुरु ! कृपा करो, सुखमनी साहिब के पाठ की सेवा, अपने सेवकों से लो। एक शरीर एक पंक्ति उच्च स्वर बोलता और शेष शरीर दूसरी पंक्ति बोलते। जब इस तरह, उसे सुखमनी साहिब का पाठ श्रवण करवाया, अरदास की तो उन्होंने बताया कि अभी तक सिर्फ सुना था कि सुखमनी साहिब की बाणी तन के रोग ठीक करती है, लेकिन उस दिन सुखमनी साहिब की यह शक्ति प्रयोग होती देख भी ली। कहते अब वही शरीर गोबिंद धाम से हेमकुण्ट साहिब मुस्कुराता गया और मुस्कुराता ही वापिस आया। सारे मार्ग प्रशंसा करता रहे कि गुरु अर्जुन साहिब ने क्या भरा है इस बाणी में। कौन-सी ताकत, कौन-सी बख्शिश भरी है। सुखमनी साहिब का एक पाठ प्रेम से सुनने के फलस्वरूप उनकी यात्रा गुरु के प्रेम में निर्विघ्नता से सम्पूर्ण हो गई।

सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ने-सुनने से कितनों के तन के रोग ठीक हो गए, कितनों की लाइलाज बीमारियाँ कट गईं, यदि यह लिखने लगे तो कई किताबें भर जाएं।

कोई १५-२० वर्ष पूर्व की बात है। बाबा दीप सिंघ कीर्त्तनी जत्थे के मुख्य जत्थेदार बीबी परमजीत कौर (आनंदपुर साहिब) के केश

जुड़ गए और सारे केशों का गुंझलदार गुच्छा बन गया, जिससे सिर के मांस को खिंचाव पड़ने लग गया। कंघा तो दूर, पगड़ी सजाने वाली बारीक-सी सिलाई भी उन केशों में से नहीं थी निकलती। बड़ा उपचार करवाया परन्तु कहीं से भी आराम न आया। सारे डाक्टर, हकीमों का यही कहना था कि केश कटवाने पड़ेंगे, परन्तु उस गुरुमुख महिला का यह दृढ़ फैसला था कि केश नहीं कटवाने।

फिल्लौर के समीप कोई महापुरुष हैं, उनके पास गए और जाकर विनती की। महापुरुषों ने हाथ से उस समय फूल की पंखुड़ियां पकड़ी हुई थीं। उन्होंने वही देकर कहा कि इन पंखुड़ियों को सरसों के तेल में डालकर, सुखमनी साहिब का पाठ आरम्भ कर दो, उस तेल को केशों पर लगाते रहो और साथ-साथ सुखमनी साहिब का पाठ करते रहो। तेल लगाकर, जो पाँच कक्कारों से कंघा मिला हुआ है, उसे केशों में तब तक चलाते रहो जब तक श्री सुखमनी साहिब के पाठ की समाप्ति न हो जाए।

उन्होंने घर जाकर इसी तरह ही किया। जिन केशों में बारीक सिलाई भी नहीं थी गुजरती, उन केशों में कक्कारों वाला कंघा चलना शुरु हो गया। पाठ की समाप्ति होने तक आधे केश रेशम की तरह हो गए। अगले दिन उन्होंने फिर इसी तरह ही किया। पाठ की समाप्ति होने तक सारे ही केश रेशम की तरह मुलायम हो गए।

अर्थात् सुखमनी साहिब जी की बाणी में प्रत्येक मुश्किल का समाधान है। यह जहाँ मन को शांति प्रदान करती है, वहाँ तन के रोगों को भी नाश करती है।

सुखमनी साहिब जी की बाणी गुरुघर द्वारा प्रदान ऐसी देन है, जिसके समक्ष डाक्टरों के भी हाथ खड़े हो जाते हैं। ''हमारी पढ़ाई, हमारे टैस्ट तो कुछ बोलते हैं, परन्तु इससे इस तरह कैसे बीत गया ?''

दास बड़ा हैरान होता है कि पता नहीं गुरु अर्जुन देव जी ने कितना रंग भरा है सुखमनी साहिब की बाणी में। कितनी ताकत भरी है इस दरगाही बाणी में।

कई मिलते हैं दास को, कह देते हैं, हम तो रोज़ सुख़मनी साहिब का पाठ करते हैं, लेकिन हम पर तो बख्शिश हुई नहीं, हमारा तो अमुक दुख गया नहीं। कई शरीर तो यहाँ तक कह देते हैं कि हमने जब से सुखमनी साहिब पढ़नी शुरु की है, हमारे तो दुख और बढ़ गए हैं, लेकिन एक बात याद रखना, बाणी कभी भी दुखों में वृद्धि नहीं करती अपितु कम ही करती है, परन्तु हमारी आँख देख नहीं सकती। यह तो गुरु ही जानता है कि कितना दुख आना था और कितना कट कर आया है। विश्वास की आवश्यकता है।

तरनतारन एक परिवार के घर का ५० साल का वृद्ध बहुत बीमार हो गया। पूरा साल बीत गया इलाज करवाते, लेकिन कोई दवाई निदान नहीं थी करती। हालत और बिगड़ती गई। उस वृद्ध की पत्नी ने सहज स्वभाव किसी सत्संगी महिला से अपने वृद्ध पति के दुख बारे बात की कि हमारी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा। साल हो गया है इलाज करवाते, लेकिन कोई भी दवाई असर नहीं कर रही। वह सत्संगी महिला, सत्संग में सुखमनी साहिब की बाणी की महिमा सुनती थी कि यह बाणी रोगों को ठीक करती है। वह कहने लगी, ''आप दिल मत छोड़ो, सुखमनी साहिब का सहारा लेकर देखो। अपने घर एक सुखमनी साहिब का गुटका ले जाओ। पाँच पाठ नित्य के सुखमनी साहिब के ४० दिन नियम से करके अरदास करो। गुरु साहिब अवश्य कृपा करेंगे।''

उस वृद्ध माता को गुरुमुख महिला की बात सुनकर कुछ आश्वासन मिला और उसने अगले दिन से ही अपने घर में पाँच पाठ सुखमनी साहिब के शुरु कर दिए वृद्ध की देह अरोग्यता हेतु। १५-२० दिन बीत गए, सुखमनी साहिब की बाणी के पाँच पाठ प्रतिदिन नियम से करते, परन्तु परमात्मा की करनी, वृद्ध की हालत और बिगड़नी शुरु हो गई। उस माता के जवान पुत्र व शेष घर के सदस्य भी कहने लगे, ''माता, तूने जब से यह सुखमनी साहिब पढ़नी शुरु की है, पिता जी की बीमारी और बढ़नी शुरु हो गई है। अच्छा यही है कि तू सुखमनी साहिब पढ़नी बंद कर

दे।" परन्तु उस माता ने नियम न छोड़ा। २-४ दिन और बीते, बीमारी इतनी बढ़ गई कि तरनतारन के डाक्टरों ने जवाब दे दिया और कहने लगे कि हमारे वश की बात नहीं, आप रोगी को अमृतसर ले जाओ।

रोगी को अमृतसर के अस्पताल में दाखिल करवा दिया गया, लेकिन उस वृद्ध माता की भावना, उसने अस्पताल में भी सुखमनी साहिब का नियम नहीं छोड़ा। अस्पताल के कमरे में एक तरफ पर्दा लगाकर वहाँ ही यह माता सुखमनी साहिब का नियम अदा करती गई, लेकिन अभी भी परीक्षा की घड़ी थी।

४-५ दिन पश्चात अमृतसर के डाक्टरों ने भी जवाब दे दिया और कहने लगे कि हमारे पास इसका कोई इलाज नहीं, इसे दिल्ली ले जाओ। रोगी को गाड़ी में दिल्ली ले गए, पर धन्य वह माता जिसने गाड़ी में भी सुखमनी साहिब का नियम न छोड़ा। गाड़ी में भी पाँच पाठों का सुखमनी साहिब का नियम अदा किया। रोगी को दिल्ली के अस्पताल में दाखिल करवा दिया गया। वहाँ भी वृद्ध माता ने सुखमनी साहिब का नियम जारी रखा। घर के सदस्य भी कहने लगे, "माता! तूने क्या मुसीबत डाली हुई है, हर जगह सुखमनी साहिब का पाठ करती रहती है, कोई हालत में फर्क तो पड़ नहीं रहा, अपितु हालत और बदत्तर ही हो रही है।" लेकिन उस माता ने भरोसे और धैर्य में कमी नहीं आने दी।

परीक्षा की घड़ी अभी भी समाप्त नहीं हुई। ४-५ दिन पश्चात दिल्ली के अस्पताल के डाक्टरों ने भी जवाब दे दिया और कह दिया कि ४-५ दिन से अधिक नहीं जीना, इसे घर वापिस ले जाओ और जितनी सेवा कर सकते हो कर लो। वह रोगी को लेकर वापिस तरनतारन आ गए। भरोसा हो तो ऐसा! उस माता ने पाँच पाठों का नियम नहीं छोड़ा। कभी तो गुरु खुश होगा, कभी तो गुरु प्रसन्नता देगा। ऐसा प्रेम, प्यार व विश्वास देखकर गुरु को बख्शिश करनी ही पड़ती है, बस आवश्यकता है मालिक को मनाने की।

कहते हैं ३८ दिन बीत गए सुखमनी साहिब के पाँच पाठों का नियम करते लेकिन हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। कहते हैं कि

४० दिन उस माता ने नियमपूर्वक अरदास की वृद्ध की देह अरोग्यता की। इक्तालीसवां दिन आया, सब की आश्चर्य की सीमा न रही, रोगी की हालत में सुधार शुरु हो गया और फिर दिन-ब-दिन सुधार होता गया। ४६ वां दिन था, रोगी की हालत में काफी सुधार आ गया। जब डाक्टरों को चैक करवाने गए तो डाक्टर भी यह चमत्कार देखकर चकित हो गए कि यह आपने कौन-सा ढंग इस्तेमाल किया है। जिस रोगी को बड़े-बड़े डाक्टरों ने जवाब दे दिया था, वह कैसे ठीक हो गया। यह क्या कौतुक हो गया कि जिस रोगी को जो बीमारी लगी थी, वह बीमारी ही शरीर में से खत्म हो गई है, बीमारी मिल ही नहीं रही कि गई कहाँ?

अब इस घटना को पढ़कर आप स्वयं ही बारीकी निकाल लेना, निष्कर्ष निकाल लेना, अपने लिए सीख लेना कि हमने सुखमनी साहिब से किस तरह का प्यार करना है, हमने किस तरह की भावना रखनी है। बाबा नंद सिंघ जी के वचन हैं, ''सिक्ख में तीन गुण हों—एक जल्दबाजी न करे, दूसरा द्वार न छोड़े और तीसरा अहंकार न करे तो वह कभी गुरु से खाली नहीं जाएगा।'' हमारी यह हालत है कि थोड़े दिन किसी दुख के लिए बाणी पढ़ी, यदि दुख नहीं गया तो हमारे पैर थिरक जाते हैं। हम या तो बाणी पढ़नी छोड़ देते हैं अथवा अन्य दूसरे सहारों की ओर भागने लगते हैं, लेकिन एक बात याद रखना, गुरु भी कई बार मौज-मौज में परीक्षा डाल देता है, इम्तिहान की घड़ी ले आता है।

हमने इन छोटी-छोटी परीक्षाओं में ऐसी भावना बनानी है कि सतिगुरु जी! हम तो तेरे हैं, तेरे अलावा हमारा कोई अन्य सहारा नहीं। (यहाँ एक बारीकी का अवश्य ध्यान रखना) साथ-साथ यह प्रार्थना अवश्य करनी है, सतिगुरु! हम अल्पज्ञ जीव तेरी परीक्षाओं में उत्तीर्ण नहीं हो सकते, हमारी परीक्षा मत लेना, हमारी बांह पकड़ लो।

एक बात निश्चित जान लेना, यदि इस तरह का प्यार करोगे, इस तरह की भावना रखोगे, फिर गुरु अपने सिक्ख को गर्म हवा भी नहीं लगने देता। गुरु के भरोसे से लिख रहा हूँ, कभी खाली

हाथ नहीं जाओगे, भाग्य अवश्य उज्ज्वल होगा। गुरु को आपके दुःख काटने ही पड़ेंगे। बख्शिशों से भरी बाणी सुखमनी साहिब का दामन पकड़ें और दुःख न जाएं, यह कभी हो ही नहीं सकता। हमारी भावना, हमारी श्रद्धा में कमी हो सकती है, परन्तु उधर से कोई कमी नहीं। देर हो सकती है, पर अंधेर नहीं।

यह तीसरी विशेषता विस्तार से लिखें तो एक अलग किताब छप सकती है। यहाँ समाप्त करते हैं कि श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी तन के रोग भी ठीक करती है। यह तीसरी विशेषता है।

३. यह तीसरी विशेषता पढ़कर यदि किसी का श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी पर अटूट भरोसा हो जाए कि यह बाणी केवल मन के रोग ही नहीं, अपितु तन के रोग भी ठीक करती है तो हम यह प्रयास गुरु की कृपा से सफल समझेंगे।

—द्वारा : दास लेखक

चौथी विशेषता

"श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी जन्म-मरण के बंधन भी समाप्त करती है"

दास तो हैरान होता है कि सुखमनी साहिब जी की बाणी में गुरु साहिब ने ऐसी कौन-सी शक्ति भरी है कि इससे न केवल इस लोक के दुख समाप्त हो जाते हैं, अपितु इस बाणी को सुनने, पढ़ने वाले का परलोक भी सुखद हो जाता है। गुरु अर्जुन देव जी, स्वयं बीच बैठ कर सब कार्यों में खुद सहायक होते हैं, चाहे वह लोक के हों, चाहे परलोक के।

जो सुखमनी साहिब की बाणी को प्रेम से पढ़ता अथवा सुनता है, यह बाणी उसका जन्म-मरण का दुख निवृत्त कर देती है।

सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ने वाले मनुष्य का दुर्लभ शरीर भी सफल हो जाता है। हम में से बहुसंख्या उनकी है जो अपने तन से, शरीर से प्यार करते हैं, लेकिन यह तो नाश हो जाना है। पर कहते हैं नाश से पहले जिसका गुरु से, बाणी से हार्दिक प्रेम हो जाए, उसका शरीर भी स्वीकार हो जाता है।

वैसे तो शरीर ने नाश हो जाना है, पर कहते हैं यह भी स्वीकार हो गया। किस का स्वीकार हुआ? जो दो-चार करोड़ पीछे छोड़ गया, अथवा जिसने वस्त्र बहुत अमूल्य पहने, जो बहुत बुद्धिमान है, चुस्त है उसका, कहते नहीं, फिर किस का?

"कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ
जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ॥" (अंग ६२२)

हमारी मृत्यु के पश्चात जब शरीर को जला भी देते हैं, नाम तो भी नाश नहीं होता। जो भीतर शब्द की कमाई है, बाणी कंठ है, वह नाश नहीं होती, शरीर को जलाने के पश्चात् भी यह चीज नहीं जलती। उसके पश्चात् अस्थियां चुनते हैं, जिसे फूल कहते हैं, राख बोरियों में डालते हैं, इसे जल प्रवाह कर देते हैं, लेकिन यह चीज फिर भी नाश नहीं होती। यदि जन्म-मरण समाप्त हो गया तो भला, यदि दोबारा जन्म मिल गया, जो कुछ वाणिज्य किया होगा, वह नाश नहीं होगा, वह साथ ही चला आता है। जहाँ भी जाओगे, वह सौदा साथ जाएगा, वह साथ ही चला आता है।

हो सकता है, कई लोगों को यह बात अजीब लगे। थोड़े दिन हुए दास को एक बालक मिला, कोई १० वर्ष की आयु उस बालक की। जपुजी साहिब का पाठ साढ़े तीन मिनट में कर लेता है। उससे दास ने पूछा क्या पाठ की प्रत्येक पंक्ति तेरी नज़र में से गुजरती है, तेरे भीतर से गुजरती है? वह कहता, हाँ गुजरती है। दास ने कहा, अवश्य यह पूर्व जन्म का कोई अभ्यासी है। पूर्व जन्म का इसे इतना अभ्यास है कि अगले जन्म में वह चीज तैयार मिल गई है। इसे बाणी का पूर्व जन्म का अभ्यास है। अन्यथा कई बड़ी-बड़ी आयु के शरीर ६-७ मिनट लगाते हैं, जपुजी साहिब का पाठ करने को। कहीं इस बात का यह मतलब न समझ लेना कि बाणी शीघ्र-शीघ्र पढ़नी है, रफ्तार बढ़ानी है। बाणी का प्रत्येक अक्षर आपकी निगाह में से निकले, पता लगे कि मैंने हर अक्षर पढ़ा है, अपना पढ़ा सुना जाए। यह अभ्यास की बात होती है। जैसे-जैसे अभ्यास बढ़ता जाए, समय अपने आप कम लगता है।

दास का यह उदाहरण देने से भाव यह है कि जो भी सीढ़ी अभ्यास की चढ़ जाओगे, कोई बाणी कंठ की, शब्द की कमाई की, नम्रता की, निर्वैरता की, दया की अथवा कोई अन्य, हम प्राण त्याग जाएंगे, शरीर समाप्त हो जाएगा, जल भी जाएगा, जलप्रवाह भी हो जाएगा, लेकिन वह नाश नहीं हो सकती। इस व्यापार का नाश नहीं होता। शेष घड़ियों का तो पता नहीं क्या करें, लेकिन यह नाम के व्यापार में बिताई घड़ियाँ सत्संग की घड़ियाँ सज्जन बन कर दरगाह

में साथ देती हैं। फिर क्यों न इस व्यापार में वृद्धि की जाए, जो साथ निभा जाए।

''वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि॥
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि॥''

(अंग २२)

अन्तरात्मा की प्राप्ति वाली बड़ी पवित्रात्मा, बहुत बड़ी अवस्था वाले एक महापुरुष हुए हैं संत सुचेत सिंघ जी, उन्होंने अपनी रसना से एक जिक्र सुनाया, श्री सुखमनी साहिब की महिमा का। दास का चित्त है वह जिक्र आपके साथ व्यक्त करने का शायद किसी को कुछ प्राप्त हो सके और सुखमनी साहिब की महिमा हमारे भी हृदय में बस जाए। यह जिक्र भाई मनी सिंघ जी की टकसाल के संत कृपाल सिंघ जी ने अपनी कलम से भी लिखा है। भाई मनी सिंघ जी की टकसाल के पास एक ग्रंथ है 'प्रेम प्रकाश' उस में भी यह अंकित है।

मथुरा—वृंदावन में एक मुंशी रहता था। (ध्यान देना, वह सिक्ख नहीं था) कोई शुभ कर्म सामने आ गया, किसी रंगे हुए गुरसिक्ख की संगत हो गई और उसकी संगत करने के फलस्वरूप उस मुंशी को भी रंग लग गया।

''ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि॥''

(अंग १३६५)

वाली बात बन गई। मजा ही इस बात का है कि कोई रंगा गुरसिक्ख हो और उसे देखकर किसी टूटे हुए अथवा शाक्त पुरुष को भी रंग लग जाए। हमारे घरों में से ऐसी सुगन्धि आए कि दूसरों को भी गुरसिक्खी से जुड़ने की प्रेरणा मिले, कहीं ऐसा न हो दूसरे का गलत रंग हम पर चढ़ जाए।

उस मुंशी को चाव उत्पन्न हुआ कि मैं भी गुरमुखी भाषा सीख लूं। प्यारो, ध्यान रखना, आपके बच्चे अंग्रेजी अवश्य सीखें पर कहीं गुरमुखी न भूल जाएं। कहीं अंग्रेजी के रंग में वाहिगुरु जी का

खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह बुलाना भूल न जाएं। कहीं गुरु को नमस्कार करना भूल न जाएं। कई सिक्खों के बच्चे कानवैंट स्कूलों में पढ़ते हैं, एक धर्म में हृदय पर हाथ लगाकर नमस्कार करते हैं, जैसे वह देखते हैं, वह भी वैसे ही करने लग जाते हैं। ध्यान रखा करो, कहीं हमारे बच्चे उनका रंग ग्रहण करके गुरु को माथा टेकना न भूल जाएं। कहीं हमारे बच्चे गुरुबाणी से, गुरु से टूट न जाएं।

आप अपना फर्ज अवश्य निभाओ, पूरा यत्न करो बच्चों को प्रेम से, प्रेरणा देकर समझा कर, चाहे कोई लालच देकर इस तरफ चलने का, मारपीट कर नहीं। जितनी बच्चे की उम्र है, उस हिसाब से उसे पाठ करने हेतु प्रेरित करो। यदि बच्चा छोटा है जपुजी साहिब का पाठ थोड़ा बड़ा है। रहरासि साहिब का, सुखमनी साहिब का चाहे एक दो अष्टपदियों से ही शुरु हो जाए, यदि बहुत छोटा है, जपुजी साहिब का पाठ नहीं अभी कर सकता, पाँच पउड़ियाँ, मूल मंत्र, गुरु मंत्र, बच्चे की उम्र अनुसार अवश्य उसे प्रेरित करो। आप गुरु के कूकर बनकर अपना फर्ज अवश्य निभाओ। शेष कृपा फिर गुरु करता है। बच्चे को रात्रिकाल सोते समय अवश्य पूछा करो कि जो भी उसकी नित्यक्रिया थी उसने की है कि नहीं।

उस मुंशी को जो कि सिक्ख भी नहीं था, गुरसिक्ख को मिलकर ऐसा रंग चढ़ गया कि उसने गुरमुखी अक्षर सीख लिए। फिर धीरे-धीरे सुखमनी साहिब का पाठ कंठ कर लिया। जुबानी याद कर लिया। पाठ कंठ करने के पश्चात पूछने लगा, किस ढंग से पाठ करुं कि महातम अधिक मिले।

बात बड़ी पकड़ की है, ध्यान देना। हम में से कई सोफों पर बैठकर, बिस्तरों में बैठ कर ही बाणी पढ़ते जाते हैं। बाणी पढ़ते-पढ़ते साथ ही बीच में बातें भी करते जाते हैं, एक दूसरे को आवाजें भी देते जाते है, बच्चों को डांटते भी जाते हैं। यदि कोई घर आ जाए तो गुटका वहाँ ही बंद करके जहाँ मर्जी रखकर-फ्रिज पर, टीवी पर, अथवा अलमारी में जहाँ जगह भी शुद्ध नहीं होती। यदि कोई फोन आ जाए, बीच ही उंगली रखकर बातें करने लग

जाते हैं, यदि कोई टी.वी. पर सीरियल का समय हो जाए, पाठ बीच में ही छोड़ देते हैं कि शेष पाठ बाद में कर लेंगे। फल तो इसका भी मिलेगा, लेकिन १०० में से १० पैसे। यदि वही बाणी युक्ति से पढ़ी जाए, सामने शुद्ध चादर का आसन बिछा कर, भावना हो गुरु साहिब प्रत्यक्ष बैठे हैं, मैं उन्हें बाणी श्रवण करा रहा हूँ। दस गुरुओं में जिस का मर्जी ध्यान कर लो, ज्योति एक ही है, इस तरह करने से मन बहुत लीन होता है।

(इससे सेवा और सिमरन भी दोनों हाजरियाँ लग जाती हैं। बाणी पढ़ना हमारा नियम हो गया, यह सिमरन हो गया और दूसरा गुरु को बाणी श्रवण करवाने की सेवा भी हो गई।)

एक आसन पर चौकड़ी मार कर बैठ कर बीच में कोई किसी से बातचीत नहीं करनी, कोई सांसारिक कार्य नहीं करना, कोई टैलीफोन नहीं अटैंड करना, इस तरह पाठ करने का महातम हजार गुणा हो जाता है।

जितनी एकाग्रचित्र होकर बाणी पढ़ी जाए, उतना ही महातम बढ़ जाता है। जो भी बाणी पढ़ते हैं, सिमरन करते हैं, जुड़ कर करें। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे: 'बाणी पढ़ते तेरा ध्यान बाणी के एक-एक अक्षर में बिंधा हो, फिर देख, तेरी इस तरह पढ़ी हुई बाणी तेरी जिन्दगी में कितना रंग लाती है।'

(बाकी जैसे भी कोई करे, मुबारक है। शुक्र है हाजिरी लगा रहा है। जैसे बाबा जी का वचन पहले भी व्यक्त किया था कि आग में कोई वस्तु जैसे मर्जी हो फैंक दो उसने जल ही जाना है। बाणी जैसे भी पढ़ते जाओ उसने हमारा कोई न कोई अवगुण, कोई ना कोई पाप जला ही देना है।)

बाकी यह युक्तियाँ हैं, बाणी को जितना एकाग्रता से, निर्मल भावना से, प्रेम से, श्रद्धा से, भावना से पढ़ा जाए उतना ही महातम बढ़ जाता है।

"संतहु माखनु खाइआ छाछि पीऐ संसारु॥"

(अंग १३६५)

किसी के हिस्से में लस्सी आती है और किसी को मक्खन जैसा लाभ होता है। गुरु साहिब ने दोनों के बारे में जिक्र किया है। यत्न करो बाणी ऐसे पढ़ो :

'प्रभ की उसतति करहु संत मीत॥
सावधान एकागर चीत॥' (अंग २९५)

दूसरी तरफ, जो बाणी पढ़ते समय बीच में बातें करते हैं, उनके बारे में भी कलगीधर ने रहितनामे में लिखा है :—

''हरि जस कहते बात चलावे॥
कहै गोबिंद सिंघ वह सिख ना भावै॥''

यह बाणी में से, गुरु साहिब की पंक्तियाँ इसलिए दी गई हैं ताकि मन सही फैसला ले सके।

यह वृंदावन का मुंशी जिसने गुरसिक्ख से पूछा कि किस ढंग से पढ़ूं कि महातम बढ़ जाए, उस गुरमुख प्यारे ने बताया कि इस तरह बाणी पढ़ा कर—आसन बिछाकर बैठा कर, बीच में बात नहीं करनी। वह मुंशी जिसे सुखमनी साहिब से अनंत प्रेम हो गया और उसकी दिनचर्या बन गया, एक चौकड़ी पर बैठकर आसन बिछा कर, एकाग्रचित्त होकर सारा सुखमनी साहिब का पाठ करना, पाठ करते समय किसी से बात भी नहीं करनी। कई वर्ष बीत गए प्रतिदिन इस तरह करते।

इस मुंशी का एक ब्राह्मण रसोईया था। एक दिन उस रसोईए को बहुत तेज बुखार और साथ दस्त लग गए। (दस्त से भाव पेट खराब हो जाना) हालत बहुत खराब हो गई। यह मुंशी जब प्रभातकाल पाठ करने लगा तो उसने रसोईए को कहा, ''तू विश्राम कर, यदि तुझे किसी चीज की, दवाई की, पानी की आवश्यकता है, तो बता दे क्योंकि मैंने पाठ पर बैठना है और पाठ के दौरान मैंने बोलना नहीं।'' वह ब्राह्मण रसोईया कहने लगा, ''आप पाठ करो, मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं। मुंशी पाठ करने बैठ गया। पाठ के दौरान, जब पाठ अभी सोलहवीं अष्टपदी पर पहुँचा—

आदि सचु जुगादि सचु॥
है भि सचु नानक होसी भि सचु॥

ब्राह्मण के चारपाई पर ही प्राण निकल गए। यहाँ यह ध्यान रखना कि सुखमनी साहिब के श्लोक में 'भि' है और जपुजी साहिब में 'भी' है।

पाठ की समाप्ति के पश्चात मुंशी ने जब उस ब्राह्मण को हिलाया तो देखा कि वह शरीर छोड़ गया है। चारपाई भी लथपथ पड़ी थी क्योंकि पेट खराब था। ब्राह्मण का अन्तिम संस्कार कर दिया गया, लेकिन मुंशी के मन में एक बात बैठ गई कि एक तो इसके प्राण चारपाई पर निकले हैं, दूसरा गंदगी में निकले हैं, यह अवश्य प्रेत योनि में पड़ा होगा।

हमारे देश में कुछ लोगों का यह ख्याल है कि जिसके चारपाई पर प्राण निकल जाएं, उसकी गति नहीं होती। कुछ लोग तो यहाँ तक वहम करते हैं, जब कोई अधिक बीमार हो, बचने की आशा न हो, उसे चारपाई से नीचे उतार देते हैं। प्राचीन काल में ऐसे वहम बहुत किए जाते थे। अब समय के साथ-साथ अन्तर पड़ता जा रहा है। ऐसा शास्त्रों में भी लिखा है शायद। उस मुंशी के मन में भी यह वहम घर कर गया कि ब्राह्मण की गति नहीं हुई होगी और वह भूत-प्रेत बन गया होगा। कहते हैं, ब्राह्मण का अन्तिम संस्कार करके, मुंशी ने रात सोने से पहले सुखमनी साहिब का पाठ किया और प्रार्थना की, "हे प्रभु! मेरे रसोईए का क्या बना होगा, उसकी आत्मा भटक रही होगी, मुझे बहुत चिंता लगी हुई है।"

यह मुंशी रात को प्रार्थना करके जब सोया तो स्वप्न में निरंकार ने इसका संशय दूर किया। उस रसोईए की आत्मा मुंशी के सपने में उसका भ्रम दूर करने के लिए आई और कहने लगी कि आपकी तसल्ली के लिए मुझे निरंकार ने भेजा है। आप जब सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ रहे थे, मैं लेटा हुआ सुन रहा था। उसके फलस्वरूप मुझे स्वर्ग में जगह मिली है। जब मेरे प्राण निकले उस समय आप सुखमनी साहिब का पाठ कर रहे थे। मेरे

कानों में इस पवित्र बाणी की पंक्तियाँ पड़ने के कारण मुझे परमात्मा ने सर्वोच्च पदवी प्रदान की है। इस बाणी के फलस्वरूप मेरा आवागमन समाप्त हो गया है, जन्म-मरण मिट गया है।

हो सकता है यह स्वप्न की बात पढ़कर कुछ लोगों के मन में आशंका पैदा हो गई होगी कि सपना ही आया था न, क्या पता उद्धार हुआ भी होगा अथवा नहीं। गुर-इतिहास में से ऐसी कई उदाहरणें मिलती हैं जिन से पता चलता है कि गुरु सपनों द्वारा भी कार्य संवारता है।

भाई सज्जा, जिसे गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने सेवादार को कहकर छः महीने के लिए कमरे में बंद करवा दिया था, क्योंकि वह कहता था कि मैं घर की रोटी चलाता हूँ, मैं न होऊं तो घर वालों का निर्वाह भी नहीं चल सकता। मैं कमाता हूँ तो वह खाते हैं। गुरु साहिब ने उसे सीख देने के लिए कि सबको भोजन देने वाला परमात्मा है, अपने सेवादार को हुक्म किया कि इसे ६ महीने के लिए कमरे के भीतर बंद कर दो, बिल्कुल बाहर नहीं निकलने देना।

उस भाई सज्जे के पड़ोस के घर में एक सेठ रहता था, उसे गुरु साहिब ने सपने में दर्शन देकर कहा था, तेरे साथ वाला घर मेरे सिक्ख का है, इसे कोई आवश्यकता हो तो तूने पूरी करनी है। अर्थात् गुरु सपने में भी सक्रिय है। अन्य भी बहुत घटनाएं हैं—

हजूर साहिब के पुजारी को सपने में दर्शन हुए थे गुरु गोबिंद सिंघ जी के, और वचन किया था कि हमारा प्यारा (संत अत्तर सिंघ जी मस्तुआने वाले) गोदावरी के तट पर वचन करके बैठा है कि मैंने कुछ खाना नहीं, जाकर उसे भोजन खिला कर आओ।

मुंशी को सपने में उसके नौकर ने यह कहा कि मेरा उद्धार हो गया है, मेरा जन्म-मरण मिट गया है। यदि ऐसा न हुआ होता तो यह सपना भी तो आ सकता था कि वह भूतों की योनि में पड़ा है।

सपने की गुरु ग्रंथ साहिब में भी बहुत महानता दर्शाई है।

सपने में भी दर्शन हो जाते हैं :

"सुपनै आइआ भी गइआ मै जलु भरिआ रोइ॥" (अंग ५५८)

यहाँ तक कि गुरु हमारे कई दुख, कई मुश्किल समय, कई-कई बुरे जन्म भी सपने में मिटा देता है। यदि चौधरी शमीर की बात लें, जिसने गुरु गोबिंद सिंघ जी की उस समय बड़ी सेवा की थी जब मुगलों का शासन था, और गुरु साहिब की सेवा करने वाले के सरकार पीछे पड़ जाती थी, बड़ा जोखिम था। उसने गुरु गोबिंद सिंघ जी से विनती की थी, "मेरी चौरासी काट दो।" गुरु साहिब कहने लगे, "कल आना।" जब अगले दिन आया तो फिर विनती की, "सतिगुरु! मेरी चौरासी काट दो।" गुरु साहिब मुस्कुरा कर कहने लगे, "तेरा काम रात को कर तो दिया है।" वह कहता है कि मैं समझा नहीं। गुरु जी कहते हैं– "हमें बता, रात कैसे बीती?" वह कहने लगा, "मैंने रात को दो सपने देखे बहुत बुरे, जिन में मैं बहुत ही बुरी-बुरी योनियों में घूमता रहा।" सतिगुरु कहते हैं, "तूने इतने जोखिम भरे समय में हमारी सेवा की है, हमें दूध लाकर पिलाता रहा है, हम तुझ पर अति प्रसन्न हैं। तूने यह जितनी योनियाँ सपने में देखी हैं, यह तूने शरीर कारण भुगतनी थी। गुरु नानक ने कृपा करके तेरी सभी योनियाँ दो सपनों में काट दी है।"

मण्डी के राजा के मन में भी जब दुविधा आ गई थी यह पंक्ति सुन कर–

लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि॥

(अंग ६३७)

कि यदि लेख ही नहीं मिटने तो गुरुघर में आने का क्या लाभ? गुरु अर्जुन देव जी ने उसे उसका आने वाला जन्म सपने में दिखाया था कि कैसे उसने चाण्डालों के घर जन्म लेना था। कैसे उसने अत्यंत गरीबी भोगनी थी, पीलू खाकर निर्वाह करना था, लेकिन गुरुघर आने के कारण उसका यह घटिया जन्म परमात्मा ने सपने में ही काट दिया। इस तरह से परमात्मा की विधि पूरी हो जाती है, सपने में ही जन्म कट जाता है, शरीर पर तकलीफ

नहीं भोगनी पड़ती।

जब किसी गुरुसिक्ख को बुरा सपना आए तो समझ लेना कि वह कुछ व्यतीत होना था, लेकिन गुरु ने कृपा करके सपने में काट दिया। यह थोड़ा-सा जिक्र दास ने सपने के बारे में लिखा है ताकि किसी के मन में शंका न रह जाए।

बात चल रही थी सुखमनी साहिब की महानता बारे कि सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ने सुनने वाले का जन्म-मरण समाप्त हो जाता है। सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ने से अनेकों के उद्धार हुए। दास एक अन्य जिक्र आप जी से व्यक्त करे ताकि मन को यकीन हो जाए।

पाकिस्तान में झंग जिले के कोटा ईसा खां का एक ऐतिहासिक जिक्र है। उस जिले में एक भाई गोपाल जी वैरागी संत हुए हैं जो हर समय निरंकार के चरणों में लीन रहते थे और जो भी कोई दीन-दुखी अथवा कोई गृहस्थी, उनके पास आता, वह उसे नाम-सिमरन का उपदेश देते थे। आठ प्रहर बाणी के रस को भंवरा बनकर प्राप्त करते।

इतिहास में जिक्र आता है कि गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रत्यक्ष दर्शन भी इनको नसीब हुए। गुरु-घर की प्रसन्नता की वर्षा इन पर हर समय होती रहती थी। (क्योंकि बहुत ही निर्वैर आत्मा थे, किसी से ईर्ष्या नहीं, द्वेष नहीं, क्रोध से कोसों दूर, ब्रह्मचार्य ही कायम) इनकी इतनी उच्च अवस्था थी कि मुख से निकले वचन सत्य होते थे। कई बार आने वाले समय का सहज स्वभाव ही जिक्र कर देते थे जो कि सत्य होता था।

एक बार का जिक्र है कि हजारों ही संगतें भाई गोपाल जी के स्थान पर बैठकर नाम-अभ्यास में मग्न थीं तो क्या देखा कि भाई गोपाल जी ऊपर आकाश की ओर देखकर दोनों हाथ जोड़कर खड़े हो गए और नमस्कार करके कहा—वाह-वाह, भले-भले। संगतें बड़ी हैरान हुईं, पूछ लिया— "महापुरुष जी! यह क्या कौतुक है? आकाश की ओर देखकर आप जी ने नमस्कार की और साथ वाह-वाह, भले-भले भी मुख से उच्चरित कर रहे हो।" भाई गोपाल

जी प्रेम में भीगे हुए कहने लगे, "हमारे गांव का जो साहूकार महाजन है, उसका नौकर शरीर त्याग गया है और पुष्पों से अलंकृत विमान में उसकी आत्मा को दरगाह में बड़े सत्कार से लेकर जा रहे हैं, मैंने उस आत्मा को नमस्कार की है।"

श्रद्धा वाले तो समझ गए कि भाई साहिब ने अन्तरात्मा से देख लिया है, लेकिन कुछ लोगों के मन में शंका आ गई और कह दिया कि हमें कैसे विश्वास हो। भाई गोपाल जी कहने लगे, "यदि रहस्य का वचन हमारे मुख से निकल ही गया है तो हम सारी बात बता देते हैं। यह बताने में कोई अन्य मंशा नहीं, अपितु गुरुबाणी की बड़ाई है। भाई गोपाल जी कहने लगे कि जो हमने देखा है वह बता देते हैं, शेष निर्णय आप स्वयं कर लेना।"

उन्होंने बताया कि गांव के महाजन का नौकर प्रतिदिन यहाँ संगत में आता था, लेकिन आज वह नहीं आया, क्योंकि उसे महाजन ने दरिया से पार वाले गांव में चारा लेने हेतु भेज दिया था और वहाँ चारा लेने गए को एक सर्प ने डंक मार दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। वह शरीर सुखमनी साहिब के पाठ का प्रेमी था और जब सर्प ने उसे डंक मारा तो उस समय भी उसकी रसना पर सुखमनी साहिब की बाणी थी।

सामान्य लोगों की यह धारणा है कि सर्पदंश हुए व्यक्ति की मुक्ति नहीं होती, परन्तु सुखमनी साहिब के पाठ करने के फलस्वरूप उसकी आत्मा को बड़े सत्कार से फूलों से अलंकृत विमान में बिठा कर देवगण लेकर जा रहे थे। इसे विमान में बिठा कर स्वर्ग ले जाया जा रहा है; इसका आगे के लिए जन्म-मरण मिट गया है, इसी कारण हमने वाह-वाह, भले-भले कहा है कि सुखमनी साहिब की बाणी ने उसे स्वर्ग में स्थान दिलवा दिया है।

कहते हैं कि २-४ शरीर अभी भी उन में से ऐसे थे जो कहने लगे कि हमें आपकी बात पर विश्वास कैसे हो। भाई गोपाल जी कहने लगे—इसका निर्णय भी अभी ही हो जाएगा।

इतिहास लिखता है कि वहाँ बैठे-बैठे कुछ समय पश्चात ही गांव का महाजन भाई गोपाल जी के पास आया और भरे दीवान

में कहने लगा, "महापुरुष जी! मेरा नौकर जो यहाँ आपके पास सत्संग करने आता था, अभी थोड़ी देर पहले दरिया पार गांव से पशुओं के लिए चारा लेने गया था, वहाँ सर्प के डंक मारने के कारण उसकी मृत्यु हो गई है। उसका पार्थिव शरीर अन्तिम संस्कार करने के लिए लेकर जा रहे हैं।"

महाजन के मुँह से वही सारी व्यथा जो महापुरुष भाई गोपाल जी ने बताई थी, सुनकर सब की नजरें झुक गईं। भाई गोपाल जी कहने लगे, "तेरा नौकर सुखमनी साहिब पढ़ने के फलस्वरूप सीधा स्वर्ग को गया है। इसका जन्म-मरण समाप्त हो गया है।" भाई गोपाल जी ने सारी संगत को सुखमनी साहिब की महिमा बता कर नित्य का कम से कम एक पाठ अवश्य करने की ताकीद की।

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने महा परोपकार करके यह पवित्र बाणी कलयुगी जीवों के कल्याण हेतु रची है। सुखमनी साहिब की बाणी से जो प्रेम करे, गुरु उसका जन्म-मरण तो समाप्त करता ही है, एक अन्य कितनी बड़ी बख्शिश कि इससे पितरों का भी उद्धार हो जाता है। पितर कहते हैं—घर के वह बड़े पूर्वज जो पहले ही धरती से जा चुके हैं। यदि उनके प्रति सुखमनी साहिब की बाणी का पाठ किया जाए तो निरंकार को इन जीवों की आत्मा का भी कल्याण करना पड़ता है, चाहे वह पितरों ने स्वयं अपने जीवन में नाम न भी जपा हो।

कुछ लोग अपने पितरों के उद्धार हेतु, किसी यजमान को बुलाकर भोजन करवाते हैं, लंगर करवाते हैं, यह कुछ सीमा तक अच्छी बात है, लेकिन इससे पूरी प्राप्ति नहीं, यदि बाणी के प्रवाह चलाकर अरदास की जाए तो पढ़ी बाणी के कारण निरंकार को पितरों का उद्धार करना पड़ेगा। यह दास कोई खुद से नहीं कह रहा, गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी इस बात की साक्षी है—

जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि पितरी होइ उधारो॥
सो हरि हरि तुम्ह सद ही जापहु जा का अंतु न पारो॥

(अंग ४९६)

दृढ़ बात है यकीन वाली। घर में से कोई एक भी बंदगी वाला शरीर हो, बाणी से प्रेम करने वाला हो, उसके कारण उसकी २१ कुलें तर सकती हैं। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे–२१ कुलें कौन सी? ७ ननिहाल की, ७ पितृत्व की और ७ ससुराल की। शायद कुछ लोगों के मन में यह आशंका उत्पन्न हो गई हो कि एक के कारण २१ कुलें कैसे तर सकती हैं।

गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय की ऐतिहासिक साखी भी इस बात की साक्षी है। दसम पातशाह गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब भाई सैदा, जो नाव चलाने का कार्य करता था, उसकी प्रेम भरी पुकारें सुनकर भाई दया सिंघ व अपने कुछ अन्य सिंघों के साथ, उसकी भावना पूरी करने के लिए उसे दर्शन दिए।

उसकी नाव में अपने सिंघों सहित बैठ गए और कहा, हमें दूसरे किनारे ले चल।" भाई सैदा प्रेम में भीगा जब नाव को लेकर दूसरे किनारे पहुँचा तो गुरु जी ने मोहरों की थैली उसे देनी चाही, लेकिन भाई सैदे ने विनती की, "सच्चे पातशाह! यह मोहरों की थैली मुझे नहीं चाहिए।" सतिगुरु कहते हैं, "फिर क्या इच्छा है?" भाई सैदा कहने लगा, "मेरा आपका धन्धा एक समान है।"

उसकी यह बात सुनकर सिंघ बड़े हैरान हुए कि यह किस तरह के घटिया वचन कर रहा है, परन्तु भाई सैदा प्रेम में भीगा कहने लगा, "सतिगुरु! मैं लोगों को नाव में बिठाकर जल के सागर में एक किनारे से दूसरे किनारे पहुँचाता हूँ और आप इस भवसागर से लोगों की नाव किनारे लगाते हो। जैसे मैंने आपको इस नाव में बिठा कर इस सागर से पार करवाया है, एक किनारे से दूसरे किनारे पहुँचाया है, आप मेरी जीवन की नैया दूसरे किनारे लगा दो। मेरा भवसागर से उद्धार कर दो।"

गुरु जी उसके यह प्रेम भरे वचन सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और भाई दया सिंघ को कहा, "गिनती करो कि नाव में कितने सिंघ हैं।" भाई दया सिंघ ने गिनती करके बताया, "पातशाह! मुझ सहित २१ हैं।" सतिगुरु कहने लगे, "प्यारे! तूने हमारे २१ सिंघों को नाव में बिठाकर दूसरे किनारे लगाया है, मैंने एक तुझे क्या

पार करना है, तेरी २१ कुलें तार दूँगा।"

यदि प्राचीन इतिहास की ओर ध्यान दें तो एक प्रहलाद था जिसने सुरति लगाई थी भगवान के चरणों से। जब भगवान प्रगट हुए थे खम्बे में से नृसिंह अवतार का रूप धारण करके हिरण्यकश्यप को समाप्त करने के लिए तो भक्त प्रहलाद ने भगवान से कहा था, भगवान! चाहे इसने मुझे बहुत कष्ट दिए, पहाड़ी से धकेला, अग्नि में जलाने की कोशिश की, गर्म खंबे से आलिंगन करने के लिए कहा, पर है तो मेरा पिता ही। कहीं यह नरक में न जाए, इसकी मुक्ति कर देना।" भगवान कहने लगे, "प्रहलाद! तू एक अपने पिता की मुक्ति करने के लिए कह रहा है, तेरी तो २१ कुलों की मुक्ति होगी।"

अर्थात् सुखमनी साहिब की बाणी से प्रेम करने वाला केवल स्वयं ही नहीं पार होता अपितु यदि गुरु कृपा के घर में आ जाए तो उसका परिवार उसकी २१ कुलें भी पार हो सकती हैं।

सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ने से जहाँ लोक के सुख मिलते हैं वहाँ साथ ही परलोक की देनें भी मिलती हैं।

कई देवी-देवता लोक के सुख दे सकते हैं, परन्तु जब भविष्य संवारने की बात आती है, मुक्ति की बात आती है तो वह कहते हैं यह हमारे वश में नहीं। परन्तु सुखमनी साहिब की बाणी दोनों सुख देती है—लोक के भी, परलोक के भी। सुखमनी साहिब की बाणी की चौथी महानता, श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी जन्म-मरण के बंधन भी समाप्त करती है।

४. श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी का एक पाठ प्रतिदिन करने से जन्म-मरण के बंधन भी समाप्त हो जाते हैं। हमारा यह प्रयास तो ही सफल होगा यदि आप जी का गुरु साहिब की कृपा से कम से कम एक पाठ का नियम अवश्य बन जाए। —द्वारा : दास लेखक

पाँचवी विशेषता

''श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी लेख (करम) भी बदलती है।''

हमारे कर्मों के जो लेख हैं, वह हमें भोगने पड़ते हैं। जो बोया है सो काटना तो पड़ेगा ही। यह तो कुदरत का सिद्धांत है।

''जैसा बीजे सो लुणै करम इहु खेत॥''

(अंग ७०६)

अर्थात् यह शरीर कर्मों का खेत है। इसमें जैसा कोई बोता है वही काटता है। कर्मों का उसूल दो बातें समझाता है—पहली बात यह है कि इन्सान बीज बोने में पूर्ण स्वतंत्र है। जमीन कभी इन्सान को यह नहीं कहती कि तू मुझ में गेहूँ न बो और चने बो, अथवा चने न बो और मकई बो। इन्सान बीज बोने हेतु पूर्ण तौर पर स्वतंत्र है, लेकिन एक बार गेहूँ बोने के पश्चात यदि वह आशा रखे कि मकई मिल जाए तो ऐसा उसका सोचना मूर्खता है, अर्थात् जो बोया है वही काटना पड़ता है। जैसे दीवार पर जब गेंद मारें तो वापिस अपने हाथों में आ जाता है, इसी तरह उस संसार में किसी को जो दिया जाता है, वही वापिस अपने पास आ जाता है। अर्थात् किसी को दुख देकर हम अपने लिए दुखों के बीज बोते हैं।

दूसरी बात यह कि जमीन में बोया हुआ बीज, कई गुणा बढ़कर अंकुरित होता है। इसी तरह इन्सान जो भी कुछ बोता है, उससे कई गुणा अधिक होकर मिलता है। अर्थात् किसी को दुख देने से कई गुणा अधिक दुख मिलता है और किसी को सुख देने

से कई गुणा अधिक सुख प्राप्त होता है। भला देकर भला मिलता है। इज्जत देकर इज्जत मिलती है।

दिता लईऐ आपणा अणदिता किछ हथ ना आवै॥

इसलिए यदि आप संसार में सुख, मान-सम्मान चाहते हो तो यह आपको पहले दूसरों को देना पड़ेगा।

इसलिए जो भी कर्म करो यह सोच कर करो कि मैं जो भी करने जा रहा हूँ, उससे कई गुणा होकर मिलना है। किसी को दुख देने से पहले सोच लो कि यह दुख का बीज परिणामस्वरूप दुख के अनेक फल लेकर आएगा। यह दुख सुख तो आपके अपने ही हाथों की खेल है।

कई बार हमें कोई दुख आ जाए, हम पर कोई मुसीबत बन जाए तो सामान्य तौर पर बुद्धिमान लोग, संत-महापुरुष, महात्मा लोगों का यह कहना होता है कि पूर्व जन्म कोई दुख बोया था तो अब इस जन्म में आया है, अब वह बोया हुआ कर्म तो काटना ही पड़ेगा। अर्थात् हमने कभी भी कोई कर्म किया हो, वह कर्म हमारा लेख बन जाता है। इसलिए यदि कोई दुख अथवा कोई मुसीबत आए तो समझ लेना, कहीं कोई बोया था, आज काटना पड़ रहा है। बाणी की भी पंक्तियाँ हैं–

'ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करंमा आपणिआ॥
जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना॥

(अंग ४३३)

बाबा नंद सिंघ जी का वचन है– "सज़ा दोष के बिना नहीं मिलती, दोष चाहे पूर्व जन्म का हो। हम कोई भी कदम उठाएं, वह उठाया गया कदम हमारा कर्म बन जाता है, समय आने पर वह काटना पड़ता है। यह कुदरत का सिद्धांत है।"

बीज बोने और फसल काटने में अंतराल होता है, जैसे आप गेहूँ का बीज बोओ, उसे फलने में कुछ महीने लगेंगे, यह नहीं कि बीज डालो और १५ दिन पश्चात् फसल तैयार। यदि आम का बीज बोओ तो उसे फल लगने में १०-१५ वर्ष लगेंगे। गुलाब का फूल

आज बोओ, १०-१५ दिनों में फूल बन जाता है। इसी तरह हमारे बोए कर्मों का फल समय डालकर मिलता है। कुछ कर्म ऐसे होते हैं, जिनका फल दिनों पश्चात्, कुछ का महीनों पश्चात् और कुछ का वर्षों पश्चात् मिलता है। कई बार हमारे किए कर्मों का फल हमें अगले जन्मों में भोगना पड़ता है। कई बार किसी से कोई ऐसा कर्म हो जाए जिसका फल २०-२५ वर्ष पश्चात् मिलना हो, पर उसकी आयु २-३ साल ही रह गई हो तो उसे यह लेखा अगले जन्म में देना पड़ता है।

कुछ लोग नहीं मानते इस बात को, लेकिन यह कर्म ही हैं जो साथ-साथ चलते हैं। बाबा जी हमें समझाने के लिए एक उदाहरण दिया करते थे। कहते थे, "मान लीजिए दोपहर के दो बजे बिरला-टाटा के घर किसी बच्चे ने जन्म लिया और उधर सड़क पर एक निम्नस्तरीय झोंपड़ी में रहने वाली के घर भी उसी वक्त (दो बजे ही) किसी बच्चे ने जन्म लिया। अब जिस टाटा-बिरला के घर बच्चे ने जन्म लिया, वह सोने के झूले में झूल रहा है, चांदी की बोतल में दूध पी रहा है और जन्म लेते ही बिरला-टाटा की अरबों-खरबों की सम्पत्ति का वारिस भी बन गया। आगे-पीछे नौकर खिलाने हेतु, सेवा करते हेतु। जबकि दूसरी ओर जो बच्चा झोंपड़ी में रहने वाली माँ के घर पैदा हुआ, उसकी माँ के पास उसे लपेटने हेतु कोई अच्छा, साफ कपड़ा भी नहीं, दूध पिलाने के लिए शीशी भी नहीं।

अब स्वयं अनुमान लगा लो कि इन दोनों बच्चों ने जन्म लेते ही कौन से पाप अथवा पुण्य कर लिए। यह सब पूर्व कर्म चले आ रहे हैं।"

आप देखते हो कि कई बार कई बच्चे जन्म से ही अपंग होते हैं। यह सब पिछले पाप कर्म चले आ रहे होते हैं जो भोगने पड़ते हैं।

एक बार कोई बड़े गुरमुख सज्जन कथा कर रहे थे। उनके आगे किसी ने १० दिनों का बच्चा लाकर रख दिया। उस बच्चे की न टाँगें, न बाजू, न हाथ, न आँखें। उन्होंने बताया कि यह जन्म से ही इस तरह है। बताओ इसने क्या पाप किया है? सही मायनों

में दोनों चीजें साथ-साथ चलती हैं– कर्मों का खेत भी और शरीर रूपी खेत भी। उस बच्चे के शरीर रूपी खेत का समय पहले समाप्त हो गया, लेकिन कर्मों का खेत चल रहा था। कोई उसने ऐसे दुष्कर्म किए थे जिसकी सजाएं उसे जन्म से ही भोगनी पड़ रही थी। आँखों से भी अन्धा, हाथों से भी टुण्डा, टाँगों से भी लंगड़ा।

दास ने कुछ विचार कर्मों के बारे में इसलिए व्यक्त किए हैं कि यह कुदरत का सिद्धांत है। कुदरत ने हमारा कोई लिहाज नहीं करना। जाने-अनजाने चाहे कैसे भी जो कर्म हो गया, वह हमारा लेख बन गया। कोई भी कर्म करें, वह लिखा जाता है–शुभ हो चाहे अशुभ। यदि शुभ होगा तो शुभ फल मिल जाएगा। यदि अशुभ होगा तो अशुभ फल मिल जाएगा। किसी ने ठीक ही लिखा है :–

तेरे जीवन का है कर्मों से नाता,
तू ही अपना भाग्य विधाता।
जैसी लिखेगा तू कर्मों की रेखा,
तुझे देना होगा तिल तिल का लेखा।

कुदरत ने अपने नियम पक्के बना रखे हैं, कोई क्षमा नहीं, कोई लिहाज नहीं।

दास को एक महापुरुष की गाथा याद आ गई। कोई महापुरुष थे और उनके शरीर पर छोटा कुष्ट हो गया। जहाँ खारिश करनी, वहाँ से रक्त रिसना। शरीर पर कपड़ा भी नहीं था पहना जाता, जिस कारण साफा-सा लपेट कर रखते थे। महापुरुष का नियम इतना, कमाई इतनी कि एक चौकड़ी पर १०-१० पाठ सुखमनी साहिब के सुनने। कई बार सेवकों ने पूछने की कोशिश भी कि महापुरुष जी! आपकी इतनी कमाई लेकिन यह शरीर पर छोटा कुष्ट? महापुरुष ने बात को टाल देना। एक दिन एक सेवक (समीपवर्ती था) हठ करने लगा कि आपकी इतनी बंदगी होने के बावजूद यह शरीर पर छोटे कुष्ट का कारण क्या है? मेरी श्रद्धा में दरार आ रही है। इसलिए आप अवश्य कृपा करके बताने की कृपालता करो।

महापुरुष कहने लगे कि तू अवश्य पूछना चाहता है तो आ तुझे रहस्य की बात बताएं। उन्होंने बताया, "आज से पाँच जन्म पहले की बात है, मैं गांव की पंचायत का बड़ा सदस्य था। अच्छा-लम्बा, ऊँचा युवा, धन भी बहुत था। हर वक्त दिमाग पर धन-दौलत का, ओहदे का, जवानी का नशा सवार रहता था। हर वक्त हाथ में एक लाठी भी रखनी।

एक दिन अपने चार-पाँच साथियों सहित चले जा रहे थे कि आगे एक कुत्ता आ गया, जिसे खारिश लगी हुई थी। जवानी का, धन का, ओहदे का नशा इतना था कि कुत्ते को जोर से लाठी मार दी। परमात्मा की करनी, कुत्ता वहाँ ही मर गया। जब अगला जन्म मिला तो परमात्मा द्वारा हमें उस कुत्ते को बिना मृत्यु से मारने की सज़ा मिली कि जितनी देर उस कुत्ते ने खारिश भोगनी थी, उतनी देर हमें शरीर पर कुष्ट भोगना पड़ेगा।"

महापुरुष ने बताया, "हमें कुष्ट हो गया। हमने प्रार्थना की तो कष्ट आगे चला गया। (कई बार हमारी प्रार्थनाओं से कष्ट आगे चला जाता है।) हमारा तीसरा जन्म आया। फिर वह कष्ट आया। फिर हमने प्रार्थना की, कष्ट फिर आगे चला गया। चौथा जन्म मिला तो फिर यह तकलीफ आई। फिर प्रार्थना की। कष्ट तो आगे चला गया, पर साथ ही ब्याज भी पड़ता गया। अब हमारा यह पाँचवा जन्म चल रहा है और वह पूर्व जन्मों के लेखे का कष्ट हमारे शरीर पर आया है।"

सेवक कहने लगा– "महापुरुष जी! अब भी प्रार्थना कर तो ताकि कष्ट आगे चला जाए।" महापुरुष कहने लगे, "यह हमारा अन्तिम जन्म है। अब इस जन्म में सारा खाता शून्य करके परमात्मा के चरणों में जाना है।"

यह दास की आँखों देखी गाथा है। कुछ समय बाद उनका शरीर का कुष्ट ठीक हो गया और उन्होंने बिल्कुल महापुरुषों की तरह शरीर त्याग दिया।

कई बार आप भी नोट करते होंगे कि कई बड़े नेमी, धर्मी होते हैं, लेकिन उनके शरीर पर बड़े कष्ट आते हैं। हम सामान्य कह

देते हैं कि यह शरीर इतनी बंदगी करता है, फिर भी इसके शरीर पर इतने कष्ट क्यों आ रहे हैं, इसका कारण यही होता है।

यह महापुरुष की गाथा से अपने लिए सीख लेना कि यदि खारिश पड़े कुत्ते को लाठी मारने के कारण शरीर पर कष्ट भोगना पड़ा, यदि हम किसी को दुख देते हैं तो हमें भी उसका लेखा देना पड़ेगा।

यदि हम किसी को नाजायज दुख देते हैं तो लेखा देना पड़ेगा। यदि कोई बहू सास को नाजायज दुखी करती है तो उसे लेखा देना पड़ेगा। यदि सास बहू को नाजायज दुखी करती है तो उसे भी लेखा देना पड़ेगा।

एक बात याद रखो, हमेशा किसी ओहदे का नशा अथवा धन का नशा गरीब-मार करवाता है। इन नशों में आदमी अंधा हो जाता है। उसे पता ही नहीं लगता कि मैं दुष्कर्म कर रहा हूँ। वह आदमी को आदमी ही नहीं समझता। भूल जाता है कि मुझे भी कोई बनाने वाला है। यहाँ से अपने लिए एक सीख लेना। आपके पास भी ओहदा है, आप भी किसी न किसी छोटे या बड़े दायरे में किसी न किसी ओहदे के मालिक हो। अपने भीतर अवश्य ध्यान दो, कहीं आप भी अपने ओहदे के नशे मे गरीब-मार तो नहीं कर रहे। यदि कर रहे हो तो बच कर रहो। गरीब-मार चाहे किसी इन्सान की हो अथवा पशु-पक्षी की, लेखा देना पड़ेगा। आदमी से पशु-पक्षी की बददुआ पहले लगती है। यदि कोई ओहदे के नशे में गरीब-मार कर रहा है तो बददुआ अवश्य लगेगी, बच कर रहना। किसी की लगी हुई बददुआ कहीं अगले जन्म का वज्र पाप न बन जाए।

कभी आप नोट करो, कुछ लोगों की औलाद बड़ा दुखी करती है। जबकि कुछ लोगों की औलाद बड़ी नेक और सुख देने वाली होती है। यह भी पिछले लेख होते हैं। कोई कह देती है कि मैं पति से दुखी हूँ, कोई अपनी पत्नी से दुखी होता है। कई शरीर हमें धरती पर दुख देते हैं और कई सुख। यह जैसा बोया होता है वही काटते हैं। यह सब पिछला चला आ रहा होता है।

बाणी की पंक्तियाँ भी इस बात का सबूत हैं :–

'मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई॥
पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई॥'

(अंग ७००)

माता, पिता, स्त्री-पुत्र, मित्र, संबंधी सब पूर्व जन्मों के संयोगों के कारण मिले हैं।

अर्थात् अपने ही किए कर्मों के कारण कोई सुख भोग रहा है व कोई दुख, कोई निर्धन है और कोई धनवान, लेकिन सर्व सृष्टि के मालिक गुरु अर्जुन देव जी के मधुरभाषी स्वभाव, दयालु हृदय पर कुर्बान जाएं, जिन्होंने ऐसी मीठी बाणी 'सुखमनी साहिब' प्रदान की, जिसका यदि सहारा ले लें तो यह रेख में मेख भी मार देती है। यह ठीक है लेख मिटते नहीं, लेकिन जो सुखमनी साहिब की बाणी से प्रेम करे, जो सुखमनी साहिब का आँचल पकड़े, गुरु अपनी बख्शिश करके उसके कर्मों को सपने में काट देता है, सूली का कांटा भी कर देता है।

भाई वीर सिंघ जी के भी वचन हैं— "कर्म नहीं मिटते, पर कर्म लिखने वाला लिखाई पर रेखा लगा सकता है। कर्म स्वयं फलदायक नहीं होते, कर्मों का फल प्रदाता ईश्वर है। कर्मों पर ईश्वरीय कृपा हावी होती है।"

यदि कोई सुखमनी साहिब की बाणी का धैर्य एवं भरोसे से आँचल पकड़े, मन गुरु को अर्पण करे, गुरु की संगत के जूते साफ करे तो किए हुए लेख भी मिट सकते हैं। यदि मिटें ही न तो फिर मज़ा ही क्या आया। बस आवश्यकता है गुरु को मनाने की, उसकी बख्शिश लेने का तरीका आना चाहिए। उसकी बख्शिश सब कुछ कर सकती है, सब लेख मिटा सकती है :—

"धरम राइ दरि कागद फारे जन नानक लेखा समझा॥"

(अंग ६६८)

जिस पर गुरु बख्शिश कर दे उसका लेखा पढ़ा नहीं जाता, फाड़ दिया जाता है। कहीं भीतर शंका न पैदा हो जाए, मन को यकीन हो जाए, गुरु नानक साहिब जी के समय की वार्ता इस बात

का सबूत है–

जब गुरु नानक साहिब को चार ठग मिल गए तो उन्होंने कहा, ''हम लुटेरे हैं, आपको लूटना है, पर हमारा एक उसूल है, लूटने से पहले हम जान से खत्म करते हैं।'' दीन-दुनिया के मालिक गुरु नानक पातशाह को उनकी आँख पहचान न सकी। सतिगुरु कहने लगे, ''हमें मंजूर है, पर हमारी एक बात मान लो।'' क्योंकि हमें मृत्यु का डर नहीं बेशक मार दो। पर यदि हमारी मृतक देह यहाँ पड़ी रही तो यहाँ के राजे को खबर मिल गई तो उन्होंने कोई न कोई सबूत ढूंढ कर आपको पकड़ लेना है और आपको भी मृत्युदण्ड मिल सकता है कि आप ने हत्या की है। इसलिए पहले आग का प्रबंध कर लो और हमें मारने के पश्चात् हमारे शरीर का अन्तिम संस्कार कर देना। ठगों ने पूछा– हम जंगल में से आग कहाँ से ढूंढे। तो सतिगुरु जी अपनी उंगली का संकेत करके कहने लगे, ''वह सामने एक चित्ता जल रही है, वहाँ से थोड़ी-सी अग्नि ले आओ।''

दो ठग वहाँ खड़े रहे और दो ठग अग्नि लेने चले गए। वहाँ जाकर क्या देखा कि एक जीवात्मा को यम बुरी तरह मार रहे हैं। देखते ही देखते देवते आ गए पालकी लेकर और यमों को कहने लगे, ''इस जीवात्मा को मारना छोड़ दो, इसे पालकी में बिठाकर सम्मानपूर्वक दरगाह में लेकर जाना है।'' यम कहने लगे, ''इस जीवात्मा ने कोई शुभ कर्म नहीं किया, यमराज का हुक्म है, इसे इसी तरह मार-मार कर, दण्ड देकर, पटक-पटक कर ले जाना है। आप आ गए हो पालकी लेकर, अवश्य आपको कोई गलतफहमी हुई है।''

(एक बात याद रखो, दुष्कर्म करने वालों को यम लेने आते हैं और शुभ कर्म करने वालों को देवते, पर आपने इन दोनों से ऊँचा उठना है। जैसे किला भंगियां वाले माता जी वचन करते थे, 'कलगियां वाले मुझे दर्शन न देना, क्योंकि मेरी इतनी अवस्था नहीं कि मैं तेरे प्रत्यक्ष दर्शन झेल सकूं, पर मुझ पर एक कृपा करना। मेरी विनती है कि अन्तिम समय न यम लेने आएं, न देवते, तू

स्वयं लेने आना। हमारा प्यार भी गुरु से ऐसा हो।)

अब ध्यान दो जो कि हमारा पिता कितना बड़ा है, कितना समर्थ है, उसकी बख्शिश कितनी बड़ी है। देवते कहने लगे, ''आप ठीक कहते हो इस जीवात्मा ने कोई शुभ कर्म नहीं किया, पर परमात्मा का रूप गुरु नानक जो धरती पर आए हैं, उनकी किसी मौज में, अकस्मात उंगली इसकी चित्ता की ओर हो गई, जिस कारण इसके सारे पाप जल गए हैं।''

यह है बख्शिश, इशारा समझना। यह तो गुरु नानक की उंगली की बात है, गुरु नानक के प्यारे चाहें तो एक का क्या, लाखों का लेखा फड़वा सकते हैं। कबीर ने हड़ंबा की शापित धरती पर शरीर त्यागा और नरक खाली करवा दिए थे।

'हरि का भगत मरे हड़ंबे ता सगली सैन तराई॥

राजा जनक ने एक घड़ी का सिमरन दिया नहीं, सिर्फ गिरवी रखा और नरक खाली करवा दिए।

'धन्य धन्य राजा जनक है'

जिन सिमरन कीओ बिबेक।

एक घड़ी के सिमरने पापी तरे अनेक।

अब स्वयं अनुमान लगा लेना कि यदि उसके भक्त, उसके प्यारे लेखे फड़वा सकते हैं तो फिर गुरु नानक, सर्वकला समर्थ, स्वयं निरंकार, क्या नहीं कर सकते।

भाई वीर सिंघ जी के भी वचन हैं, ''समुद्र की भांति सतिगुरु नानक की बख्शिश अनंत है, इस में कितने भी पाप हो, खत्म हो जाते हैं। हमारे पाप कितने भी हों, फिर भी गिनती में हैं, परन्तु गुरु नानक की बख्शिश सीमा से बाहर है, केवल उसका द्वार पाने की आवश्यकता है।

दास गुरु के भरोसे से दावे से यह लिख रहा है कि जिसका सुखमनी साहिब की बाणी से अन्दरुनी लगाव हो गया, जिसने सुखमनी साहिब का दामन भरोसे से, विश्वास से पकड़ लिया,

उसका प्रत्येक बुरा लेख गुरु को मिटाना पड़ेगा। कोई भी बुरा लेख चाहे घर के झगड़े का, चाहे गरीबी का अथवा औलाद का। पक्की बात है, कहीं दास की आँख से देखना, उसके पास कई मार्ग हैं। जैसे जो न्यायाधीश होते हैं, यदि वह चाहें कि किसी को बरी करना है, लेकिन कानून मुताबिक वह बरी न हो सकता हो तो वह कोई न कोई सूक्ष्मता निकाल लेते हैं। इसी तरह गुरु के पास भी हमारे कर्म बदलने के, हमारे लेख मिटाने के कई मार्ग हैं। वह चाहे तो हमारे कर्म सपने में काट सकता है, सूली का कांटा कर सकता है। उसकी बख्शिश हर तरफ बदल सकती है। हमारे कर्मों में कुछ भी लिखा हो, गुरु चाहे तो सब विधियाँ बनाकर बंधन काट सकता है। चाहे लोक की इच्छा हो अथवा परलोक की, जो भी सुखमनी साहिब का आँचल पकड़ेगा, वह खाली नहीं जाएगा।

यदि आपको कोई कह दे कि तेरे कर्मों में २५ साल गरीबी भोगनी लिखी है तो घबराइए मत, डगमगाइए मत, दयानिधि, कृपानिधि बाणी सुखमनी साहिब का सहारा लो। वर्षों की गरीबी महीनों में, महीनों की सप्ताह में, दिनों में, घण्टों में समाप्त की जा सकती है।

यदि किसी के कर्मों में लिखा है कि ३० साल तूने अपने पुत्र से दुखी, अपनी पत्नी से दुखी रहना है, अथवा इतने साल अपने पति से दुखी रहना है, क्योंकि तूने इससे पूर्व जन्म बर्ताव किया है ऐसा। अब यदि नहीं थी होश, पूर्व जन्म कर बैठे ऐसा तो अब भोगने जाएं तो फिर समर्थ गुरु के चरण पकड़ने का आनंद ही क्या आया। यदि सुखमनी साहिब का आँचल पकड़ लें, गुरु इतना प्रेम करता है कि वह आपका बोया वर्षों को महीने का, महीनों को दिनों का, दिनों को घण्टों का रूप देकर काट सकता है। यह ठीक है जो बोया है वह काटना पड़ता है, लेकिन उसकी बख्शिश सब कुछ बदल सकती है। इस पवित्र बाणी का सहारा लेने से सर्व सुखों की प्राप्ति हो जाती है।

एक महापुरुष हुए हैं, संत संगत सिंघ जी कमालीए वाले। वह प्रतिदिन गुरुद्वारे गुरुबाणी की कथा करते थे और जिज्ञासुओं को

सुखमनी साहिब की बाणी से जोड़ते थे। एक गुरुद्वारा है टोभा भाई टेक सिंघ। एक बार महापुरुष कथा करके बाहर निकले तो ज़ालंधर का रहने वाला एक मुसलमान अब्दुल करीम, जिसकी पत्नी का नाम इतिहास में लिखा है नूर भरी, महापुरुषों के चरणों में झुक पड़ा। कहने लगा, "अल्लाह वालो, मेरी भी विनती सुन लो।" महापुरुष कहने लगे, "बता क्या बात है?" उसकी आँखों में अश्रु भर आए। कहने लगा, "मैं जालंधर से आया हूँ। हमारा जालंधर में कारोबार था, लेकिन किस्मत ने साथ नहीं दिया। हमारा दिवाला निकल गया और हम बिल्कुल कंगाल होकर दर-दर भटकते आज यहाँ पहुँचे हैं। चार दिनों से बिल्कुल भूखे हैं, कहीं से रोटी भी नसीब नहीं हुई, कोई रहने की जगह नहीं, सड़कों पर ठोकरें खा रहे हैं।"

महापुरुष के मन में दया आई। वह उन्हें अपने डेरे ले गए। वहाँ भोजन करवाया, अच्छे, साफ वस्त्र पहनने को दिए। इस मुसलमान नवयुवक ने देखा कि कई लोग महापुरुष के पास आकर अपनी मुश्किलें, अपने दुख बताते थे और महापुरुष उन्हें कोई न कोई गुरुबाणी का नियम प्रदान करके भेजते थे।

यह है तो मुसलमान धर्म से संबंधित थे, लेकिन यह सब देखकर उनकी भी श्रद्धा बन गई और महापुरुष को विनती करने लगे, "हमें भी कोई ऐसा कलाम दीजिए, जिससे हमारी निर्धनता दूर हो जाए। हम पर भी रहमत करो।" महापुरुष ने इनकी हालत देखकर, इनकी श्रद्धा व प्रेम देखकर, एक-दो मिनट नेत्र बंद करके कुछ सोचा और कुछ पलों बाद नेत्र खोले। समीप एक सिंघ खड़ा था, उससे कागज़ व पैन लिया। महापुरुष उर्दू जानते थे। उर्दू में सुखमनी साहिब की एक पंक्ति लिख दी–

'प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि॥'

(अंग २६२)

क्योंकि महापुरुष अवस्था देखकर खुराक देते हैं। सोचा, हो सकता है सारी बाणी शुद्ध न पढ़ सके। एक पंक्ति लिखकर कहा, "दिन-रात श्रद्धा से इस पंक्ति को पढ़ते जाना, परमात्मा कृपा-दृष्टि करेंगे।" उसे ऐसी लगन लग गई कि हर वक्त यही पंक्ति जपता

रहा करे। इस पंक्ति के अर्थ समझना कि बाणी पढ़ने से, प्रभु को याद करने से ऋद्धियों-सिद्धियों व नौ निधियों की प्राप्ति होती है। वह दोनों सदस्य संतों के डेरे में ही रहते रहे। वहाँ सेवा करते रहे और साथ यह पंक्ति पढ़ते रहते।

यह पंक्ति पढ़ते अभी तीन दिन ही बीते थे। चौथा दिन हुआ, एक फौजी सूबेदार गुरुद्वारे दर्शन करने आया। यह वहाँ सेवा कर रहे थे। उसकी नजर इन पर पड़ी और पूछ लिया कि आप कौन हैं? इसने अपनी व्यथा बताई कि निर्धन हूँ, दिवाला निकला है, पत्नी साथ है, रहने को कोई ठिकाना नहीं, बहुत दुखी हूँ।

(यहाँ आकर दास सोचता है कि भगवान से डर कर रहना चाहिए। दास ने तो अपने जीवन में निष्कर्ष निकाला है कि किसी पक्ष से ही भी ऊँचे हो जाओ, चाहे धन द्वारा, बंदगी द्वारा अथवा किसी भी गुण द्वारा, ओहदे द्वारा, उस परमेश्वर से हमेशा डर कर रहो। कोई पता नहीं वह किस समय कहाँ पहुँचा दे।

''भेखारी ते राजु करावै राजा ते भेखारी॥''

(अंग १२५२)

किसी पक्ष से भी ऊँचे उठ जाओ, अपना अतीत न भूलो।

वह बड़े भाग्यशाली हैं जो अपना अतीत याद रखते हैं कि मैं क्या था और यदि कोई उसकी बख्शिशें मिलने के बाद उसे भूल कर अभिमानी हो जाए तो फिर परमेश्वर द्वारा परीक्षा आ जाती है।)

फौजी सूबेदार उनकी व्यथा सुनकर कहने लगा, ''मेरे पास बहुत जमीन है और मैं फौज की नौकरी में हूँ। यदि आप मेरी फसलों की रखवाली की जिम्मेवारी ले लो तो मैं आपको रहने के लिए जगह भी दूँगा और ६० रुपए महीना वेतन भी दूँगा।''

(यह १८६६ का वृत्तांत है, ६० रुपए का उस समय बहुत मूल्य था।)

उसने कहा, ''हमें मंजूर है।'' गौर कीजिए, अभी सिर्फ तीन दिन सुखमनी साहिब की केवल एक पंक्ति का जाप किया, जिसने

किस्मत का द्वार खोल दिया। वह दोनों सदस्य जिनके कर्म इतने अशुभ हो गए थे कि जो कुछ पास था, खत्म हो चुका था, घर-बार भी खो गया था, सड़कों पर ठोकरें खा रहे थे, खाने को एक दाना नहीं, सुखमनी साहिब की एक पंक्ति ने तीन दिनों में ही अशुभ कर्म मिटा दिए। कामकाज भी मिल गया और रहने के लिए जगह भी। इसे विधि कहते हैं।

वह मुसलमान भी समझ गया कि जो मुझे महापुरुष ने कलाम लिख कर दिया था, वह उस कलाम ने अपना असर करना शुरु कर दिया है। उधर से वह फौजी सूबेदार भी सोचने लगा कि गुरु नानक का घर कैसा है। मैं आदमी ढूँढता फिर रहा था, यह काम ढूँढ रहा था और गुरु नानक ने अपनी दहलीज पर दोनों का मेल करवा दिया है।

सद्‌पुरुषों से आज्ञा लेकर दोनों सदस्य फौजी सूबेदार के साथ उसके गांव चले गए। वहाँ जाकर बड़ी मेहनत व ईमानदारी से काम करता रहा। अब यहाँ एक बारीकी है। हमारे जीवन में सामान्य तौर पर यह कमी आ जाती है–

'दाति पिआरी विसरिआ दातारा॥'

(अंग ६७६)

यह मुसलमान जहाँ काम करता था, वहाँ उस पंक्ति का जाप भी नहीं छोड़ा। साथ-साथ कृषिपालन की निगरानी करना और साथ ही हर वक्त वह पंक्ति सारा दिन पढ़ते रहना। उस पंक्ति के कारण जमीनों में फसल भी दुगुनी हो गई। दास विश्वास से लिख रहा है। आपकी भी यदि किसी की फसलें हों, कृषिपालन का कार्य हो, यदि अपने घर सुखमनी साहिब का पाठ आगे जल रख कर करके, वह जल कृषि में छिड़कते रहे, अवश्य फसल दुगुनी होगी। यह बाणी में बख्शिश है। बात तो धीरज की है, विश्वास की है।

फौजी सूबेदार फसल देखकर इतना प्रसन्न हुआ कि उनका वेतन बढ़ाकर ७० रुपए कर दिया। उसने यह पंक्ति पढ़नी नहीं छोड़ी। जैसे-जैसे यह पंक्ति पढ़ता जाए, तरक्की उसके कदम

चूमती जाए। फौजी सूबेदार बहुत सारी जमीनों का मालिक था। जमीनें ठेके पर भी देता था। कहते हैं, अगले साल फौजी सूबेदार ने मुसलमान को जमीन ठेके पर दे दी और कहा कि तू मुझे ठेका दे देना, शेष जो बच जाए वह तेरा।

उस मुसलमान ने उस ठेके की जमीन पर कृषिपालन शुरु कर दिया। सुखमनी साहिब की पंक्ति के जाप की ऐसी बख्शिश की मिट्टी को हाथ डाले तो सोना बन जाए। २-४ सालों में ही कई जमीनों का मालिक बन गया। सारे गांव में इसका बहुत मान-सम्मान हो गया। गांव वालों ने इसे गांव का नंबरदार बना दिया। इतना सब कुछ धन-दौलत भी, मान-सम्मान भी मिलने के बावजूद इसने पंक्ति का जाप नहीं छोड़ा।

कहते हैं कि तकरीबन दस साल बाद १६०६ में यह मुसलमान अपनी पत्नी को लेकर फिर उन महापुरुषों के पास गया। मुलाकात हुई, नमस्कार की और कहा, ''महापुरुषो! मैं वही अब्दुल करीम खां हूँ जिसे दस साल पहले कंगाली की हालत में आप जी ने एक कलाम दिया था, उस कलाम के जाप के कारण आज मैं ४ मुरब्बे जमीन का मालिक हूँ और सारे गांव का नंबरदार हूँ। मेरे पास अब अपना घर भी बन गया है, पुत्र भी मेरे आंगन में खेलते हैं। आपके दिए हुए उस कलाम के कारण मुझे हर सांसारिक देन प्राप्त हुई है, इस लोक के सारे सुख प्राप्त हो गए हैं। अब कृपा करो, कोई ऐसा कलाम दीजिए जिससे मेरा परलोक भी सुधर जाए।'' महापुरुष ने इससे अगली पंक्ति लिख कर दी–

''प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि॥''

(अंग २६२)

और कहा सारा दिन पहली पंक्ति का जाप किया कर और रात को घण्टा दो घण्टे दूसरी पंक्ति पढ़ा कर, तेरा भविष्य भी संवर जाएगा। उस मुसलमान को इन पंक्तियों के फलस्वरूप सुखमनी साहिब से इतना प्रेम हो गया, इतनी श्रद्धा बन गई कि कुछ समय पश्चात् उसने उर्दू का सुखमनी साहिब का गुटका लाकर ऊँचे शुद्ध स्थान पर रख दिया और धीरे-धीरे पूरा पाठ सीख लिया। स्वयं भी,

पत्नी भी, बच्चे भी इस महान बाणी का नियम से पाठ करते रहे और अपना लोक-परलोक संवार लिया।

देखो! एक मुसलमान ने भी यदि इस रहमतों भरी दरगाही बाणी का सहारा लिया तो उसके भी शुभ कर्म बन गए, लोक-परलोक सुखी सुन्दर हो गया। कोई पढ़े तो इस बाणी को धैर्य से, यह कर्म भी बदलती है।

हमारे अमृतसर नगर का ही एक सत्संगी है, कोई बड़ा साहूकार नहीं। **Hand to Mouth** वाली बात है। बस कोई छोटा-सा कार्य करता है और कार्य भी कोई पक्का नहीं। बाल-बच्चे वाला है। वह १८ हजार रुपए का ऋणी हो गया। कई लोग छोटी-छोटी स्कीमें रखकर कमेटी डालते हैं। किसी शरीर ने ६ हजार की एक स्कीम शुरु की, जिस में जिसके नाम की पर्ची निकल आए उसे छः हजार मिल जाता है और आगे अन्य किश्त भी नहीं थी भरनी पड़ती। उस सत्संगी ने २०० रुपए महीने की यह तीन कमेटियां डाल लीं कि कर्जा उतर जाएगा। पहली कमेटी किसी अन्य की निकली, पर अगले महीने जब पर्ची डाली गई तो उस सत्संगी, जिसका नाम सुरिन्द्रपाल सिंघ है, की निकल आई। सभी ने सोचा किस्मत साथ दे गई, ६ हज़ार रुपए मिल गए, कर्जा कम हो गया। अगले महीने फिर सुरिन्द्रपाल सिंघ की पर्ची निकली। दो महीनों में १२००० रुपए मिल गए, सभी बड़े हैरान हुए कि यह क्या जादू है। लेकिन प्यारो! हैरानी की हद तो उस समय हो गई जब अगले महीने फिर उसके नाम की पर्ची निकल आई। १८००० रुपए मिलने से सारा कर्जा भी उतर गया और आगे से किश्तें भी देनी बंद हो गई। संगी था, हमने पूछ लिया कि बता यह सब कैसे हुआ।

उसने स्वयं वचन सुनाया और कहने लगा कि १८००० रुपए का ऋणी हो गया था। जब मैंने कर्जा उतारने की सोच से कमेटियां डालीं तो गुरु ग्रंथ साहिब जी के चरणों में खड़े होकर अरदास की कि सच्चे पातशाह! मैं संगत में सुनता हूँ कि सुखमनी साहिब की बाणी हर जगह सहायक होती है, मैं रोजाना पाँच पाठ सुखमनी साहिब के करूँगा। कृपा करना मेरे नंबर की पर्चियां पहले निकल

आएं ताकि मेरा कर्जा उतर जाए। यह सब सुखमनी साहिब की बरकतें हैं। जो पाँच पाठ सुखमनी साहिब की घर सैंची लगाई है उसके फलस्वरुप ही मेरा ४ महीनों में ही १८००० रुपए का कर्जा उतर गया है। परमेश्वर ने किसी तरीके विधि बनानी होती है, स्वयं प्रत्यक्ष सामने आकर यह तो कहना नहीं यह ले नोटों के बंडल।

उसने विधि ही बनानी होती है किसी तरीके, किसी तरह बना देता है। स्वयं इशारा समझ लेना। कर्मों की गति मुताबिक कोई अमीर है, कोई गरीब है। अब अमीर का तो निर्वाह हो रहा है, लेकिन गरीब क्या करे। यदि गरीब सुखमनी साहिब का सहारा ले ले, यदि उसके कर्मों में लिखा है दो साल गरीबी भोगनी, वह गरीबी दो साल की जगह २ महीने, दो सप्ताह, २ घण्टों में भी खत्म हो सकती है। ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ पीछे लगीं रहेंगी।

सुखमनी साहिब की बाणी इतनी बख्शिश वाली है कि हमारे सब तरह के अशुभ कर्म मिटा देती है। यदि कोई देन किसी के कर्मों में नहीं भी लिखी, यदि कोई सुखमनी साहिब का भरोसे से आँचल पकड़ ले, दास बाणी के भरोसे से लिख रहा है कि कभी खाली नहीं जाएगा, दामन अवश्य भरेगा।

परमात्मा चार प्रकार से देनें देता है। पहली प्रकार की तो जो देन है वह है कर्मों के कारण। आप कभी नोट करो, जो हमारे कर्मो में लिखा है, वह आटोमैटिकली समयानुसार मिलता रहता है। कर्मो में जो सुख लिखा है, समयानुसार विधि बनती है, प्राप्त हो जाता है। यह हकीकत है।

हमारे अमृतसर शहर का ही एक परिवार है जिनकी तीन बेटियां हैं। गरीबी इतनी कि एक समय का भोजन पकता है और दूसरे समय बिना भोजन। यहाँ तक दयनीय हालत कि कई बार उस परिवार ने भुने हुए चने खा कर और पानी पीकर भी निर्वाह करना। दो रूपए के लाने और एक समय की सारे परिवार की संतुष्टि हो जाना। इस प्रकार दिन बिताने। यह भी परमात्मा की कुदरत है।

(ऐसे ही नहीं महापुरुष कहते कि सांसारिक पक्ष से हमेशा

अपने से निम्न वालों को देख, तो ही तेरे भीतर सहज आएगा। यदि अपने से ऊँचे की ओर देखेगा तो परेशान ही रहेगा कि वह कहाँ पहुँच गया है और मैं कहाँ हूँ। यदि अपना मकान है तो जो किराए पर रहते हैं, उनकी ओर देख। यदि किराए पर रहते हो तो उनकी ओर देख लो जिनके पास एक ही कमरा है। जिसके पास एक कमरा है वह उनकी ओर देख ले जो सड़क पर ही, रिक्शे पर ही टाँगें फैला कर रात बिताते हैं।

सांसारिक पक्ष से यदि अपने से निम्न की ओर देखोगे, भीतर सहज रहेगा। धार्मिक पक्ष द्वारा अपने से ऊँचे को देखो, अहंकार से बचे रहोगे। यदि कोई ४ बजे सुबह उठता है तो वह ७ बजे उठने वाले की तरफ दृष्टि करेगा तो भीतर अहंकार जन्म ले लेगा और यदि कोई ४ बजे उठने वाला २ बजे उठने वाले की तरफ दृष्टि करेगा तो अहंकार टूटेगा। जहाँ समझ नहीं वहाँ लेखा उलटा है।)

विचार चल रहा था कि जो कर्मों में लिखा होता है, वह समयानुसार आटोमैटिकली मिलता रहता है। वह परिवार अत्यंत गरीबी घर में, तीन बेटियां, जो मझली बेटी थी २२ साल उसकी उम्र, सौन्दर्य परमात्मा ने दिया था। दिल्ली का कोई करोड़पति परिवार था, उन्होंने कहीं उस लड़की को देखा, पसंद आ गई। एक दिन बात की। अगले दिन ही लड़की को चुनरी पहनाई, उसी समय लावें हुई और डोली ले गए। अब ध्यान देना, कर्मों की खेल क्या है। २-४ दिन पहले जो लड़की अत्यंत गरीबी में रह रही थी, करोड़पतियों के घर शादी हो गई जहाँ ऐ.सी. कमरे, गाड़ियां, नौकर-चाकर सब सुख-सुविधाएं। इसका मतलब उसके कर्मों में यह सब कुछ था; जो समय पश्चात् मिल गया।

दूसरा तरीका है परमात्मा देन देता है बख्शिश करके। कोई देन कर्मों में नहीं, पर जब आप बाणी पढ़कर अरदास करते हो तो सतिगुरु बख्शिश करता है, दामन भरता है। जैसे माता सुलखनी के कर्मों में औलाद लिखी नहीं थी, उसके विनती करने पर सतिगुरु ने बख्शिश की।

तीसरा तरीका है, गुरु-परमात्मा कई बार मौज में आ कर, कृपा करके, खुश होकर स्वयं कहता है, मांग क्या मांगता है। सेवा से प्रसन्न होकर स्वयं पूछता है कि तुझे क्या चाहिए? जैसे भाई आदम की सेवा से खुश होकर स्वयं संदेश भेजा कि मांग क्या मांगता है, किस मनोरथ से सेवा की है?

चौथा तरीका है परमात्मा हाथ में देन पकड़ कर बैठा होता है कि मेरा भक्त भावना बनाए और मैं इसे देन दूँ।

सुखमनी साहिब की बाणी की यह पाँचवी महानता है कि यह हमारे कर्म भी बदलती है। जो देन हमारे कर्मों में लिखी भी नहीं होती, यदि कोई सुखमनी साहिब की बाणी का स्वयं पर प्रतिबंध लगाकर, नित्यनियम के अलावा पाठ करे तो बख्शिश की प्राप्ति होती है।

एक गाथा भी है कि किसी के घर अपाहिज लड़का पैदा हो गया। जब १०-१२ साल की उसकी उम्र हुई तो एक दिन उसने अपने माता-पिता को अपने किसी रिश्तेदार से यह बातें करते सुन लिया कि हमारे घर यह अपाहिज लड़का पैदा हो गया है। हमें इसकी संभाल करनी पड़ती है, देखभाल करनी पड़ती है, बैठे-बैठे को भोजन देना पड़ता है। वह बच्चा आध्यात्मिक रुचि वाला था, कहने लगा, ''मैं तो परमात्मा का दिया खाता हूँ, मेरी देखभाल करने वाला तो वह परमात्मा है, आप नहीं।''

घरवालों को उसकी यह बात सुनकर बड़ा क्रोध आया। कहने लगे कि इसे जंगल में छोड़ आते हैं। स्वयं इसे पता चल जाएगा कि कौन इसकी संभाल करने वाला है, कौन इसे भोजन खिलाता है। उस १०-१२ साल के अपाहिज बच्चे से तंग तो वह आगे ही थे, उसकी ऐसी बात सुनकर उसे जंगल में छोड़ आए। भगवान का भक्त था। कोई पूर्व संस्कार थे। जंगल में ही उस बच्चे ने चौकड़ी मार ली और प्रभु के चरणों में लीन हो गया।

एक दिन उधर से नारदमुनि गुजरे। एक अपाहिज बच्चे को इस तरह भगवान के चरणों में लीन देखा तो कहने लगे, ''मेरा मन करता है तुझे कुछ देने को।''

अब जो बात दास स्पष्ट करना चाहता है गौर कीजिए—वह बालक कहने लगा, ''अपनी तरफ से दोगे कि मेरे कर्मों में से?'' नारदमुनि कहने लगे, ''दूँगा तो तेरे कर्मों में से ही।'' वह बालक कहने लगा, ''जो मेरे कर्मों में है, वह तो मुझे अपने आप मिल ही जाना है। यदि आप खुद से कुछ दे सकते हो तो दीजिए।'' नारदमुनि का यही जवाब था, जो भी देंगे, देना तो तेरे कर्मों में से ही है; खुद से कुछ नहीं दे सकते। अर्थात् जो कुछ कर्मों में नहीं लिखा वह नहीं मिल सकता। वही मिलना है जो कर्मों में लिखा है, लेकिन गुरु अर्जुन साहिब को जितना धन्य कहें थोड़ा है। इतनी बख्शिश भरी है सुखमनी साहिब की बाणी में कि जो देन कर्मों में नहीं भी लिखी, वह भी प्राप्त होती है। आवश्यकता है धैर्य से, भरोसे से सुखमनी साहिब का आँचल पकड़ने की। जो सुखमनी साहिब की बाणी से प्रेम करे, गुरु अपनी बख्शिश करके उसके कर्मों पर लकीर लगा देता है।

बाबा ईशर सिंघ जी को किसी ने प्रश्न किया था– ''कर्म बड़े हैं कि भक्ति?'' बाबा जी कहने लगे, ''जिस गुरु नानक ने यह दोनों चीजें बनाई हैं, उसके चरण पकड़ लो, वह बड़ा है, वह सबकुछ कर सकता है। वह कर्म भी बदल सकता है, जिधर भी कमी हो वह पूरी कर सकता है।''

सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ने से कितनों पर बख्शिशें हुई हैं, कितनों के दामन भरे हैं, कितनों के कर्म बदले हैं, लिखने लगें तो किताबें भर जाएं।

एक महापुरुष हुए हैं भाई राम किशन जी। उन्होंने अपने स्थान पर कीर्त्तन की बौछारें लगाईं। गुरु घर के कीर्त्तनीए, भाई भाग सिंघ ने भी कीर्त्तन की सेवा की। समाप्ति के उपरांत सारी संगत चली गई, लेकिन भाई भाग सिंघ और उनकी पत्नी न गए। महापुरुष ने न जाने का कारण पूछा तो समीप बैठे भाई करम दास ने विनती की कि बाबा जी! १८ साल हो गए हैं इनकी शादी को, पर गोद खाली है। महापुरुष मुस्करा कर कहने लगे, ''क्या! गुरु के कीर्त्तनीए की गोद खाली, क्या! गुरु के कीर्त्तनीए की संतान नहीं।

कुछ समय रुक कर बोले गुरु के कीर्त्तनीए की जड़ हरी। जड़ हरी!"

महापुरुषों ने जल का कटोरा मंगवाया। जहाँ महापुरुषों का स्थान था, वहाँ ही ऊपर जाकर गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश था। संगत जिन सीढ़ियों द्वारा ऊपर दर्शन करने जाती थीं, उनकी चरण-धूलि लेकर उस जल में डाल दी और वह जल भाग सिंघ की पत्नी को पीने के लिए दिया और साथ वचन किया कि रोज एक पाठ सुखमनी साहिब का नियम से करना है। समय बीतने पर भाई भाग सिंघ के गृह में पुत्र की देन प्राप्त हुई। देख लो सुखमनी साहिब की बाणी की बरकत! किधर १८ साल से औलाद नहीं थी, सुखमनी साहिब का सहारा लिया, साल भर में ही पुत्र की प्राप्ति हो गई। यह पुत्र रागी हीरा सिंघ बने। बड़ी कौम की सेवा की।

एक बात याद रखना। गुरु के सिक्ख क़ी रेखाएं हाथों पर अथवा माथे पर नहीं हैं। बाबा नंद सिंघ जी के सेवादार हुए हैं, कवि मधुसूदन सिंघ जी। एक बार वह दिल्ली में किसी मित्र के घर गए जो कि दिल्ली का बहुत बड़ा ज्योतिषी है। बातों-बातों में कवि जी अपना हाथ अपने ज्योतिषी मित्र के आगे करके कहने लगे, "हमारा भी हाथ देखकर बताओ क्या लिखा है?"

कहते हैं वह ज्योतिषी जो दिल्ली का बहुत प्रसिद्ध प्रतिष्ठित बड़ा ज्योतिषी था, उसने कवि जी का हाथ अपने दोनों हाथों में पकड़ लिया और आँखों में वैरागमयी अश्रु आ गए। कहने लगा, "कवि जी, सिक्ख की रेखाएं हाथों पर नहीं हैं।" कवि जी हैरान होकर कहने लगे, "क्या सिक्ख की रेखाएं प्रभु ने कहीं अलग लिखी हैं?"

वह ज्योतिषी कवि जी को गुरु ग्रंथ साहिब जी के कमरे में ले गया और कहने लगा, "जब गुरु का सिक्ख प्रभातकाल (अमृत वेले) उठकर, स्नान करके नित्यनियम द्वारा, जपुजी साहिब द्वारा, सुखमनी साहिब की बाणी द्वारा अथवा कैसे भी गुरु के चरणों में लीन होने के पश्चात अरदास करता है कि सतिगुरु! आज का दिन सुख का बिताना तो उस दिन की जितनी अशुभ रेखाएं होती हैं,

वह गुरु ग्रंथ साहिब जी के चरणों में आ जाती हैं।"

दास गुरु के भरोसे एवं बाणी के भरोसे से लिख रहा है कि जो सुखमनी साहिब जी की बाणी का नेमी है, सुखमनी साहिब की बाणी से श्रद्धा से प्रेम करता है, जिसकी सुखमनी साहिब की बाणी खुराक बन गई है, उसकी अशुभ रेखाएं गुरु अपने चरणों में ले लेता है।

कवि जी ज्योतिषी की यह बात सुन कर बड़े हैरान होकर पूछने लगे कि आप इतने बड़े ज्योतिषी होने के बावजूद यह बात कह रहे हो और फिर आप यह धंधा क्यों कर रहे हो? वह ज्योतिषी कहने लगा कि दिल्ली के लोगों के पास धन बहुत है, मैं तो केवल धन लूटने हेतु यह धंधा कर रहा हूँ, क्योंकि लोगों में अंधविश्वास बहुत है और मैं क्या, बहुत सारे पण्डित-ज्योतिषी इस बात का फायदा उठाते हैं।

कुछ समय पहले की बात है, दास को अमृतसर में एक सिक्ख नवयुवक मिला और कहने लगा, "मेरे कारोबार में बहुत मंदा है।" दास उसे अभी कुछ कहने ही लगा था कि वह पहले ही बोल पड़ा, "पर अब ठीक हो जाना है।" दास ने कहा कि तुझे कैसे पता कि अब ठीक हो जाना है? वह कहते कहा, "मैं एक सियाने (पण्डित) के पास गया था, मैंने उसे बताया था कि मेरे कारोबार में बहुत मंदा है, तो उसने मेरे माथे की रेखाएं देखकर बताया कि तुझ से सूर्य देवता थोड़ा-सा नाराज़ हैं, इसी कारण तेरे कारोबार में मंदा है। उसने मुझे कहा है कि यदि तू ७ दिन पानी में सिंदूर डालकर सूर्य देवता को पानी दे तो तेरा कारोबार ठीक हो जाएगा।

दास ने उसकी यह सारी बात सुनकर कहा, "इस बारे में अभी मैंने तुझे कुछ नहीं कहना। ७ दिन बाद ही देखेंगे।"

उसी नवयुवक का दास से कोई २-३ महीने बाद अचानक मेल हो गया। दास ने सहज-स्वभाव ही प्यार से जब हालचाल पूछा तो वह कहने लगा, "आज से २-३ महीने पहले जब आप से मेरा मेल हुआ था तो मुझ पर ७० हजार का कर्जा था, अब सवा लाख का कर्जा मेरे सिर पर है।" दास ने कहा, "तूने ७ दिन जो सिंदूर

पानी में डालकर, सूर्य देवता को दिया था, क्या उससे बात नहीं बनी? क्या सूर्य देवता माना नहीं?" वह कहने लगा, "७ दिन में सिंदूर डालकर पानी तो सूर्य देवता को देता रहा था, पर कोई बात साकार नहीं हुई।"

दास ने कहा, "यदि तू गुरु की नाव छोड़कर किसी अन्य तरफ न जाता, अपने दुख समय, मुसीबत समय, सुखमनी साहिब की बाणी पढ़कर गुरु की ओट ली होती तो तेरा यह कर्जा बढ़ने की बजाय कम हुआ होता। हो सकता है, खत्म ही हो गया होता, पर अफसोस! तूने सुखमनी साहिब की बाणी का सहारा न लेकर दूसरे दरवाजे खटखटाए।"

यह सुखमनी साहिब जी की बाणी की पाँचवी महानता, इहलोक व परलोक के कर्म बदलने में भी समर्थ है। गुरु कृपा करे, सुखमनी साहिब की यह महानता पढ़कर हमारे भीतर विश्वास पैदा हो जाए कि सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ने से हमारे अशुभ कर्म मिट सकते हैं और जो देन हमारे कर्मों में नहीं भी लिखी हुई, यदि सुखमनी साहिब की बाणी के प्रवाह चला कर अरदास करें तो गुरु बख्शिशों वाले खाते में से हमारा दामन भर सकता है।

जो भी कोई श्रद्धा, भावना से सुखमनी साहिब की बाणी का सहारा लेगा, उसके कर्मों को अवश्य धक्का लग जाएगा। वह गुरु से अपने अशुभ कर्म मिटा लेगा। युक्ति, मर्यादा व श्रद्धा से सुखमनी साहिब का आँचल पकड़ने वालों के दामन भरते हैं।

५. श्री सुखमनी साहिब जी की पाँचवी विशेषता पढ़ कर यह पता चलता है कि यह बाणी धैर्य से पढ़ने से व्यक्ति के अशुभ से अशुभ (लेख) कर्म (गरीबी, कठिन समय) भी बदल देती है। यदि आप जी का गुरु साहिब जी की कृपा से कम-से कम एक पाठ श्री सुखमनी साहिब का नियम अवश्य बन जाए तो हमारा यह प्रयास सफल होगा। —द्वारा : दास लेखक

छठी विशेषता

"श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी किसी दूसरे शरीर के मन के ख्यालों को भी बदलती है।"

(असुर वृत्ति के ख्यालों को देव वृत्ति के ख्याल वाला बनाती है।)

हमारा शरीर पाँच तत्वों का बना है–धरती, आकाश, हवा, पानी एवं अग्नि। सुखमनी साहिब की बाणी में इतनी शक्ति है कि यह पाँच तत्वों को भी बदलने की क्षमता रखती है। आप कभी नोट करो, आपके परिवार में से किसी शरीर का स्वभाव बड़ा गर्म होता है। किसी के तीन पुत्र हों, कई बार उन में से एक का स्वभाव गर्म होगा। कई महिलाओं के पति का स्वभाव बहुत गर्म होता है। कई कह देते हैं, हमारी बहू बड़ी तेज है। इसका कारण यह होता है कि जिस आदमी का स्वभाव बहुत गर्म होता है, उसके भीतर अग्नि तत्व ज्यादा होता है।

महापुरुष वचन करते थे कि शेर कितना खूंखार होता है। झपट कर पड़ता है, क्योंकि शेर के भीतर अग्नि तत्व ज्यादा है। जबकि बकरी बहुत कोमल स्वभाव की होती है, क्योंकि बकरी के अन्दर धरती व मिट्टी का तत्व ज्यादा है। इसलिए उसके अन्दर शीतलता है, सहज है।

प्रत्येक इन्सान की जिन्दगी में उसका स्वभाव सामान्य तौर पर पाँच तत्वों पर निर्भर करता है। श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी में इतनी शक्ति हैं कि यह तत्वों को भी बदल सकती है। महापुरुष बाबा नंद सिंघ जी का वचन है कि बच्चा जन्म ले, चाहे उसकी

दादी, चाहे उसका दादा, चाहे माता-पिता अथवा परिवार का कोई भी सदस्य, बच्चा चाहे सोया हो, खेलता हो, दूध पीता हो, प्रतिदिन एक पाठ सुखमनी साहिब का एक साल बच्चे को बोलकर श्रवण कराए, सुखमनी साहिब की बाणी में इतनी शक्ति है कि वह बच्चा कभी स्वेच्छाचारी नहीं निकलेगा।

एक महापुरुष हुए हैं, संत वसाखा सिंघ जी। एक बार कथा कर रहे थे, बहुत संगत मौजूद थी। एक बच्चा बहुत ही शरारतें करके संगत में सभी की सुरति तोड़ रहा था। कभी मंच पर चढ़ जाए, कभी संगत में किसी से शरारत करे, कभी किसी से, कभी किसी को चिकोटी क़ाटे, कभी सिर से कपड़ा खींच दे। महापुरुषों का ध्यान भी इस तरफ गया। अब जब वह मंच पर चढ़ा तो महापुरुष ने उसकी बांह पकड़ ली और विचार रोक कर कहने लगे, ''इस बच्चे की माँ कौन है, उठ कर खड़ी हो जाए।''

बच्चे की माँ उठकर महापुरुष के पास गई। महापुरुष माता से पूछने लगे, ''यदि पेड़ को कड़वा फल लग जाए तो कसूर पेड़ का है या फल का?'' माता कहने लगी, ''जी पेड़ का।'' महापुरुष कहने लगे, ''यदि तेरे घर यह नालायक पुत्र पैदा हुआ है तो यह तेरा कसूर है।'' माता कहने लगी, ''मैं तो खुद इस बच्चे से बहुत दुखी हूँ। मेरे तो दिल में से यहाँ तक निकलता है कि ऐसी औलाद होने से तो अच्छा था, मेरे घर औलाद होती ही न।''

बाबा जी अंतर्ध्यान हो गए। कुछ देर बाद कहने लगे, ''सच बता, इस बच्चे के जन्म से पूर्व तू क्या करती रही है?'' वह कहने लगी, ''मेरे घर औलाद नहीं थी होती, मुझे किसी ने कहा, श्मशान में जाकर आधी रात दीया जगाया कर, तेरे घर औलाद हो जाएगी।''

महापुरुष कहने लगे, ''श्मशानों में भूत-प्रेत बसते हैं और उन्होंने तो फिर अपने जैसी ही औलाद देनी थी। यदि गुरु नानक के घर में से औलाद मांगती तो देवताओं की सभा में से देन गोद में आती। तू अपने गुरु को छोड़कर दूसरी तरफ चली गई तो फिर ऐसी औलाद ही मिलनी थी।''

(यहाँ से अपने लिए भी सीख लेना। हम भी कई बार गुरु के द्वार से देन लेट हो जाए तो तुरंत ही ताबीजों वालों का दरवाजा खटखटा लेते हैं। अपने गुरु पर भरोसा रखो। सुखमनी साहिब की बाणी के प्रवाह चलाकर गुरु नानक के द्वार से देन मांगो तो परमात्मा कोई गुरुमुख आत्मा भेजता है।)

महापुरुषों के वचन सुनकर उस बच्चे की माता रो पड़ी और कहने लगी, "मुझ से बहुत बड़ी भूल हो गई जो मैं पुत्र के मोह में गुरु को छोड़ कर श्मशानों की पूजा करने लगी। अब कोई मार्ग बताओ। महापुरुष कहने लगे, "एक पाठ सुखमनी साहिब का इस बच्चे को गोद में लेकर सुनाया कर और साथ अमृत पिलाया कर। गुरु की कृपा से, सुखमनी साहिब की बाणी की बरकत से इस बच्चे की बुद्धि बदल जाएगी। इसके दैत्यों वाले कर्म बदलकर देवताओं वाले बन जाएंगे।"

दास बाणी के भरोसे से यह दावे से लिख रहा है कि यदि किसी महिला के पति का अथवा घर में किसी भी सदस्य का स्वभाव गर्म हो तो प्रतिदिन कटोरी में जल रखकर सुखमनी साहिब का पाठ करके वह जल उस शरीर को पिलाते जाओ। जिसका स्वभाव गर्म है, अवश्य उसके स्वभाव में परिवर्तन आएगा। यह सुखमनी साहिब की बाणी में शक्ति है, यह तत्वों को बदलाती है।

यह सुखमनी साहिब जी की बाणी की छठी विशेषता कि यह किसी दूसरे शरीर के मन के ख्यालों को भी बदलती है अथवा इसे यूं भी कह लें कि असुर वृत्ति के ख्यालों को बदल कर देव वृत्ति के ख्याल बनाती है।

देव वृत्ति होती है—देवताओं वाले गुण—दया, धीरज, सत्य, संतोष, क्षमा, किसी का संवार कर मन को खुशी मिलनी।

असुर वृत्ति होती है— राक्षसों वाले गुण। इसे कौआ वृत्ति भी कहा जाता है। कौए को भला पक्षी नहीं गिना जाता। यह बहुत चालाक, चुस्त, स्वार्थी, किसी का हक छीनकर खाने वाला एवं दूसरों को दुख देकर खुश होने वाला है। आप कभी नोट करो कि किसी गाय, भैंस अथवा गधे की पीठ पर कोई जख्म हो तो कौआ

उसके ज़ख्म पर ठूंगे मारता है, उसकी आंतड़ियों में चोंचें मारता है। उसे तकलीफ होती है तो कौआ उसकी आंतड़ियां खा कर खुश होता है। इसी तरह कुछ क्या, बहुत सारे लोग जिन्हें किसी सद्‌पुरुष की संगत प्राप्त नहीं, बाणी से नहीं जुड़े, कौआ वृत्ति के होते हैं चालाक-चुस्त, स्वार्थी, दूसरे का हक छीनकर खाने वाले, दूसरों का दुख-तकलीफ देकर बड़े खुश होते हैं।

गुस्सा मत करना, दुनिया भरी पड़ी है, ऐसी वृत्ति के लोगों से। रिश्तेदारी में, आस-पड़ोस में किसी से वैमनस्य हो अथवा किसी कारण से आपस में झगड़ा हो जाए, यही होता है कि दूसरे को नीचे कैसे लगाना है, दूसरे को नीचे कैसे दिखाना है, दूसरे को दुख कैसे देना है। ऐसी वृत्ति वाला आदमी हर प्रकार का प्रयास करता है, सरकारे दरबारे भी क्या किसी तरीके उसे दुख दिया जाए चाहे उसके घर छापा मरवा कर अथवा आदमी भेज कर या किसी तरह अपमानित करके या नुक्सान पहुँचा कर और फिर ऐसा करने के पश्चात् उसे दुख-तकलीफ पहुँचा कर असुर वृत्ति वाले को खुशी मिलती है।

गुरु अर्जुन देव जी को जितना भी धन्य कहें थोड़ा है। कई बार तो इतना प्यार आ जाता है कि शरीर का एक-एक अंग भी उन पर कुर्बान हो जाए, वह भी थोड़ा है, जो उन्होंने इतनी बख्शिश वाली बाणी की देन हमें दी।

आप किसी जीव से बहुत तंग हो, समझाने पर भी नहीं समझता, सुखमनी साहिब जी की बाणी का नियम बढ़ा दो। यदि कोई आदमी आपको तंग भी करता है, दुखी करता है, उसका बुरा न करो। सुखमनी साहिब की बाणी का नियम बढ़ा दो, गुरु की डयूटी लग जाएगी उसके मन के ख्याल बदलने की। जिससे आप उसकी असुर-वृत्ति के ख्यालों के कारण तंग हो, सुखमनी साहिब की बाणी उसका मन आपके लिए बदलाती जाएगी। उसके ख्याल देव वृत्ति के बनते जाएंगे।

दास ने किसी किताब में एक वचन पढ़ा था। उसमें प्रश्न-उत्तर लिखे थे। एक प्रश्न था कि यदि कोई शाक्त पुरुष किसी गुरुमुख,

संत-महापुरुष को तंग करे तो क्या वह भी आगे से पीट दे, जवाब दे। आगे से जवाब में लिखा था–

''हरि जनु राम नाम गुन गावै॥
जे कोई निंद करे हरि जन की अपुना गुनु न गवावै॥'

(अंग ७१६)

संत-महापुरुष, गुरसिक्ख को यदि कोई तंग करे तो वह बाणी का नियम बढ़ाकर सतिगुरु के चरणों में प्रार्थना करे कि अमुक कुमार्गगामी हो गया है। उसके हृदय में से आप कृपा करके मैल निकाल दो।

आपके साथ भी कई बार होता होगा, अड़ोस-पड़ोस में, घर में, समाज में रहते कई आपको यूं ही अधिक बोल जाते हैं, जबकि आपका कोई कसूर नहीं होता, अथवा जान-बूझकर बिना किसी कारण तंग करते हैं। एक तो है उससे आगे से झगड़ा बढ़ाना, एक है बाणी पढ़कर अरदास करनी, जब आप सुखमनी साहिब की बाणी पढ़कर गुरु के चरणों में अरदास करोगे कि सतिगुरु! आप कृपा करके उसके हृदय में से मैल निकाल दो। सतिगुरु कृपा अवश्य करते हैं।

आपने किसी विभाग में किसी अफसर से कोई जरुरी बात करने जाना है अथवा किसी से झगड़ा हो गया है, जाते समय एक पाठ सुखमनी साहिब का करके अरदास करके जाओ, सतिगुरु के चरणों में कि हे सच्चे पातशाह! मैं अमुक विभाग में जा रहा हूँ, मैं अफसर से बातचीत करूँगा, लेकिन अफसर ने मेरी बात सुननी भी तो ही है और माननी भी तो ही है यदि आप कृपा करके उसके हृदय में बैठ जाओ। दास गुरु की कृपा से दावे से लिख रहा है, आपके पहुँचने से पहले गुरु वहाँ पहुँचा होगा।

यह बहुत बड़ी देन है। आपका कार्य जायज हो, नाजायज न हो, गुरुमत्त अनुसार सही हो, यह बाणी दूसरे प्राणी का मन भी बदलती है।

कनाडा में एक शहर है 'सरी'। वहाँ गुरुद्वारा है 'दशमेश

दरबार'। ४-५ दिन सतिगुरु जी ने दासों से कीर्त्तन की सेवा ली है। वहाँ एक दिन आठ से नौ रात को गुरु साहिब ने हाजिरी लगवाई, कीर्त्तन की सेवा ली। वहाँ समय की बहुत बंदिश है ६ बजे अनंदु साहिब, ६-०५ पर अरदास, ६-१० पर हुक्मनामा, ६-१५ पर सतिगुरु का स्वरूप सुख-आसन पर। ६-२०, ६-२५ पर बाहर आ रहे थे।

दास से कोई ८-१० इंच लंबा शरीर था, दाढ़ी खुली, उम्र होगी कोई ५५ साल की। उसने दास को एक बांह से आलिंगन में ले लिया और कहने लगा, ''आपके साथ कोई वचन करना है।''

दास के मन में आया कि यह कहीं कोई कट्टर न हो। कथा में कोई बात अच्छी नहीं लगी होगी, इस बारे में बात करना चाहता होगा। दास ने कहा कि लंगर के पश्चात् कर लें तो वह कहने लगा, नहीं अभी ही करनी है।

दास को अब पक्का ही यकीन हो गया कि इसने अवश्य किंतु-परन्तु करना होगा, क्योंकि संगत में ४ तरह के शरीर आते हैं- 'अनिद्र, आलोचक, गंभीर, मिश्रित'। कई संगत में बैठे सो जाते है, उन्हें 'अनिद्र' कहते हैं। एक होते हैं 'आलोचक' जो केवल गलतियाँ ढूँढने आते हैं।

(दास एक बात स्पष्ट कर दे कि गलतियाँ उससे ही होती हैं जो कुछ करे। यदि आज गलती हुई है तो कल को सुधार भी होगा। पर यदि काम करेंगे ही नहीं तो फिर तो बात नहीं बननी। इसलिए शुभ कर्म करने मत छोड़ो, डट कर करो।

एक सज्जन ने दास को कहा था कि अमृत संचार चलते है, परन्तु कई अमृतपान करके छोड़ देते हैं। दास ने कहा, हम यह नहीं देखते कितनों ने छोड़ा। यदि १०० शरीरों ने अमृतपान किया तो उन में से ५ ने यदि छोड़ भी दिया तो हम तो यह देखते हैं कि ९५ तो सवार हो गए बेड़े। दास का यह लिखने से अभिप्राय कि गलतियाँ होने पर शुभ कर्म करने नहीं छोड़ देने। इन्सान गलतियाँ करके ही सीखता है, यदि हमने गलतियों के डर से शुभ कर्म करने छोड़ दिए तो मंजिल पर कैसे पहुँचेंगे। इसलिए यदि

आप में कोई गलतियाँ निकाले, अपनी गलतियों को सुधारने की कोशिश करो, गुरु की कृपा से न कि छोड़ कर बैठ जाओ।)

वह शरीर दास को कहने लगा कि अभी बात करनी है और वह शरीर दास को एक तरफ ले गया और कहने लगा, ''मैंने कनाडा में अपनी बेटी का रिश्ता किया है और लड़के वाले मांसाहारी भोजन मांगते हैं, लेकिन मैं नहीं चाहता कि मेरी बेटी के विवाह में जीवों की हत्या हो।''

जब उसने इतनी बात कही, तो मैंने सोचा कि यह तो गलती ढूँढने वाला नहीं, यह तो सलाह लेना चाहता है। मैंने उसका हाथ अपने कंधे से नीचे उतारा और कहा कि सम्मुख आ कर बात करो। वह सम्मुख आ गया। दास ने कहा, ''यदि लड़के वाले मांसाहारी भोजन मांगते हैं तो आप उन से मीटिंग करके विनती करो कि वह अपने घर जो मर्जी करें, हम वैष्णो भोजन अच्छे से अच्छा दे देंगे।'' वह आगे से कहने लगा, ''एक बार छोड़कर दो बार मीटिंग कर बैठा हूँ, लेकिन वह नहीं मानते। वह कहते हैं कि हमने मांसाहारी भोजन ही लेना है।''

दास ने फिर पूछ लिया, ''जब दो बार उन से आपने मीटिंग की तो अकेले गए थे कि गुरु को साथ लिया था?''

वह बड़ा हैरान हुआ कि गुरु को साथ कैसे लिया जाता है। सामान्य व्यक्ति यही सोचता है कि गुरु बहुत दूर है, पर यह तो प्रेम व श्रद्धा वाले जानते हैं कि वह कितना करीब है, कैसे होता है:–

''कहि रविदास हाथ पै नेरै'' (अंग ६५८)

जिन की तीसरी आँख नहीं खुली, जिनके पास देखने वाली आँखें नहीं हैं, वह ही उसे दूर समझते हैं। श्रद्धा-भावना वाले तो उसे हर समय अपने आस-पास अनुभव करते हैं। गुरु साहिब की बाणी कोई फिलास्फी नहीं, यह बीती हुई हकीकतें लिखी हैं कि–

'सो सतिगुरु पिआरा मेरै नालि है जिथै किथै मैनो लए छडाई॥'

(अंग ५८८)

दास ने विनती की, "एक बार फिर लड़के वालों से फोन पर बात करके समय निर्धारित करो और अब इस बार अकेले मत जाना, गुरु को साथ लेकर जाना।" वह कहने लगा, "वह कैसे?" दास ने कहा, "जिस दिन का समय नियत करोगे, उस दिन प्रभात काल (अमृत वेला) ३ बजे उठना।" वह कहने लगा, "तीन बजे।" दास ने कहा, "गुरु ऐसे नहीं साथ जाता।" कहने लगा, "अच्छा फिर उठ जाएंगे।" फिर दास ने कहा, "३ बजे उठकर केश स्नान करना है, क्योंकि शुद्धता की अति आवश्यकता है।"

बाबा नंद सिंघ जी के वचन हैं—सफाई, सच्चाई एवं खुदाई का मेल है। शुद्धता अधिक से अधिक रखा करो, यह भी सिक्खी का उसूल है। हद से बढ़कर वहम करने के लिए भी नहीं कहा गया सिक्खी में, परन्तु एक हद तक शुद्धता रखने का हुक्म है। जहाँ रसोईयों में जूठन हो, उस घर में परमात्मा नहीं आता। बाणी की भी पंक्तियाँ हैं—

"सुचि होवै ता सचु पाईऐ॥" (अंग ४७२)

आगे से दास ने कहा कि केश स्नान करके दो पाठ सुखमनी साहिब के एक चौकड़ी पर करके, अरदास करनी है सतिगुरु के चरणों में कि हे सच्चे पातशाह! लड़के वालों के साथ मीटिंग करने जा रहा हूँ, कृपा करना, आप जी मेरे साथ रहना। दास ने कहा कि यदि इस तरह युक्ति से जाओगे तो आप वहाँ बाद में पहुँचोगे, गुरु वहाँ पहले पहुँचा होगा। यह शनिवार रात की वार्ता है।

अगले दिन रविवार सुबह उसी गुरुद्वारे में १२ से १ बजे तक हमारा कीर्त्तन था। हम हाजिरी लगा कर लंगर घर में बैठे थे और वही सरदार जी दूर से चले आ रहे और कहने लगे, "भाई साहिब जी, बधाई हो।" दास ने कहा, "बधाई किस बात की?" कहने लगा, "आप ने जो फार्मूला बताया था, वह हमने रात को इस्तेमाल कर लिया। हम यहाँ से जब गए और घर पहुँचते ही समधियों को फोन किया कि हम आपके साथ मीटिंग करना चाहते हैं। उन्होंने ६ बजे का समय तय किया। मैंने आपके तरीके मुताबिक ३ बजे उठ कर केश स्नान करके जीवन में पहली बार दो पाठ सुखमनी

साहिब के एक ही चौकड़ी पर करके देग करा कर अरदास की सतिगुरु के चरणों में और चला गया उनसे मीटिंग करने। दो-तीन शरीर उनके थे, दो हम थे।

उसने बताया कि मैंने अभी बात शुरु ही की कि यदि आप विवाह में मांसाहारी भोजन न लो, साथ ही मेरा समधी कहने लगा, आप यही बात पहले भी दो-तीन बार कह चुके हो। यदि आपका इस चीज पर मन नहीं मान रहा तो फिर जैसे आप कहते हो, वैसे ही कर लेते हैं।'' वह सरदार कहने लगा, ''मैंने मन में सोचा कहाँ यह मेरे पैर भी नहीं था लगने देता, इस बारे बात सुनने को भी तैयार नहीं था, कहता था ऐसा हो ही नहीं सकता और अब कैसे एक मिनट में ही हामी भर दी है। मैं समझ गया कि यह जिसकी बाणी पढ़कर गया था, उसने मेरे वहाँ पहुँचने से पहले ही, उसके हृदय में बैठकर उसके मन को बदल दिया है।''

यह निश्चित बात है, गुरु अर्जुन देव जी महाराज शरीर कारण चाहे चले गए हैं, पर आज भी कोई प्रेम से सुखमनी साहिब की बाणी का सहारा ले, उनके चरणों से जुड़े, अरदास विनती करे, वह आज भी पहुँचते हैं।

यह वार्ता पढ़कर स्वयं ही अनुमान लगा लेना कि कैसे गुरु किसी के भी हृदय में बैठकर उसके मन को बदल सकता है, उसकी असुर वृत्ति को भी बदल सकता है।

कुछ समय पहले दास के पास कोई शरीर बड़ा घबराया हुआ आया और कहने लगा, ''अमुक व्यक्ति आप पर बहुत गर्म है, आपके विरुद्ध बहुत कुछ बोल रहा है।'' दास उसकी बात सुनकर सोचों में पड़ गया कि हमारी तो किसी से कोई दुश्मनी नहीं, कोई वैर नहीं, कोई ईर्ष्या नहीं, वह अवश्य किसी गलतफहमी का शिकार हो गया है। उससे मिलकर व बातचीत करके उसकी गलतफहमी दूर करनी चाहिए।

उस समय दोपहर के ३ बजे थे और दास जल्दी में था। इतना समय नहीं था कि पहले सुखमनी साहिब का पाठ करते। दास ने गुरु साहिब के चरणों में, अपने गले में पल्लू डालकर अरदास की

कि हे सच्चे पातशाह! सन्देश मिला है कि अमुक व्यक्ति बड़ा गर्म है। हमारी उससे कोई ईर्ष्या नहीं, कोई द्वेष नहीं। हम उसके पास ज़ा रहे हैं ताकि पता लगे कि उसे क्या गलतफहमी हुई है। वह बहुत गर्म है, गुस्से में है, आप जी कृपा करना। हमारे जाने से पहले आप उसके हृदय में बैठ जाना और हमारे बीच आप खड़े हो जाना।

अब यहाँ जो विचार, दास आप जी से व्यक्त करना चाहता है वह यह है कि उस समय दास के पास इतना समय नहीं था कि पाठ करके जाता, इसलिए दास ने अरदास में विनती करने के पश्चात् यह कहा कि वहाँ चाहे जितना भी समय लगे, दास घर आकर दोपहर का भोजन बाद में करेगा, पहले अपने नित्यनियम के अलावा सुखमनी साहिब के पाठ की भेंट देगा। अर्थात् ऐसे समय सुखमनी साहिब का पहरा रखकर सहारा लेकर, अरदास करके जाओ और यदि किसी मजबूरी वश पाठ करने का समय न हो तो सतिगुरु से यह वायदा करके जाओ कि वहाँ से लौटकर कोई अन्य कार्य पहले नहीं करूँगा, जितनी देर तक सुखमनी साहिब का पाठ नहीं कर लेता।

अब दास अपनी बात बताए, जो हमारे साथ बीती। वह शरीर जिस बारे पता लगा कि हम से बहुत नाराज़ है, जब गुरु साहिब की ओट लेकर उसके घर गए तो वह हमें देखकर इतना चकित हुआ कि हमें द्वार पर खड़ा करके, अपनी पत्नी को आवाज़ देकर कहने लगा, "जल्दी से तेल लेकर आ तेल चोएं। यह देख तो सही कौन आया है।"

दास ने अपने मन में कहा कि सतिगुरु, मुझे तो संदेश मिला था कि यह शरीर नाराज बहुत है हम से, पर यह तो तेल चो रहा है और तेल चो कर उसे लंघाते हैं, जिसका आदर करना हो। दास ने कहा–सतिगुरु यह सब आपकी बख्शिश ही है कि हम से पहले ही उसके हृदय में बैठ गए और इसकी मति ही बदल दी क्योंकि मति, सुमति सब उसके हाथ है।

यह आपबीती लिखने का अन्य कोई मकसद नहीं, केवल इतनी बात व्यक्त करने का चित्त करता था कि कोई भी इस पावन

बाणी का सहारा ले, गुरु के चरणों में अरदास करे, गुरु साहिब अपनी बख्शिश करके दूसरे शरीर की मति को भी बदल देते हैं।

एक अन्य जिक्र दास व्यक्त करे। दिल्ली में दास के मित्र हैं। उनकी दो बेटियां हैं। दोनों कालेज में पढ़ती हैं। कुछ साल पहले की बात है। हम कीर्त्तन की हाजिरी के लिए दिल्ली गए और वह परिवार दास को मिला। बड़े परेशान, आँखें भरी हुईं।

दास ने परेशानी का कारण पूछा तो वह कहने लगे, 'मेरी दो जवान बेटियां हैं। हमारे बिल्कुल साथ वाले घर में एक नवयुवक लड़का है। वह कुछ बदमाश किस्म का है और मेरी बेटियों को बहुत परेशान करता है, यहाँ तक कि बेटियों का घर में से निकलना मुश्किल हो गया है। हम शराफत के मारे या यह कह लो कि बेटियां हैं, कुछ कर नहीं सकते। उसके परिवार वाले भी अपने बदमाश पुत्र की पीठ थपथपाते हैं, उसकी तरफदारी करते हैं। हमें रोज़ धमकियां देते हैं कि अपनी एक बेटी का विवाह हमारे लड़के से कर दो। वह बदमाश किस्म का लड़का है। सिक्ख होने के बावजूद केश कटवाए हुए हैं। रोज़ शराब पी कर गर्जता रहता है। यहाँ तक गिरी हुई हरकत करते हैं कि हमारी बेटी की कहीं कोई रिश्ते की बात चलती है तो वह पता नहीं कैसे पता लगा लेते हैं और वहाँ बेटियों के बारे में गलत बातें करके रिश्ता नहीं होने देते। हम बहुत परेशान हैं, समझ नहीं आती क्या करें। न मकान छोड़ सकते हैं, न ही उन बदमाशों से माथा लगा सकते हैं। पुत्रियों का धन है, बदनामी के डर से पुलिस में रिपोर्ट भी नहीं दे सकते। डरते भी हैं कि वह बदमाश पता नहीं क्या हरकत कर दें और बाद में हमें पछताना पड़े।

दास ने जब सारी बात सुनी तो गुरु का कूकर बन कर विनती की कि आप चाहे सारा परिवार मिलकर पाँच पाठ सुखमनी साहिब के प्रतिदिन करो और सप्ताह पश्चात किसी समीपवर्ती गुरु स्थान पर देग करवा कर अरदास करो कि सतिगुरु! आप तो स्वयं नारी की इज्जत की रक्षा करते हो। यह बेटियां आपकी हैं, इनकी आप ही रक्षा करो, यह समस्या स्वयं ही हल करो। दास की विनती पर

उनके सारे परिवार ने पूरा निश्चय करके सुखमनी साहिब के रोज़ के पाँच पाठ करने शुरु कर दिए।

सोच से भी दूर की बात! इस बाणी ने पता नहीं क्या लीला रचाई अथवा क्या कौतुक बना, यह तो या गुरु पातशाह जानें या उस लड़के के परिवार को पता होगा कि उन पर क्या जोर पड़ा और कैसा पड़ा कि कोई ६ महीने बाद लड़कियों के माता-पिता खुशी-खुशी आए और कहने लगे कि सुखमनी साहिब जी की बाणी के फलस्वरूप पता नहीं उस परिवार का मुँह भी दूसरी तरफ हो गया है। अब तो यदि कहीं मार्ग में वह लड़का हमारी बेटियों को देख भी ले तो स्वयं ही सड़क की दूसरी साइड पर हो जाता है। वह कहने लगे, हमें तो खुद यह सब लीला समझ नहीं आ रही कि यह कैसे हो गया। जो लड़का कई सालों से बेटियों को इतना परेशान कर रहा था, उसका ख्याल इधर से कैसे हट गया।

दास ने कहा कि हम उस पातशाह की लीला को, रहस्य को नहीं समझ सके। यह सब सुखमनी साहिब की बाणी की बड़ाई ही है। यह सर्व कार्य सिद्ध कर देती है।

कुछ समय पश्चात् वह दास को फिर मिले और उन्होंने बताया कि उनकी दोनों बेटियों का सच्चे पातशाह ने कृपा करके बहुत अच्छे गुरसिक्खों के घर मेल करवा दिया है। दोनों बेटियों की शादी हो गई है और दोनों ही अपने घरों में सुख-शांति से रह रही हैं। कहने लगे कि हमारी समझ में ही नहीं आता कि वह लड़का अब कभी सामने ही नहीं आया।

उनकी यह सारी बात सुनकर दास की बाणी के प्रति श्रद्धा, प्रेम और बढ़ गया और दास को यह दृढ़ विश्वास हो गया कि सुखमनी साहिब की बाणी किसी दूसरे शरीर के मन के ख्यालों को भी बदलाने में समर्थ है।

एक और देखो कितनी प्रेम वाली मान वाली बात। कई बार यदि किसी शरीर को सूझ न हो, अथवा किसी सद्पुरुष की संगत न की हो और उस शरीर की किसी से दुश्मनी हो तो इस मकसद से सुखमनी साहिब पढ़े कि वह शरीर जिससे दुश्मनी है, उसका

बुरा हो लेकिन सुखमनी साहिब की बाणी इतनी मीठी है कि वह उसके दुश्मन का नुक्सान नहीं करती, अपितु जो सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ रहा है, उसके अन्तर्मन से उसकी दुर्मति ही खत्म कर देती है। उस शरीर के अन्तर्मन से सुखमनी साहिब की बाणी दूसरे का बुरा मांगने वाले ख्याल भी निकाल देती है।

क्योंकि यह एक सामान्य सांसारिक लोगों का स्वभाव होता है कि यदि किसी ने कुछ बुरा किया हो तो उसके जवाब में बुरा ही करते हैं, लेकिन कुछ उच्च अवस्था के भी होते हैं जो बुरा करने वाले को क्षमा कर देते हैं, परन्तु बुरा करने वाले से आगे से भलाई करनी, यह गुरु नानक ने अपने गुरसिक्खों के दामन में डाला है, तो ही भाई नंद लाल जी कहते है :—

''बुरे नाल सभ बुरी करेंदे, मुआफ करन कई सिआणे।
बुरे नाल वी नेकी करनी, इह गुर नानक जाणे॥''

एक नवयुवक लड़का था, गुरसिक्खी के मार्ग पर नया-नया चला था। अभी इतनी सूझ नहीं थी कि गुरसिक्खी का मार्ग दोषी को क्षमा करने वाला है। क्योंकि नया-नया अभी संगत में आना शुरु हुआ था। उसने संगत में कहीं यह विचार सुना कि मंशा धारण करके सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ी जाए, मंशा पूरी होती है। उस नवयुवक का अपने किसी साथी से वैर था। उसने यह मन्नत मांग ली कि मैं प्रतिदिन दो पाठ सुखमनी साहिब के करूँगा, मेरे उस साथी का नुक्सान हो जाए।

अब इशारा लेना कि सुखमनी साहिब की बाणी कितनी मीठी है। इस बाणी ने उसके साथी का नुक्सान नहीं किया अपितु सुखमनी साहिब पढ़ने वाले नवयुवक का स्वभाव ही बदल दिया। जो स्वभाव बदले की भावना रखता था, उसके मन में इस बाणी ने ऐसा घर किया कि उस नवयुवक के भीतर से बदले की भावना ही समाप्त हो गई। अर्थात् यदि सूझ न होने के कारण कोई गलत ख्याल से बाणी पढ़ता है तो यह नहीं कि किसी का नुक्सान हो जाएगा, अपितु पढ़ने वाले के भीतर से दुर्मति ही दूर कर देती है।

कैसे न हृदय की तह में से निकलेगा-धन्य सुखमनी साहिब कि यदि किसी को सूझ न होने के कारण, कोई गलत ख्याल से, किसी का बुरा करने के ख्याल से बाणी पढ़ रहा है तो यह नहीं कि बाणी किसी का बुरा करेगी, किसी का नुक्सान करेगी अपितु सुखमनी साहिब की बाणी बुरा मांगने वाले की दुर्मति ही दूर कर देती है।

गुरु अर्जुन देव जी महाराज शरीर कारण चाहे चले गए हैं, पर उनकी कृपा, उनकी बख्शिशें, उनकी बाणी 'सुखमनी साहिब' की बख्शिशें खत्म नहीं हुईं। जब सुखमनी साहिब की बरकतों की घटनाएं सुनने को मिलती हैं तो रोम-रोम द्वारा गुरु अर्जुन साहिब पर बलिहारी होते हैं।

एक वर्जीनिया के परिवार की घटना है। उनके लड़के का कहीं रिश्ता हुआ। कलियुग का समय है। कुछ लोगों को दूसरों की खुशी बर्दाश्त नहीं होती। लड़के के पिता के किसी ने कान भर दिए कि तूने जिसे समधी बना लिया है, वह तो तेरी बराबरी का ही नहीं, धन-दौलत द्वारा, ओहदे द्वारा, कल को तेरे रिश्तेदारों, संबंधियों में तेरी क्या इज्जत रहेगी।

अब यदि वह शरीर होता कोई गुरमुख तो उस पर ऐसी बातों का असर न होता, क्योंकि गुरमुख ऐसी बातों से ऊपर उठ जाता है, वह निरंकारी पहरे में जीता है, निरंकार के लिए जीता है, उसकी सांसारिक भूखें, सांसारिक इच्छाएं समाप्त हो जाती हैं, एक नाम आधार बन जाता है, जबकि सामान्य व्यक्ति सांसारिक पहरे में जीता है। उसके भीतर सांसारिक भूखें होती हैं– शोभा की भूख, शौर्य की भूख, धन की भूख। कहीं से किसी समय मान-सम्मान न मिले अथवा सेवा मनमर्जी की न हो तो सांसारिक पहरे में जीने वाले से ऐसी बातें बर्दाश्त नहीं होती।

वह शरीर सांसारिक वृत्ति का था। उसके मस्तिष्क में बात बैठ गई जबकि निरंकारी वृत्ति होती है इधर से बात सुनी और उधर से निकाल दी। अब लड़के के पिता के मस्तिष्क में यह बात बैठ गई और उसने अपने घर वालों को कह दिया कि हमने यह रिश्ता तोड़ देना है, क्योंकि लड़की वाले हमारी बराबरी के नहीं हैं। पर

सबब ऐसा बना कि लड़का भी चाहता था कि वहाँ रिश्ता हो और लड़के की माँ भी यही चाहती थी। लड़की वाले भी सहमत थे, पर एक लड़के का पिता जिद करके बैठ गया कि मैंने अपने लड़के का रिश्ता यहाँ नहीं करना।

अचानक लड़की के परिवार को किसी गुरमुख कमाई वाले सच्चे संत-महापुरुष का संग हो गया। जब उन्हें लड़की के परिवार वालों ने सारी बात सुनाई कि इस तरह रिश्ता पक्का हो गया, अरदास भी हो गई है, सारे सहमत हैं, पर लड़के के पिता ने अब इन्कार कर दिया है और वह रिश्ता तोड़ना चाहता है।

यह प्रत्यक्ष बीती घटना है कि सुखमनी साहिब की बाणी कैसे दूसरे का मन बदलाती है, असुर वृत्ति को देव वृत्ति बनाती है।

उस गुरमुख ने, लड़की के परिवार वालों को जिन्होंने अपनी व्यथा सुनाई थी, कहा कि अपने नित्यनियम के अलावा पाँच पाठ सुखमनी साहिब के रोज़ किया करो। ७ दिन पश्चात् या पाँच दिन या १३ दिन बाद कोई भी चुन लो, देग कराकर गले में पल्लू डालकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में अरदास करो कि सतिगुरु! यह अमुक सिंघ जिद पर अड़ा है कि मैंने यह बच्चों का रिश्ता तोड़ना है, शेष दोनों परिवार के सदस्य सहमत हैं। आप कृपा करो, कोई विधि बनाओ और उसका मन बदल दो।

उन परिवार वालों ने मन में संकल्प किया कि सात दिन ऐसे हाजिरी लगानी है। पाँच पाठ रोज के अधिक करके सप्ताह बाद अरदास। अब ध्यान देना, जब गुरु विधि बनाए तो कैसे हलचल होती है। वह परिवार नियम से पाठ व अरदास कर रहा था। चौथा दिन था अरदास का व लड़के के पिता को हार्ट की तकलीफ हुई, अस्पताल दाखिल करवाया गया। हार्ट के मरीज का आप सब जानते ही हो कि कोई पता नहीं लगता गुजर जाए तो दस साल भी गुजर सकते हैं और न गुजरें तो एक मिनट भी नहीं गुजरता।

अभी कुछ दिनों की वार्ता है, दिल्ली के कोई सत्संगी हैं, उनके पिता जी ने सुबह अच्छे-भले उठकर स्नान किया, अपने घर गुरु साहिब का प्रकाश किया, सिर पर पगड़ी सजाई, तैयार हुए गुरुद्वारे

जाने के लिए, उनका नियम था रोजाना गुरुद्वारे जाने का। अभी सीढ़ी उतरने ही लगे थे कि हार्ट की तकलीफ हुई और घड़ी देखकर १५ सैकिण्ड नहीं लगे, प्राण त्याग दिए। (यह चीजें देखकर कहते हैं कि देखो इतना भी भरोसा नहीं आदमी का और कैसे लोग मैं-मेरी में फँसे पड़े हैं।) भाव कि हार्ट की तकलीफ ऐसी है।

जब लड़के के पिता को हार्ट की तकलीफ हुई तो अस्पताल दाखिल करवाया गया। वहाँ इलाज चल रहा था। वह शरीर अपनी पत्नी व पुत्र को कहता है कि डाक्टरों से पूछो कि मुझे छुट्टी कब मिलनी है। उन्होंने बताया कि अभी ३-४ दिन बाद मिलेगी छुट्टी। वह शरीर बिस्तर पर लेटा पड़ा-पड़ा आँखों में अश्रु भरे हुए, कहने लगा कि जब मुझे छुट्टी मिलेगी, मैंने पहले अपने घर नहीं जाना। पत्नी-पुत्र पूछते हैं कि घर नहीं जाना तो कहाँ जाना है? तो कहने लगा कि मैंने यहाँ अस्पताल से छुट्टी हो जाए तो सीधा अपने समधिओं के घर जाना है। जो मैंने उनका दिल दुखाया था रिश्ता तोड़ने की बात करके, उसकी माफी मांगनी है।

चार दिन बाद जब अस्पताल से छुट्टी हुई तो वह पहले अपने समधियों के घर गया और जा कर अपने समधि को गले लगकर मिला और कहने लगा, "आप तो मेरी बांह हो। यह रिश्ता पक्का है, इन बच्चों की शादी अवश्य होगी।"

जब दास ने यह सारी बात सुनी और प्रत्यक्ष सामने आ गया कि सुखमनी साहिब जी की बाणी किसी दूसरे शरीर के मन को कैसे बदलाने की समर्था रखती है। संगत जी कहो "धन्य श्री सुखमनी साहिब।"

कोई भी बीती घटना लिखने का अन्य कोई मतलब नहीं, सिर्फ यही मकसद है कि जो भी इस बाणी की बख्शिशों को पढ़े वह इस पवित्र बाणी से जुड़ जाए, इस पावन बाणी से रंग जाए। जो बख्शिशें गुरु साहिब ने इस पवित्र बाणी में की हैं, उन्हें हम जान सकें। क्योंकि भटकता केवल वही है, दूसरे दरवाजे वही खटखटाता है, जिसे गुरु नानक के घर के हीरे-लालों की पहचान नहीं।

आप में से कुछेक के बच्चे आज्ञा में नहीं होते अथवा कई बार

कोई कुसंगत मिल जाए तो भटक जाते हैं, मति कहीं की कहीं चली जाती है। यदि कहीं ऐसी बातचीत हो तो घबराईए मत, भटकें न, सुखमनी साहिब की बाणी का सहारा लो, गुरु की डयूटी लग जाएगी, आपके बच्चे की मति ठीक करने की, उसे सन्मार्ग लगाने की।

अमेरिका के कोई संगी हैं। उन्होंने एक दिन अपनी १६ साल की लड़की के पर्स में नशे की गोलियां देखीं तो पैरों के नीचे से जमीन निकल गई। बाहर का देश है, स्कूल में हर प्रकार के बच्चे पढ़ते हैं, किसी गलत बच्चे का संग हो गया। उसने प्रेरित किया खाने हेतु। एक गोली खाई और नशा लग गया। धीरे-धीरे आदत बन गई।

किसी गुरमुख प्यारे ने लड़की के माता-पिता को सलाह दी कि दिमाग पर बात लगाने का कोई फायदा नहीं, दिल पर चिंता लगाने से या सोचने से कोई चिंता मिटती नहीं। आप अपने नित्यनियम के अलावा दो पाठ रोज सुखमनी साहिब के आगे जल रख कर करो और वह जल लड़की को श्रद्धा से पिलाया करो। उन्होंने उस कुसंगति से बचाने के लिए लड़की को एक महीने के लिए स्कूल से भी छुट्टी करवा दी और रोज नियम से जल आगे रखकर, सुखमनी साहिब का पाठ करना और वह जल लड़की को पिलाना।

महीने बाद लड़की कहने लगी, ''मुझे स्कूल जाने दो, मैं अब नशा नहीं करूँगी।'' लेकिन उस लड़की के माता-पिता कहने लगे कि अब तूने यदि पढ़ना है तो तुझे उस स्कूल में वापिस नहीं भेजना। तुझे बड़ू साहिब स्कूल में भेज देते हैं।

यह संत अत्तर सिंघ जी मस्तुआने वालों द्वारा कलगीधर ट्रस्ट बना है। उनके द्वारा स्कूल चल रहा है। संत बाबा इकबाल सिंघ जी, यह स्कूल चला रहे हैं। इस स्कूल में सांसारिक पढ़ाई भी है और गुरुमत्त भी। बड़े बच्चों को प्रातः ३ बजे व छोटे बच्चों को ४ बजे प्रभातकाल उठा दिया जाता है। लड़कियों को भी गोल पगड़ी बंधवाई जाती है, कमीज व पजामी पहनाते हैं। आज बहुत

आवश्यकता है ऐसे स्कूलों की, जहाँ गुरुमत्त का प्रशिक्षण भी हो। सिर्फ सांसारिक विद्या क्या करोगे, यदि बच्चे में गुरुमत्त ही न आई। बाणी में भी लिखा है–

''पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा॥''

(अंग १४०)

कोशिश करो, अपने बच्चों को उन स्कूलों में पढ़ने भेजो जहाँ सांसारिक पढ़ाई के साथ गुरुमत्त की शिक्षा भी हो। कुछ लोगों पर तो कृपा है, लेकिन कई ऐसी भी उदाहरणें सामने आती हैं कि बच्चे बड़े-बड़े अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ते हैं, लेकिन यदि उन से पूछ लो क्या तुझे जपुजी साहिब आती है? तो वह आगे से पूछेंगे, 'जपुजी साहिब क्या होती हैं?' मन रोता है वहाँ कि सिक्खों के बच्चे हो और यह न पता हो कि जपुजी साहिब क्या है।)

दास की विनती है कि यदि बच्चों को कानवैंट स्कूलों में भेजते हो, जहाँ कोई गुरुमत्त की पढ़ाई नहीं, तो आप अपने बच्चों को घरों में उद्यम करके गुरुबाणी से जोड़ो। बच्चों को चाहे कोई लालच देकर भी इधर प्रेरित किया जाए तो भी भला है।

आप असली माताएं होंगी यदि आपने अपने बच्चों के प्रति यह फर्ज निभाया। श्री अमृतसर आनंद एवेन्यु क्षेत्र है। वहाँ दास किसी के घर गया। चलने लगे वापसी, कुछ जल्दी में भी था, उनके १०-११ साल के बच्चे ने दास का कुर्ता पकड़ लिया और कहने लगा कि मुझे जपुजी साहिब की १७ पउड़ियाँ याद हैं, मुझ से सुनो।

दास जल्दी में तो था, पर सोचा बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ेगा। दास ने उससे १७ पउड़ियाँ सुनीं। सुनाने के बाद वह बच्चा कहने लगा कि आप १०-१५ दिन तक फिर हमारे घर आना, मैं आपको २५ पउड़ियों तक सुनाऊंगा। दास ने कहा १०-१५ दिनों में ८ पउड़ियाँ याद कर लेगा? वह कहने लगा कि मेरी मम्मी ने कहा है कि जिस दिन तुझे २५ पउड़ियाँ याद हो जाएंगी तुझे नई साईकल लेकर दूंगी। मैंने साईकल लेनी है, इसलिए मैंने जल्दी-जल्दी याद कर लेनी हैं। भाव-जो बात दास आप जी से

व्यक्त करना चाहता है कि बच्चे को कोई सांसारिक लालच देकर भी बाणी कंठ करवाई जा सकती है।

दास का ११-१२ साल का लड़का है। उसे पतंगें उड़ाने का बहुत शौक है। सर्दियों के दिनों में, वह बार-बार छत्त पर चढ़ जाता है कि सभी पतंग उड़ा रहे हैं, मैंने भी उड़ानी है। मैं भी उसे कई बार कह देता हूँ कि ५ पाठ चौपई साहिब के कर, फिर एक घण्टे के लिए तुझे पतंग उड़ाने की छुट्टी है। जब पतंग उड़ाने की लालसा लगी हो तो १५ मिनटों में ही ५ पाठ कर लेता है। भाव हम अपने बच्चों को सांसारिक लालच देकर भी गुरुबाणी से जोड़ सकते हैं।

उस लड़की के माता-पिता ने जब कहा कि तुझे बड़ू साहिब भेज देना है तो वह चीखने-चिल्लाने लगी कि मैंनें इण्डिया नहीं जाना। सुखमनी साहिब का पाठ करके रोज़ वह अमृत लड़की को पिलाते कोई डेढ़ महीना बीत गया। डेढ़ महीने बाद उस लड़की पर यह कृपा हो गई कि वह इतना मान गई कि मैं एक साल के लिए वहाँ पढ़ूँगी। दास ने उस स्कूल के प्रिंसीपल से विनती की कि इस लड़की को अवश्य किसी तरह भी एडजस्ट करो (क्योंकि कई बार वहाँ सीट नहीं मिलती।) दास ने विनती की कि हो सकता है यहाँ लड़की की जिन्दगी तबदील हो जाए। उन्होंने विनती स्वीकार करके उस लड़की को दाखिल कर लिया।

जब वहाँ स्कूल में छुट्टियाँ हुईं तो लड़की की माता अमेरिका से आई और अपनी लड़की को साथ लेकर गुरु रामदास जी के द्वार पर आई धन्यवाद करने, मिलने हेतु हमारे घर भी आई। बैठे थे कि अचानक उस लड़की के पर्स को हाथ लग गया। दास की धर्मपत्नी को उस लड़की का पर्स बड़ा भारी लगा। उन्होंने स्वभाविक ही पूछ लिया, "इसमें क्या डाला है?" उस लड़की ने पर्स की जंजीर खोल कर दिखाई और उसमें नितनेम का गुटका था।

लड़की ने स्कूल की मर्यादानुसार कमीज, पजामी पहनी हुई थी और गोल पगड़ी सजाई हुई थी। लड़की का पहनावा देखकर और पर्स में नितनेम का गुटका देख कर सुखमनी साहिब की बाणी के प्रेम में दास की आँखों में अश्रु आ गए कि सुखमनी साहिब की

बाणी कैसे मन को बदलती है। वह लड़की जिसके पर्स में कुछ समय पहले नशे की गोलियाँ मिली थीं, आज नितनेम का गुटका है। दास ने उस लड़की से पूछ लिया कि यह गुटका पर्स में क्यों रखा है? तो वह कहने लगी कि मैं जापु साहिब का पाठ जुबानी याद कर रही हूँ। संगत जी एवं पढ़ने सुनने वालो! भीतर से कहो कि 'धन्य गुरु अर्जुन देव जी' और धन्य श्री सुखमनी साहिब!

कुछ साल पहले की बात हैं, इंगलैंड कीर्त्तन की सेवा ली सतिगुरु ने, वहाँ भाई जसविन्द्र सिंघ कोहली हैं, बहुत ही रंगी हुई आत्मा, बाणी पर न्यौछावर जाने वाले, जिन्होंने हमें वहाँ बुलाया था। उन्होंने एक वचन सुनाया, सुखमनी साहिब की महिमा बारे कि कैसे सुखमनी साहिब की बाणी मन बदलाती है, असुर वृत्ति के ख्यालों को देव वृत्ति के ख्याल बनाती है।

उन्होंने बताया कि एक बार कोई महिला मेरे पास आई। उसका बड़ा मन भरा हुआ था। रोती जाए। मैंने पूछ लिया, रो क्यों रही हैं? वह महिला कहने लगी कि भीतर एक बहुत बड़ा जख्म है, मेरी लड़की ने किसी मुसलमान लड़के से प्रेम कर लिया है और इस ज़िद में है कि उसके साथ ही शादी करवानी है। बाहर का देश है, यहाँ बच्चे को कुछ कह भी नहीं सकते। हर समय यही चिन्ता दिमाग को खाई जा रही है कि यदि उसने बिरादरी से बाहर विवाह करवा लिया तो हमारी क्या इज्जत रह जाएगी? हमारा तो जीना ही दूभर हो जाएगा कि सिक्ख की लड़की ने मुसलमान से विवाह करवा लिया।

भाई जसविन्द्र सिंघ जी कोहली जिन्होंने यह वचन सुनाया, बड़ी Will-Power है उनके भीतर, बड़ा भरोसा है सुखमनी साहिब की बाणी पर। स्वयं भी रंगे हुए हैं। इंगलैंड में गुरुद्वारा गुरु हरिकृष्ण साहिब जी मानचैस्टर के प्रधान भी हैं।

उन्होंने स्पैशल इण्डिया से सुखमनी साहिब के गुटके मंगवा कर अपने पास गुरुद्वारा साहिब में रखे हुए हैं। जो कोई उनके पास आकर अपना दुख बताए, उसे सुखमनी साहिब का गुटका देकर, सुखमनी साहिब से जोड़ते हैं। उन्होंने बताया कि मैंने अरदास करके

गुरु साहिब के चरणों में अल्मारी में से सुखमनी साहिब का गुटका निकालकर उस महिला को दिया और कहा, "यह सुखमनी साहिब का गुटका है। एक पाठ प्रतिदिन जल आगे रखकर करना है और वह जल लड़की को पिलाना है और साथ ही सतिगुरु के चरणों में नम्रतापूर्वक दामन फैला कर अरदास विनती करनी है, कि सतिगुरु जी! कृपा करो, यह लड़की जो कुमार्गगामी हो गई है, एक मुसलमान लड़के से शादी करवाना चाहती है, इसकी मति पर आप कृपा करो, इसका उधर से मन हटा दो।"

उस लड़की की माता ने सुखमनी साहिब का गुटका उन से ले लिया और रोज़ाना एक पाठ नियम से जल आगे रखकर करना शुरु कर दिया। वह लड़की पढ़ी-लिखी थी। इतनी बात समझती थी कि मेरे माता-पिता मुझ से, एक मुसलमान लड़के से प्यार करने की बात को लेकर नाराज़ हैं। समझ गई कि यह जो जल, सुखमनी साहिब का पाठ करके पिला रहे हैं, इस कारण कि मैं उस मुसलमान लड़के से विवाह करने की जिद छोड़ दूँ, परन्तु वह अपने दिल के हाथों कह लो या वासना कारण कह लो, मज़बूर थी।

उसकी माता जो प्रतिदिन नियम से सुखमनी साहिब का पाठ कर रही थी, उसे भरोसा था कि एक गुरु के प्यारे ने गुरु ग्रंथ साहिब जी के आगे अरदास करके मुझे यह गुटका साहिब दिया है, मेरी भावना अवश्य पूरी होगी, गुरु साहिब अवश्य मेरी लाज रखेंगे।

उन्होंने बताया कि एक महीना हुआ सुखमनी साहिब का पाठ करते। सुखमनी साहिब की बाणी ने अपनी कृपा दिखानी शुरु कर दी। उस लड़की की विमान में बड़ी अच्छी एयर-होस्टैस की नौकरी लग गई। अब ध्यान देना, जब एयर-होस्टैस की नौकरी लग गई, विमानों में नित्य आना-जाना, उस मुसलमान लड़के से मेल-जोल कम हो गया, लिंक कम होने शुरु हो गए।

सुखमनी साहिब की और कृपा हुई। उस लड़के की नौकरी किसी अन्य देश में लग गई, लिंक और कम हो गए। यह भाई जसविन्द्र सिंघ कोहली जी ने बताया। कहने लगे कि छः महीने

पश्चात् वह लड़की अपनी माता के साथ उनके पास आई और कहने लगी, यह आपने मेरी माता को कौन-सा गुटका साहिब दिया है, कौन-सी बाणी, कौन-सी चीज दी है? वही मैं थी, जो जिद पर अड़ी हुई थी कि उस मुसलमान लड़के से ही विवाह करवाना है और वही मैं हूँ कि मेरा उसकी तरफ से मन ही हट गया है। मुझे एयर-होस्टैस की बहुत बढ़िया नौकरी मिल गई है। परन्तु एक बात है कि मेरे मन को अभी पूरी शांति नहीं मिली।

लड़की की यह बात सुनकर उन्होंने अल्मारी में से एक और गुटका साहिब निकाला और गुरु ग्रंथ साहिब के आगे अरदास करके उस लड़की को देकर कहने लगे, कि यह जो चीज तेरी माता को दी है, उसे तू भी ले जा, तू भी रोज़ यह पाठ किया कर।

कुर्बान जाएं ऐसे गुरसिक्खों पर, जो विदेशों में बैठे ही संगतों को, दुखियों को सुखमनी साहिब से जोड़ रहे हैं। उस लड़की ने उन से गुटका साहिब लेकर अपने पर्स में डाल लिया और उसने भी नियम से प्रतिदिन पाठ करना शुरु कर दिया।

अभी पंद्रह दिन ही बीते होंगे उसे पाठ करते कि उसकी नौकरी का ग्रेड बढ़ गया। (एयर-होस्टैस की नौकरी में ग्रेड होते हैं— ए-ग्रेड, बी-ग्रेड, सी-ग्रेड।) श्रद्धा से रोज सुखमनी साहिब का पाठ करने के फलस्वरुप वह 'ए-ग्रेड' की होस्टैस बन गई। ए-ग्रेड होता है विमान में जो लग्जरी क्लास की महंगी टिकट वाली सवारियां होती हैं, उसी विमान में बी-ग्रेड वाले भी होते हैं। उन्होंने बताया कि एक दिन मैं विमान में यात्रा कर रहा था और वह यात्रियों को अटैंड कर रही थी। उसने जब मुझे देखा और कहने लगी कि मुझे आप से बहुत कुछ मिला है, मैं अभी आपको मिलने के लिए आ रही हूँ। थोड़ी देर बाद वह मुझे मिलने के लिए आई और कहने लगी कि मैं ए-ग्रेड की होस्टैस बन गई हूँ, मैं आपका दिया सुखमनी साहिब का गुटका हमेशा अपने पर्स में रखती हूँ। मुझे इसका बहुत सहारा है। मेरा मन भी अब भटकता नहीं।

इशारा लेना, गुरु प्यारो! वही लड़की जो सिक्खी को छोड़कर कहाँ चल पड़ी थी, उसकी माता के सुखमनी साहिब का पाठ करने

के फलस्वरूप उसका उधर से मुँह ही हट गया।

यह सुखमनी साहिब जी की बाणी की छठी महानता है। यह बाणी दूसरे का मन बदलाने में भी समर्थ है। हमारी मांग जायज हो, हमारे लिए दूसरे शरीर का मन भी बदलाती है। असुर वृत्ति के ख्याल को भी बदल कर देव वृत्ति वाले बनाती है। एक-एक अक्षर सत्य है। हीरे व लाल पड़े हुए हैं आपके पिता के घर में। इससे प्रेम डालना, एक बार मन से कह देना।

'धन्य श्री सुखमनी साहिब जी'

व 'धन्य श्री गुरु अर्जुन देव जी'

६. छठी विशेषता– यदि कोई व्यक्ति हमारे प्रति ईर्ष्या रखता हो, अपने नित्यनियम के अलावा श्री सुखमनी साहिब जी का नियम बढ़ा कर गुरु साहिब के समक्ष अरदास करें तो यह बाणी किसी दूसरे का मन भी हमारे प्रति बदल देती है। इस अद्‌भुत बाणी के प्रभाव को देखकर हमारा श्री सुखमनी साहिब से प्रेम हो जाए तो हमारा यह प्रयास सफल होगा।

–द्वारा : दास लेखक

सातवीं विशेषता

यदि कोई अवगुण छोड़ना हमारे वश में न हो, श्री सुखमनी साहिब जी का नियम बढ़ाओ, आपका अवगुण दूर करने की ड्यूटी गुरु अपने ऊपर ले लेगा।

प्रत्येक इन्सान में कोई न कोई गुण अवश्य होता है और अवगुण भी होते हैं। सांसारिक रसों में संलग्न हुए कई बार मनुष्य को अपने अवगुण की पहचान ही नहीं होती कि कौन-सा गुण है व कौन-सा अवगुण है। वह अवगुण किए जाता है। उदाहरण के तौर पर यदि कोई आदमी शराब पी रहा है, है अवगुण, परन्तु पहचान न होने के कारण वह निर्भीक होकर यह अवगुण किए जा रहा है। जिन्हें संगत प्राप्त हो गई किसी गुरसिक्ख गुरमुख की अथवा किसी दयावान की, उसकी संगत में मन साफ हो गया, पहचान हो जाती है कि कौन-सा कार्य अवगुण है। जब पहचान हो गई लेकिन काफी देर से अवगुण करते-करते आदत बन गई। अब वश नहीं अवगुण छोड़े जाएं। पर पहचान हो गई कि यह कार्य ठीक नहीं, अब निर्भीक होकर सरेआम नहीं करता लेकिन छिप-छिप कर करता है। क्योंकि पहचान हो गई है कि यह अवगुण है।

बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि अपने अवगुण की पहचान हो जाना भी उसकी कृपा है। बाबा जी का वचन है अकेले बैठ कर अपने गुनाहों को याद करो। भाव अपने अवगुण स्मरण रखो। बहुत बड़ी बात है। मालूम तो हो कि यह अवगुण है। सो

संगत जी–

कई अवगुण ऐसे होते हैं, जिन्हें छोड़ पाना हमारे वश में नहीं होता। कई ऐसी बुरी चीजें होती हैं, जो हम छोड़ना चाहते हैं, परन्तु हमारा वातावरण, यारी-दोस्ती, रिश्तेदारी, सगे-संबंधी ऐसे होते हैं, छोड़ना चाहते हुए भी नहीं छोड़ पाते। कोई भी अवगुण, जैसे कह लो, मांस खाना बहुत बड़ा अवगुण है। कई छोड़ना चाहते हैं, परन्तु नहीं छोड़ पाते, क्योंकि रसना को स्वाद लगा है। शराब पीना कई छोड़ना चाहते हैं, पर यारी-दोस्ती, मित्रता ऐसी बन गई, नहीं छोड़ पाते। रोमों का अपमान कई महिलाएं छोड़ना चाहती हैं, पर नहीं छोड़ सकती, क्योंकि वातावरण, रिश्तेदारी, माहौल, सोसाइटी ऐसी बनी होती है, नहीं छोड़ सकती।

एक बात याद रखो, जो भी कोई अवगुण, आप छोड़ना चाहते हैं, लेकिन आपके वश से बाहर हो, गुरु नानक के घर का सरल ढंग है, महापुरुष युक्ति बताते हैं। कहते थे कि जितना भी आप नित्यनियम करते हो, उसके अलावा एक पाठ सुखमनी साहिब का रोज़ अथवा जितना भी आप उद्यम कर सकते हो, करके नित्य उस अवगुण हेतु गुरु के समक्ष अरदास करते जाओ। गुरु की डयूटी लग जाएगी, आपका वह अवगुण दूर करने की। गुरु नानक का घर इतना निराला है कि बाणी पढ़कर गुरु से ऐसा प्रेम हो जाता है कि हमारी दुर्मति दूर करने की डयूटी भी गुरु स्वयं पर ले लेता है।

काफी समय पहले की बात है, कोई महिला नई-नई आई संगत में। स्वभावत: कहीं मेल हुआ और वचन चल पड़ा 'आई-ब्रो' बनाने पर। उस महिला को विनती की कि यह न बनाया करो। वह महिला कहने लगी किं हमारा वातावरण, सगे-संबंधी, रिश्तेदारी ऐसी बन चुकी है कि यदि न बनाएं तो निर्वाह नहीं होता, सभी व्यंग्य करते हैं। मैं चाहती भी हूँ छोड़ना, पर छोड़ नहीं सकती। कहने लगी कि संगत में विचार सुनकर, कई बार मेरे मन में आता है कि छोड़ दूँ आई ब्रो बनाने, छोड़ दूँ रोमों का अपमान करना, क्योंकि इसमें कलगीधर पिता की नाराज़गी है, किन्तु मेरा मन अभी इतना मज़बूत

नहीं हुआ कि छोड़ दूँ।

दास को उसकी यह बात सुनकर बड़ी खुशी हुई कि इसे संगत में आकर यह ज्ञान तो हो गया है, बात मन को तो छू गई है कि यह दुष्कर्म है। क्योंकि यह भी एक अवस्था होती है, गुरु नानक के घर की कक्षा है।

एक समय ऐसा होता है जब इन्सान को यह पता ही नहीं होता कि भला क्या है और बुरा क्या है। जैसे-जैसे संगत करें, पहले वह बुरा काम छोड़ा नहीं जाता, पर बुरे एवं भले काम की पहचान हो जाती है, जिसे यूं भी कह लो कि मन साफ हो जाता है। अब बुरा काम करते भय आता है। छोड़ा नहीं जाता, लेकिन सूझ हो जाने के कारण, वह काम करते समय भय आता है। जब तक संगत नहीं मिली, न ही ज्ञान की आँख खुली, वह यही कहेगा रोम काटना, अण्डा-मीट खाना कोई गुनाह नहीं।

दास को उस महिला की यह बात सुनकर बड़ी मन को खुशी हुई कि शुक्र है इसकी ज्ञान की आँख तो खुली है, गुरु नानक के घर की वह कक्षा तो मिल गई है, जहाँ बुरे-भले की पहचान हो जाती है। उसने कहा कि मेरी तीव्र अभिलाषा है कि मैं रोमों का अपमान करना छोड़ दूँ।

एक बात याद रखना। अवगुण की पहचान होना व अवगुण को छोड़ने की अभिलाषा होना भी एक बहुत बड़ी बात है, क्योंकि सामान्य व्यक्ति को तो अपने भीतर के अवगुण नजर ही नहीं आते और जब तक अपने अवगुण नजर न आएं, तब तक उन्हें दूर करने का ख्याल भी पैदा नहीं हो सकता। जब हम अपने अवगुणों को समझ जाते हैं, फिर धीरे-धीरे उन्हें अपने जीवन में से निकालने की कोशिश करते हैं।

जब उस महिला ने यह कहा कि मेरी अभिलाषा है, मेरा मन चाहता है कि मैं यह अवगुण छोड़ दूँ, तो दास ने महापुरुषों द्वारा मिली सुमति अनुसार उसे विनती की कि अपने नित्यनियम के अलावा एक पाठ सुखमनी साहिब का रोज़ाना इस अवगुण छोड़ने

के संबंध में कर लिया कर। सप्ताह बाद, शहीदां साहिब अथवा दरबार साहिब अथवा जहाँ भी श्रद्धा हो, देग करा कर अलग अरदास करती जा कि हे सच्चे पातशाह! यह एक अवगुण है मेरी जिन्दगी में जो जाता नहीं, तू रहमत कर, इतने पाठ सप्ताह के, इस अवगुण को छोड़ने के लिए सतिगुरु तेरी कृपा से हाजिरी लगाई है। आपने यह सेवा ली है।

वह महिला इसी तरह प्रतिदिन एक पाठ करके इस अवगुण के लिए प्रार्थना करती रही। देखो गुरु साहिब की विधि! किसी के घर यह महिला सत्संग पर गई। एक बड़े साधना वाले विरक्त महापुरुष वहाँ आए थे। इसने उन्हें कहा कि मेरे बच्चे मेरी आज्ञा में नहीं हैं। महापुरुष ने कहा कि घर जाकर शीशे में अपनी शक्ल देखना कि क्या तेरा चेहरा माता साहिब कौर से मिलता है। क्या हो गया है मति को। बच्चे क्या आज्ञा का पालन करें। ऐसी महापुरुष की बात हृदय में लगी कि विधि बन गई सुधरने की।

कहाँ वह महिला स्वयं नहीं थी रोमों का अपमान छोड़ती और कहाँ उस महिला पर इतनी कृपा हो गई सुखमनी साहिब की कि बाणी ने भीतर इतना मजबूत कर दिया कि उस महिला ने अनेकों को प्रेरणा देकर इस अवगुण से छुड़ाया।

इतना लाभ है सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ने का। यदि सुखमनी साहिब का आँचल पकड़ लें तो गुरु की डयूटी लग जाती है हमारी दुर्मति, हमारे अवगुण को दूर करने की। गुरु अर्जुन देव जी फुरमाते हैं :–

'सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै॥'

(अंग २८६)

अर्थ समझना–'दुरमति' कहते हैं खोटी बुद्धि को, 'हिरै' से भाव है दूर करना। अर्थात् गुरु की डयूटी लग जाती है सिक्ख की दुर्मति को दूर करने की। आवश्यकता है युक्ति की–

'सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ॥'

(अंग ४६८)

दास बाणी के भरोसे से, उसकी कृपा से, दावे से यह लिख रहा है कि जब आप इस तरह युक्ति के साथ अपने नित्यनियम के अलावा सुखमनी साहिब की बाणी पढ़कर अपने किसी अवगुण को छुड़ाने के प्रति प्रार्थना करोगे, तो सप्ताह नहीं तो १५ दिन, १५ दिन नहीं तो महीना, महीना नहीं तो दो महीने अथवा थोड़ा और अधिक समय आपका वह अवगुण, बाणी नाश कर देगी। आपके वह दुष्कर्म, जो वह अवगुण आप से करवाते हैं, बाणी उन दुष्कर्मों को बदल देगी।

निश्चित बात है, जब आप बाणी पढ़कर गुरु के चरणों में प्रार्थना करते हो कि मेरा अमुक अवगुण चला जाए लेकिन आपके कर्मों में लिखा है वह अवगुण, क्योंकि यह भी कर्मों की खेल होती है। यदि हमारे कर्मों में लिखा है बेशुमार क्रोध आना तो हम क्रोधी होंगे, यदि किसी के कर्मों में लिखा है कि यह आदमी भरपूर झूठ बोलेगा, तो यह अवगुण उस में होगा।

आप कभी नोट करो, कई बार एक ही उदर में से दो पुत्र जन्म लेते हैं, एक बड़ा सहज वाला होता है, जबकि दूसरे का स्वभाव बड़ा क्रोध वाला होता है। यह भी कर्मों की खेल है, परन्तु गुरु नानक का घर बहुत बख्शिश वाला घर है, बड़ा ही रहमत वाला घर है। उसके पास कई मार्ग हैं हमारे अवगुण को नाश करने के। वह चाहे तो इन चीजों का मोड़ किसी अन्य तरफ मोड़ सकता है। किसी ऐसी चीज पर भी डाल सकता है जिसका नुक्सान कोई नहीं और हमारा फायदा हो जाता है।

दास कई बार जब इतिहास पढ़ता है, तो ऐसी-ऐसी निराली बीती बातें पढ़ने को मिलती हैं कि सोचने से भी परे होती हैं।

दास संत विसाखा सिंघ जी का इतिहास पढ़ रहा था। बड़ी हैरानी हुई, जिसे आप जी के साथ व्यक्त कर रहा हूँ। एक बार किसी गुरसिक्ख प्रेमी ने संत विसाखा सिंघ जी को निवेदन किया कि हमारे घर भोजन ग्रहण करो। महापुरुष कहने लगे कि पहले २०० पाठ जपुजी साहिब के कर, फिर आएंगे (क्योंकि सच्चे संत, महापुरुषों की यही भेंट होती है। उनकी यही भावना होती है कि

कोई किसी तरीके से बाणी से जुड़ जाए। उन्हें अन्य कोई सांसारिक लोभ नहीं होता।)

वह भी कोई प्रेमी था। अन्तर्मन से आकर्षण था कि महापुरुष मेरे घर किसी तरीके से भोजन ग्रहण करें। थोड़े दिनों के पश्चात २५० पाठ करके फिर महापुरुषों के चरणों में जाकर विनती की कि महापुरुष जी! मेरे घर भोजन ग्रहण करो। महापुरुषों ने मंजूरी दे दी। जिस दिन महापुरुष उस प्रेमी के घर भोजन ग्रहण करने गए, ४-५ शरीर और भी उनके साथ थे। बड़े प्रेम से उसने सभी को भोजन करवाया। भोजन करने के पश्चात नम्रता सहित विनती की "महापुरुष जी! आपसे एक भीख मांगनी है।"

महापुरुषों ने सोचा धन मांगेगा या औलाद मांगेगा या कोई अन्य शारीरिक कष्ट होगा, उसकी विनती करेगा, लेकिन उसकी विनती सुनकर चकित हो गए। जब उसने कहा, महापुरुष जी! मेरी अरदास कर दो कि मेरा स्वभाव सहज वाला हो जाए, शांतमयी हो जाए, क्योंकि मुझे क्रोध बहुत आता है। जब मुझे गुस्सा आता है तो पता ही नहीं लगता व आपे से बाहर हो जाता हूँ। १०-१५ मिनट बाद महसूस होता है कि मैंने बहुत गलत किया है, लेकिन जब मुझे क्रोध आता है तो पता ही नहीं चलता।

(कई बार हमें पता होता है अपने अवगुण का, लेकिन उसे दूर करना हमारे वश में नहीं होता। वह भी भाग्यशाली हैं जो अपने अवगुणों की विचार करते हैं।)

जब उस गुरसिक्ख ने महापुरुषों के समक्ष अपने अवगुण को दूर करने की विनती की तो महापुरुषों ने अंतर्ध्यान होकर देखा कि इसने पूर्व जन्म में कर्म ऐसे किए हैं कि इसके कर्मों में लिखा है क्रोध करना। सोच में पड़ गए कि क्या करें, है भी प्रेमी, २५० पाठ जपुजी साहिब के भी किए हैं, भोजन भी करवाया है प्रेम से। यदि कुछ युक्ति न देकर गए इसकी भावना पूरी न की तो क्या मज़ा आया। उनके हृदय में से अरदास निकली, सतिगुरु! कृपा करो, इसके स्वभाव में सहज आ जाए। आगे से इशारा हुआ कि इसके कर्मों में लिखा है क्रोधी होना। महापुरुष इतने दयालु कि दोबारा

अरदास की कि सतिगुरु ! कोई विधि बनाओ, अवगुण कैसे भी चला जाए। अरदास के बाद जो प्रेरणा हुई नियम की, वह यह दी।

महापुरुष कहने लगे, संतोखसर साहिब से अमृत लाना है, कटोरी में डालकर एक पाठ सुखमनी साहिब का करके अमृत पीना है। प्रत्येक सातवें दिन अरदास करनी है। १३ सप्ताह २ बार हाजिरी लगानी है। ऐसा संतोखसर का वर, संतोष का, ऐसी सुखमनी साहिब की बख्शिश हुई। साखी में लिखा है इनके पास एक प्लाट था। इनके पड़ोसी ने अपने प्लाट की दीवार ३-४ इंच इनके प्लाट में रख दी थी। परिवार कहता है कुछ करो परन्तु उस क्रोधी पर इतनी कृपा हो चुकी थी और कहता था जगह साथ जानी है। कोई बात नहीं, ४ इंच इधर क्या और उधर क्या। सुखमनी साहिब की बाणी ने क्रोध के अवगुण को समाप्त कर दिया था।

महापुरुष बाबा नंद सिंघ जी तो गुरु नानक के प्रेम में यहाँ तक वचन करते थे कि जीवन में— किसी समय, ऐसा समय बन जाए, तेरे भीतर किसी प्रकार की वासना की अग्नि हावी हो जाए अथवा कोई भीतर विकार हावी हो जाए, कोई शरीर ऐसी बात कह दे, बर्दाश्त न हो, गुस्सा आ जाए, क्रोध हावी हो जाए तो गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब के चरणों में झुक कर यह पढ़ा करो :

"गुरु नानक दाता बख्श लै।

बाबा नानक बख्श लै।"

बड़ी गहराई की बात है, मन में बसा लो। जब भी भीतर अँधेरी चल पड़े वासनाओं की, विकारों की, नियंत्रण से बाहर हो जाए, झुक पड़ो सतिगुरु के चरणों में। फिर देखो कुछ समय में ही कैसे होता है, कैसे पहुँचता है, कैसे भीतर शांति प्रदान करता है।

अमृतसर में सुल्तानविंड गांव का एक शरीर है, उसने अपनी आप-बीती सुनाई। कहता है—एक बार मैं साईकल पर गांव से इधर को आ रहा था। ६ महीने पहले, किसी शरीर ने उसके पैसे मारे थे, उसका ध्यान अचानक उस शरीर की तरफ चला गया। दिमाग में उसके विरुद्ध ख्याल चलने शुरु हो गए। भीतर वेदना शुरु हो

गई, क्लेश शुरु हो गया। उस समय न वह आदमी सामने था, न कोई बात हुई, बस अचानक ही दिमाग उधर चला गया और भीतर घबराहट शुरु हो गई। मन में इतना क्लेश बढ़ गया कि नियंत्रण करना मुश्किल हो गया। इतनी भीतर गुस्से की अग्नि हावी हो गई कि मन कहे, अभी उसके घर जाऊँ और उसे छोड़ना नहीं। उसके घर वालों को, उसके मोहल्ले में जाकर उसका अपमान करूँ।

गुरुमुख था, जानता था, क्रोध बहुत बुरा है। इसने मुझे वश से बाहर कर देना है, जिससे नुक्सान हो सकता है। मार्ग में ही गुरुद्वारा है अटारी साहिब। जब गुरुद्वारे के आगे से गुजरा तो वहाँ साईकल खड़ा करके, गुरुद्वारे के भीतर चला गया और जाकर अरदास की, ''सतिगुरु जी! कृपा करो। जिस शरीर ने आज से ६ महीने पहले मेरे पैसे मारे थे, आज अचानक दिमाग में उसके प्रति बुरे ख्याल आने शुरु हो गए हैं। भीतर क्रोध इतना भड़क गया है और मुझे डर है कि मैं कहीं आपे से बाहर न हो जाऊँ। कहीं कोई ऐसा कदम क्रोध में आकर न उठा बैठूं, जिसके कारण मुझे बाद में जीवन भर पछताना पड़े। कहीं मैं उसके घर जाकर उसे अपशब्द न बोल आऊँ। उससे लड़ाई-झगड़ा न करने चला जाऊँ, आप कृपा करके मुझे संभाल लो।''

वाह वाह साध संगत! कुर्बान जाएं, जिसे अवगुण की पहचान हो जाए और गुरु के आगे अवगुण नंगा कर दे कि मेरे वश में नहीं, सतिगुरु तू संभाल, मुझे सीख दीजिए। उस शरीर ने अपनी आपबीती सुनाई। कहने लगा कि मैंने १५ मिनट वहाँ ही सतिगुरु के चरणों में बैठ ६ अष्टपदियों का पाठ किया। वह कहने लगा, जब मैं ६ अष्टपदियाँ करने के पश्चात् वहाँ से उठा तो मेरे भीतर इतनी शांति आ चुकी थी कि कोई तनाव रहा ही नहीं था। सतिगुरु की कृपा हो गई।

दास का यह विचार व्यक्त करने का सिर्फ इतना ही मकसद है कि हमारा पिता, हमारा मालिक बहुत समर्थ है। वह सबकुछ कर सकता है। सब उसके अपने बनाए हुए रहस्य हैं, अपनी बनाई हुई लीला है।

आप अवगुण के प्रति सुचेत हो जाएं और नियम बढ़ाएं उस अवगुण के प्रति फिर कृपा हो जाती है।

बाबा जी वचन किया करते थे कि नम्रता रखने से विपत्ति का समय टल जाता है। कभी नोट कीजिए, एक मिनट की रखी नम्रता, जुबान पर किया नियंत्रण, बहुत बड़ी विपत्तियों को जन्म देने से बचा लेती हैं। महापुरुष वचन करते थे कि जुबान में से निकला हुआ एक भी गलत शब्द तख्ते पर बिठा सकता है और इसी जुबान में से निकला शुभ वचन, मीठा वचन राज सिंघासन पर भी बिठा देता है। दास ने नाम नहीं लेना, सिर्फ सूझ के लिए लिख रहा है कि कोई नेता था जिसके मुँह में से कोई ऐसा वचन निकल गया, मंच पर कोई ऐसी बात कह दी कि उसका सारा जीवन अस्त-व्यस्त हो गया।

आपके भीतर कभी ऐसी आँधी आए, जुबान से ऐसा बोल बोलने का खतरा हो, जिससे तख्ता मिलने का भय हो, पहले ही अँधेरी रोकने वाले के चरण पकड़ लो। जब देखो अन्दर काम खराब हो रहा है, कोई विकार जन्म ले रहा है, तो उसी समय अपने घर में ही चाहे यदि गुरु साहिब का प्रकाश है तो वहाँ जाकर यदि नहीं तो जो भी कोई आपने पूजा का स्थान बनवाया है, जहाँ बैठ कर बाणी पढ़ते हो या गुरु साहिब के स्वरूप के आगे ही झुक कर प्रार्थना कर दिया करो।

कभी करके देखना, गुरु की डयूटी लग जाती है, आपके भीतर की अँधेरी को कंट्रोल करने की। वह संभालता है, अन्यथा यह अँधेरी घर उजाड़ देती है, परिवारों में विवाद खड़ा कर देती है, भाईयों में दुश्मनी खड़ा कर देती है, तलाक तक की नौबत ले आती है, भागीदारियां तोड़ देती है, सब कुछ होते जीना कठिन कर देती है। दास गुरु के भरोसे से दावे से लिख रहा है कि जो इस प्रकार गुरु की शरण लेगा, गुरु का सहारा लेगा, वह हर प्रकार के विकारों की, वासना की अग्नि से बच जाएगा। गुरु उसके सारे अवगुण अपनी बख्शिश से दूर कर देगा।

कुछ समय हुआ, दास को एक बहन मिली और कहने लगी

कि बड़ा कठिन-सा समय बन गया है, मुझ पर बड़ी मुश्किल की घड़ी बन गई है। दास ने पूछा कि ऐसी क्या बात हो गई है? वह कहने लगी, कि वैसे तो गुरु की बड़ी बख्शिश है, बाणी भी पढ़ती हूँ और संगत भी करती हूँ, अण्डा, मीट खाना भी गुरु की कृपा से बड़े सालों से छोड़ा है, लेकिन दो महीने हो गए हैं, पता नहीं क्यों मेरा अण्डा खाने को बहुत मन करता है, बार-बार ध्यान इधर जाता है। सूझ भी है, पता भी है कि नहीं खाना, मगर मन जबरदस्ती इधर दौड़ता है। किसी समय तो इतनी उत्तेजना उत्पन्न होती है कि जब किसी को खाता देखती हूँ तो दिल करता है कि इससे छीनकर खा लूँ।

(यह कई बार ऐसा होता है, गुरु की कृपा से, कोई अवगुण आपके जीवन में से निकल चुका होता है, लेकिन कई बार पूर्व कर्मों के कारण वासनाएं, विकार जन्म लेते हैं, विपत्ति का समय बन जाता है।)

बहुत बढ़िया प्रश्न था उस बहन का, पता भी है नहीं खाना, लेकिन मन स्थित नहीं होता, क्या करूँ? यहाँ दास एक बात स्पष्ट कर दे, कई शरीर यह कह देते हैं कि अण्डा खाना जायज़ है, लेकिन बाणी की पंक्तियों से भी हमें सीख मिलती है कि अण्डे में भी वही बसता है :–

अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता॥
एकु पुरबु मै तेरा देखिआ तू सभना माहि रवंता॥

(अंग ५९६)

भाई वीर सिंघ जी के वचन हैं कि जिन वस्तुओं में २०-२५ प्रतिशत जान है, वही खानी जायज़ है, जिन में पूरी जान है, वह खानी जायज़ नहीं हैं। जो सब्जियां अथवा फल हम खाते हैं इन में चौथा भाग जान गिनी गई है। पत्तों में भी जान है, यह भी विकास करते हैं। इन में भी २५ प्रतिशत जान गिनी जाती है। अर्थात् कितने ही पदार्थ निरंकार ने हमारे खाने के लिए बनाए हैं। जिन में चौथा भाग जान गिनी जाती है, वही खाने जायज़ हैं, जिनमें पूरी जान

है, वह खाने जायज़ नहीं।

अब उस बहन का प्रश्न था कि मन किसी ऐसे पदार्थ की ओर चल पड़ा है जो गुरुमत्त अनुसार खाना जायज़ नहीं। दास ने उसे विनती की कि तुम साहस रखना, हिम्मत न हारना, अपने मन को हावी न होने देना। गुरु की कथा-कहानियां सुना कर अपने मन को उधर मोड़ने का यत्न करना और साथ ही अपने मन को यह समझा कि हे मन! जिस बात में मेरा मालिक, मेरा कलगीधर पिता सहमत नहीं, तू उधर क्यों दौड़ता है।

एक बात निश्चित समझ लेना कि सारे सुख, सारी खुशियाँ गुरु की प्रसन्नता में हैं। यदि गुरु की खुशी न मिली तो सुख भी दुख बन जाते हैं, गुरसिक्ख गुरु मन से प्रेम करने वाले का तो यदि गुरु रूठ जाए, उसका तो जीना मुश्किल हो जाता है, एक पल भी कटना कठिन हो जाता है तभी तो बाबा ईशर सिंघ जी पढ़ाते थे—

मेरा रूठे न कलगियों वाला,
जग चाहे सारा रूठ जाए।'

दास ने उस बहन को विनती की कि पहली बात तो तुम अपने मन को मजबूत रखना और दूसरा तुम अपना जप-तप बढ़ा दो। अपने नित्यनियम के अलावा एक पाठ सुखमनी साहिब का नित्य करके गुरु साहिब के चरणों में अरदास करना कि सतिगुरु जी! आप ही कृपा करो और मेरे मन को बदलो। मेरा मन ऐसी चीज की ओर दौड़ रहा है जिसकी गुरुमत्त अनुसार मनाही है। आप ही मुझे संभाल लो, कहीं मैं अपने मन के पीछे लगकर गुरुमत्त के विपरीत न चल पड़ूँ। मेरा यह मन जो कुमार्गगामी हो रहा है, यह आप जी की ही कृपा से वश में आ सकता है। क्योंकि बाणी की भी पंक्तियाँ हैं—

मनु बसि आवै नानका जे पूरन किरपा होइ॥

(अंग २६८)

यह उसी महिला ने स्वयं बताया कि एक महीना पाठ करने

पर अरदास करने के पश्चात पता नहीं क्या वृत्ति बन गई कि अन्तर्मन में ऐसे नज़र आने लग पड़ा कि जैसे किसी ने अण्डा पकड़ा है उबला तो उस अण्डे को कीड़े चिपके हुए हैं। अन्तर्मन में ऐसे नक्शा बन गया, जो मन कहता था किसी के हाथ से छीन कर खा लूँ, अब ध्यान भी आए तो अण्डे से कीड़े नजर आते थे। अब ख्याल भी आए कि छीनकर क्या खाऊँ अण्डा, अपितु उलटी आने को करती थी कि अण्डे से कीड़े चिपके हैं।

अर्थात् उसकी कृपा से ही मन नियंत्रण में आता है। एक बात याद रखना, जब हम बाणी का नित्यनियम बढ़ा कर गुरु साहिब के चरणों में प्रार्थना करते हैं तो वह स्वयं हमारी बाजु पकड़ता है। उसकी डयूटी लग जाती है, हमारे भीतर पैदा हुए अवगुण को, दुर्मति को, विकार को, वासना को दूर करने की। जैसे बाणी की भी पंक्तियाँ हैं–

''बाह पकरि कढि लीने अपुने ग्रिह अंध कूप ते माइआ॥''

(अंग १२१८)

सिर्फ आवश्यकता है उसकी शरण में आने की, उसका बनने की, उसके चरणों में विनम्र होकर विनती करने की।

यह सुखमनी साहिब जी की सातवीं विशेषता जो आप जी के साथ गुरु की कृपा से दास व्यक्त कर रहा है। यदि कहीं इसे मन में बसा लो तो आप स्वयं ही कहेंगे कि कौन-सी ऐसी वस्तु है जो गुरु घर में नहीं। कोई कामवासना तेरे नियंत्रण में नहीं, कोई विकार तेरे नियंत्रण में नहीं, कोई अहंकार, लोभ, क्रोध, कोई भी अवगुण हो, अपने अवगुण के प्रति नियम बढ़ा दो। गुरु डयूटी लेता है, तेरे उस अवगुण को दूर करने की।

एक सुमति मिली थी बाबा ईशर सिंघ जी कलेरां वाले महापुरुषों से। महापुरुष बैठे थे, कोई गांव का सरपंच दर्शन करने के लिए आया; साथ ४-५ शरीर और भी थे। दर्शन किए और बैठ गए। वह शरीर कहने लगे बाबा जी को यह गांव का मुखिया है। बाबा जी अन्तर्यामी, उसकी ओर देखकर कहने लगे, ''भाई कोई

बुरी चीज तो इस्तेमाल नहीं करता।'' वह आगे से कहता, ''यदि सच बताऊँ तो मैं शराब पीता हूँ।'' बाबा जी उसके सच बोलने पर बड़ा खुश हुए। कहने लगे शाबाश, तेरे सच बोलने पर कुर्बान जाएं। अपने अवगुण को सब के सामने नग्न कर दिया है, तू असली मर्द है।

(हमारे पास भी कई आते हैं शरीर, शराब पीने वाले होते हैं लेकिन पूछने पर कह देते हैं कि हम नहीं पीते या कहते हैं कभी-कभी पीते हैं, यूं नहीं पीते। कभी कोई विवाह-शादी आ जाए तो ही पीते हैं भाव कि सच बोलने की हिम्मत, अपने अवगुण को नग्न करने की हिम्मत भी किसी विरले के पास ही होती है) तो ही बाबा जी कहते, ''असली मर्द निकला है, सच बोला है।''

बाबा जी फिर कहने लगे, ''छोड़ दे, न पीया कर, क्योंकि शराब पीना अच्छा नहीं।'' वह आगे से कहने लगा, ''बाबा जी मैं छोड़ नहीं सकता, मेरे वश में नहीं।'' बाबा जी छाती पर हाथ मार कर कहने लगे, ''बड़ा मर्द है भाई तू, सच कह दिया है कि पीता भी हूँ और छोड़ भी नहीं सकता।'' (तो कुछ हमारे सामने कह देते हैं, अब नहीं हाथ लगाएंगे और करते सब कुछ जाते हैं।) बाबा जी ने दो-तीन बार उसे छोड़ने की प्रेरणा दी कि यह बुरी चीज है, छोड़ दे। उसका यही जवाब था, ''बाबा जी मेरे वश में नहीं, मैं छोड़ नहीं सकता।''

जब बाबा जी ने देखा कि बिल्कुल बेबस है अपने अवगुण से तो बाबा जी कहने लगे, ''अच्छा फिर छोड़ नहीं सकता तो एक वचन मान ले, एक पाठ सुखमनी साहिब का प्रतिदिन, अपने नित्यनियम के अलावा बढ़ा दे और सप्ताह बाद देग करा कर अरदास करता जा कि सतिगुरु, मेरी शराब छुड़ा दो।'' वह कहने लगा, ''जी मैं यह कर लूंगा।''

जब वह सभी चले गए तो बाबा जी के बिहंगम कहने लगे, ''बाबा जी, आप ने उसे यह क्या कह दिया कि नहीं छोड़ सकता तो कोई बात नहीं। आपने उसे चेतावनी करनी थी।'' बाबा जी कहने लगे, ''भाई! जो साथ दवाई दी है आपने वह नहीं देखी।''

वह कहने लगे, "हम कुछ समझे नहीं।" बाबा जी कहने लगे, "जो एक पाठ सुखमनी साहिब का प्रतिदिन नित्यनियम से अधिक करके गुरु के आगे अरदास करने के लिए कहा है, वह दवाई दी है, अवगुण छुड़ाने की।" बाबा जी कहने लगे, "जब एक पाठ सुखमनी साहिब जी का नित्य अपने अवगुण के प्रति करेगा और विनती करेगा सतिगुरु के चरणों में कि मुझसे यह शराब नहीं छूटती, तू छुड़ा दे, गुरु की डयूटी लग जाएगी उसकी शराब छुड़ाने की। गुरु स्वयं विधि बनाएगा कि इसके जीवन में से यह अवगुण कैसे निकालना है। गुरु की विधि बहुत बड़ी है। वह चाहे शरीर को कोई त्रुटि लगा दे और डाक्टरों ने कह देना है यदि आप यह छोड़ोगे तो ही स्वस्थ होगे।"

प्यारो, यह सुखमनी साहिब जी की बख्शिश है, कोई भी अवगुण हो, जिसे आप छोड़ना चाहते हो, लेकिन विवश हो, छोड़ न सको, छोड़ना आपके वश में न हो, हाथ पर हाथ रखकर न बैठ जाना। अपने उस अवगुण के प्रति सुखमनी साहिब का नियम बढ़ाकर गुरु के चरणों में अरदास करो, सतिगुरु अवश्य कृपा करेंगे, उस अवगुण को आपके जीवन में से निकालने की, अवश्य कोई न कोई विधि बताएंगे।

७. यह सातवीं विशेषता यदि आप जी कोई अवगुण छोड़ना चाहते हो पर वश में नहीं, छोड़ा नहीं जा रहा। आप जी श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी का नियम बढ़ा लो, फिर अवगुण दूर करने की डयूटी गुरु साहिब जी स्वयं पर ले लेते हैं। इस बाणी की कमाल की बख्शिश को पढ़कर हमारी खुराक श्री सुखमनी साहिब बन जाए तो हमारा यह प्रयास सफल होगा।

—द्वारा : दास लेखक

आठवीं विशेषता

"श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी जंत्र-मंत्र, भूत-प्रेत, वहम-भ्रम किसी की ईर्ष्या से भी रक्षा करती है।"

संसार में ईर्ष्या का बड़ा जोर है। जिन्हें सूझ नहीं, वह किसी को प्रगति करते नहीं देख सकते। आज के युग में उनकी संख्या बहुत है, जो अपने दुख से इतने दुखी नहीं, लेकिन दूसरे को सुखी देकर दुखी हैं। संगत न की हो तो इन्सान इन बातों में ही फंसा रहता है--अमुक मुझ से आगे क्यों निकल गया है, अमुक को खुशी क्यों मिल गई है, ईर्ष्या आ जाती है। यहाँ इतनी बात याद रखना कि ईर्ष्या करने वाले कोई बाहर के नहीं होते, अपने निकट एवं खून के रिश्ते में से ही होते हैं। गुस्सा मत करना, लेकिन यह सच्चाई है, ऐसे लोग आपके अपने करीबियों में ही होते हैं।

यह पढ़कर कहीं घबरा मत जाना, गुरु अर्जुन देव जी की प्रदान की अमूल्य बाणी श्री सुखमनी साहिब का सहारा ले लो। यदि आपके पास सुखमनी साहिब जी की बाणी का सहारा है तो यह बाणी आप से ईर्ष्या करने वाले से भी रक्षा करती है। यदि आप सुखमनी साहिब का पहरा रखोगे तो जो कोई आपका बुरा करने की योजनाएं बनाता है, सुखमनी साहिब की बाणी आपको उससे बचाएगी।

गुरु घर कहता है कि शुभ कर्म करने चाहिएँ। आप कभी नोट करो। जब कोई शुभ कर्म करे उसकी आटोमैटिकली शोभा होती है और जब उसकी शोभा हो, बीच में से, अपने निकट के ही होते हैं, कोई बाहर से नहीं, ज़िन से किसी को शोभा सहन नहीं होती,

बर्दाश्त नहीं होती, फिर वह उसका बुरा करने की योजनाएं बनाते हैं।

आजकल का जो समय जा रहा है, इतना भारी कलियुग है कि ईर्ष्या-द्वेष-भावना का हद से बढ़कर जोर है। थोड़ी-सी कोई उन्नति करे, समृद्धि की ओर जाए, अथवा कोई बाणी की ओर ही बढ़ जाए, सिमरन की ओर अग्रसर हो जाए, अपने ही नहीं छोड़ेंगे, बिल्कुल करीब के ही बर्दाश्त नहीं करते, ईर्ष्या रखने लग जाते हैं। (यहाँ तक देखा गया है कि कई बार एक शरीर दूसरे को 'फतह' (प्रणाम) भी नहीं बुलाता कि यह दूसरी टकसाल का है, चाहे टकसालें सभी का मूल तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि लोगों की ईर्ष्या से डरकर आप शुभ कर्म करने छोड़ दो। शुभ कर्म डट कर करो, परन्तु साथ सुखमनी साहिब की बाणी की बाड़ लगा लो। फिर ईर्ष्या करने वाले आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे, प्रगति करते जाओगे।

एक कीर्त्तनीया है, बड़ा मधुर कीर्त्तन करता है, बहुत ही रस है उसके कीर्त्तन करने में। उसकी एक बात दास को बहुत अच्छी लगी, मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा। दास आप जी से व्यक्त कर रहा है, पढ़ कर अपने लिए सीख लेना। उस कीर्त्तनीए ने एक नियम बनाया है कि जब भी कहीं कीर्त्तन करता है, कीर्त्तन की समाप्ति के पश्चात, रसना को तब तक कुछ नहीं लगाता जब तक एक पाठ सुखमनी साहिब का न कर ले। कीर्त्तन करने के पश्चात सुखमनी साहिब जी के पाठ की बाड़ लगाता है कि सतिगुरु शुक्र है, सेवा ली है।

(यहाँ एक बड़ी सूक्ष्मता है। कई जिन्हें सूझ नहीं कि वह अच्छा कीर्त्तन कर लें, अच्छी कथा कर लें अथवा कोई अन्य शुभ कर्म कर लें और 'मैं' (अहंत्व) में आ जाते हैं, चाहते हैं, कथा-कीर्त्तन के उपरांत उनकी सेवा हो। यह अपना-अपना स्वभाव है, कई सेवा करवा कर खुश होते हैं। चाहते हैं कि कोई हमारे पांव दबाए, मालिश करे अथवा अन्य कई प्रकार की सेवा हो, लेकिन एक बात याद रखना इससे कमाई खत्म हो जाती है। इसलिए गुरुमुख जिसे

सूझ है, वह इन चीजों से बचता है। बहुत आवश्यकता अनुसार, किसी समय जरुरत हुई तो करवा ली।)

एक कोई अनजान पाठी है, २-३ घण्टे भूमिका देने के पश्चात अपनी सेवा करवाता है। कितना जमीन-आसमान का फर्क है उस कीर्त्तनीए में और उस पाठी में। एक 'मैं' में आ रहा है कि मैंने पाठ किया है, मेरी सेवा हो जबकि दूसरा जिसे सूझ है वह बाणी पढ़कर धन्यवाद करता है कि सतिगुरु ने सेवा ली है। इस तरह करने से वह अपनी होने वाली बड़ाई को बाड़ लगा रहा है, जिससे क्या होगा—उसकी शोभा को, बड़ाई को देखकर यदि कोई उससे ईर्ष्या करेगा अथवा ईर्ष्या में आकर उसका नुक्सान करने की कोशिश करेगा तो कर नहीं सकेगा।

इशारा लेना कि यदि कोई अपनी खुशियों के पश्चात्, मान-सम्मान-शोभा मिलने के उपरांत सुखमनी साहिब जी का सहारा लेता है तो यह बाणी उसे दुनिया की ईर्ष्या से बचाती है। दास तो हैरान है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में एक पंक्ति है—

"अवखध सभे कीतिअनु निंदक का दारू नाहि॥"

(अंग ३१५)

अवखध का अर्थ है दवाई, सतिगुरु कहते हैं कि धरती पर सारी ही दवाईयां बनी हैं, लेकिन अफसोस निंदक के लिए कोई दवाई नहीं बनी कि इसे दी जाए और यह निंदा बंद कर दे। पर एक जगह गुरु ग्रंथ साहिब में आशय लिखा है :—

"निंदकु गुर किरपा ते हाटिओ।"

(अंग ७१४)

इशारा लेना, जिस के पास गुरुबाणी का धन है, उस पर गुरु की कृपा होती है, फिर निंदक, दोषी हट जाते हैं।

यह दोनों पंक्तियाँ गुरु ग्रंथ साहिब में से हैं। एक में कहते हैं कि निंदक के लिए कोई दवाई नहीं, एक में आश्य है कि गुरु की कृपा से निंदक-दोषी हट जाते हैं लेकिन गुरु की कृपा उन पर ही होती है जो गुरु की बाणी से जुड़ते हैं।

अमृतसर का एक परिवार है जिस में तीन भाई हैं और तीनों ही इकट्ठे थे, संयुक्त कार्य थे। उनकी आपस में बनती नहीं थी। उनके पिता जी दास को कहने लगे आप बीच में पड़कर इनका बंटवारा कर दो अन्यथा यह लड़-झगड़ कर कचहरियों में सब कुछ गंवा लेंगे।

उन तीनों को जब अलग-अलग किया गया, सम्पत्ति का बंटवारा किया गया, कुछ दुकानें थीं आपस में बांट दीं, और कोई दो-दो लाख के करीब तीनों के हिस्से आया। बंटवारा होने पर कोई महीने बाद ही एक भाई सुबह-सुबह ७ बजे दास के घर आ गया, मिठाई का डिब्बा लेकर और दास को कहने लगा कि हमने नई कार ली है।

दास कभी कार की तरफ देखे और कभी उस शरीर की तरफ। वह कहने लगा, "मैंने नई कार ली है, आप मुझे बधाई नहीं दे रहे, कभी कार की तरफ देख रहे हो और कभी मेरी तरफ।"

दास ने कहा, तुझे नई कार लेने की खुशी छाई हुई है जबकि मैं सोच रहा हूँ कि आज नहीं तो कल तेरी तरफ उंगली होनी शुरु हो जानी है। वह कहने लगा किस बात पर? दास ने कहा, दास ने ही आपके बीच में पड़ कर बंटवारा करवाया था। २-२ लाख आपके हिस्से में आया था और अभी महीना हुआ है इस बात को और तूने आज ३ लाख की कार ले ली है। तेरे भाईयों ने कहना है कि जब इकट्ठे थे तो यह अवश्य हेराफेरी करता रहा होगा, गुलक में से पैसे निकालता रहा होगा नहीं तो २ लाख रुपया हमारे हिस्से आया और वह भी कारोबार में लग गया और यह तीन लाख की कार बीच में से कैसे ले आया। वह कहने लगा, मैंने पचास हजार नकद देकर शेष किश्तों पर कार ली है। दास ने कहा, चाहे तू ठीक भी कहता होगा, सच्चा होगा, तो भी उन्होंने तो बात उड़ानी ही उड़ानी है।

वह भी मेरी बात सुनकर सोच में पड़ गया। कहने लगा, अब क्या करूँ? बच्चे बहुत जिद करते थे कार लेने के लिए, गुरुद्वारे जाने के लिए भी मुश्किल होती थी।

दास ने कहा, अब एक काम कर, यह कार अपने घर ले जा और सारा परिवार मिल कर ११३ पाठ श्री सुखमनी साहिब जी के हाज़िरी लगाओ। जब तक ११३ पाठ नहीं हो जाते, कार बाहर नहीं निकालनी। यह नहीं कि वापिस लौटा दो, लेकिन पहले बाड़ लगा लो, जो हमें गुरु-घर द्वारा देनें मिली हैं, उनका लाभ प्राप्त करो। पहले सारा परिवार मिलकर ११३ पाठ श्री सुखमनी साहिब के करो, फिर कार शहीदां साहिब गुरुद्वारे लेकर जाओ, बाबा दीप सिंघ जी के द्वार पर देग करवा कर अरदास करो। दास ने कहा, मेरा विश्वास है कि जब इस तरह अपने नियम के अलावा ११३ पाठ सुखमनी साहिब के करके कार बाहर निकालोगे, फिर सुखमनी साहिब की बाणी उन्हें मुँह नहीं खोलने देगी। अर्थात् कोई भी विधि बने, ध्यान ही नहीं जाएगा इस तरफ, चाहे आँखों में धूल पड़ने वाली बात बने, यह बाणी ईर्ष्या करने वालों से बचाएगी, क्योंकि बाणी की बाड़ लग जाएगी। अन्यथा ईर्ष्या करने वाला तो ढूँढता है कि कोई ˜मं ·च्चपंदज मिले और बात उड़ाएं।

दास की विनती मानकर वह चला गया और पाँच–छः दिन बाद ही फिर आ गया और कहने लगा कि हमने सारे परिवार ने मिलकर ११३ पाठ कर लिए हैं। (पाँच सदस्य थे वह) क्योंकि घर में नई चीज पड़ी होने के कारण सब को उत्सुकता लगी हुई थी कि शीघ्रातिशीघ्र इसका उपयोग करें।

दास ने कहा शाबाश है जो आपने दास की विनती मानकर पाठों की हाज़िरी लगाई है। अब कार शहीदां साहिब ले जाकर देग करवाओ। मेरा विश्वास है कि यह जो आपने सुखमनी साहिब की बाणी की बाड़ लगा ली है, यह अब आपकी ईर्ष्या करने वालों से रक्षा करेगी। यकीन करना उसके दोनों भाईयों का कोई ध्यान ही नहीं गया इसकी तरफ कि इसने कार ली है, कैसे ली है? जैसे सुखमनी साहिब जी के पहरे ने उनका इधर ध्यान ही नहीं आने दिया।

किसी के घर ७-८ साल बाद लड़का हो, तो कई उसे काला टीका लगाते हैं ताकि जिन्हें हमारी खुशी नहीं भाती उनकी नज़र

न लग जाए। किसी की इस तरह की दुर्लभ औलाद हो तो कह देते हैं, इसे नज़र लग गई है, यह रोता बहुत है, बीमार बहुत जल्दी होता है, ईर्ष्या करने वालों से घबराने की आवश्यकता नहीं, अपने पिता की प्रदान की हुई, बख्शिशों से भरी बाणी का सहारा लो। यदि बच्चे की माँ, बच्चे को अपनी गोद में डालकर ६ अष्टपदियां ही सुखमनी साहिब की रोज़ पढ़ ले तो उस बच्चे का कोई बाल बांका नहीं कर सकता। ईर्ष्या करने वाला कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

इशारा समझना कि आज के युग में ईर्ष्या का बहुत ज़ोर है। आपको जब भी खुशियां मिले, किसी पक्ष से भी ऊँचा उठो— परमात्मा के घर द्वारा, नाम जपने द्वारा, कथा-कीर्तन द्वारा या सांसारिक पक्ष द्वारा, धन-दौलत द्वारा, कारोबार द्वारा, औलाद द्वारा कोई भी खुशी मिले तो सुखमनी साहिब की बाड़ अवश्य लगाओ। यह ईर्ष्या करने वालों से रक्षा करती है।

(बाबा जी भी वचन करते थे और कहते थे कि पतंग ज्यादा बढ़ी हो तो डोर का गोला बड़ा कर लेना चाहिए अर्थात् जितना ऊँचा उठ जाओ, उतना अपना बाणी का नियम बढ़ा लो, फिर खुशहाली है, अन्यथा गिरने का भय होता है।)

अन्यथा यह दुनिया है। नहीं कोई किसी की उन्नति, किसी की खुशी को बर्दाश्त करता। कुछ समय पूर्व की बात है कि हम दूसरे शहर गए, कार्यक्रम था कीर्त्तन का, वहाँ से वापिसी गाड़ी न मिली। अमृतसर पहुँचना था समय पर। यहाँ भी कार्यक्रम था। वहाँ दास के मित्र हैं, गुरुमुख प्यारे, दास को कहने लगे, आप मेरी गाड़ी ले जाओ, मैंने एक-दो दिन में अमृतसर आना है और वापिस ले जाऊँगा। मजबूरी थी, हम उनकी गाड़ी में आ गए। बड़ी गाड़ी थी पन्द्रह लाख की। अगले दिन जब कीर्त्तन के कार्यक्रम हेतु निकले तो वही गाड़ी निकाल ली।

अभी सिर्फ कालोनी में ही थे तो एक सज्जन कहने लगा कि बहुत बड़ी गाड़ी ली है। दास ने सारा विवरण बताया और कहा, भाई यह हमारी नहीं। थोड़ा आगे गए तो कोई रिश्तेदार मिल गया, दास चला रहा था गाड़ी, वह कभी गाड़ी की ओर देखे और कभी

मेरी तरफ फतेह बुलाना ('नमस्कार करना') भी भूल गया। अन्तर्मन से उससे बर्दाश्त नहीं था हो रहा। दास ने गाड़ी का शीशा खोलकर उसे भी बताया कि भाई साहिब, यह गाड़ी हमारी नहीं। अब मेरे साथी कहने लगे, इस गाड़ी को घर ही वापिस खड़ी कर आते हैं और अपनी छोटी गाड़ी में ही चलते हैं। दास ने भी कहा, यही ठीक रहेगा, क्योंकि नहीं तो जो भी देखेगा यही समझेगा कि यह हमारी गाड़ी है, अवश्य इन्होंने कीर्तन के पैसों में से ली होगी। अर्थात् कोई बर्दाश्त नहीं करता किसी की खुशी, किसी की उन्नति।

आप कोई नया कारोबार शुरु करो, नई दुकान,नया कारखाना या शोरूम खोलो, नई कोठी बनाओ, नई कार ले लो, कोई विरले ही होंगे जो आपकी खुशी में मन से खुश होते हैं। वही खुश होंगे, जो आप से मन से प्यार करते हैं, अन्यथा अधिकतर से किसी की खुशी बर्दाश्त नहीं होती।

अब कई जहाँ सूझ नहीं, लोगों की ईर्ष्या से बचने के लिए निंबू-मिर्चें लटका लेते हैं, कई काली परांदी व कई नजरबट्टू अथवा नाककटी लटका लेते हैं। वह यह मानते हैं कि यह चीजें हमें लोगों की बुरी नज़र से बचा सकती हैं।

हे गुरु प्यारो ! आपके पिता ने आपको ऐसा हीरा-लाल प्रदान किया है, उसका सहारा लो। जब भी दाता कोई नया कारखाना, नई कोठी, नया शोरुम, नई कार, दुकान दे, अपने नित्यनियम के अलावा कोई २ महीने, ५ महीने, साल के लिए सुखमनी साहिब का नियम बढ़ा दो, दास का विश्वास है कि इस बाणी में ऐसी बख्शिश है, ऐसा अमृत है जो आपको, आपके साथ ईर्ष्या करने वालों की कुदृष्टि से बचाएगी।

अमृतसर में ही कोई गुरमुख प्यारे, उनकी प्लाई की छोटी-सी दुकान थी। उन्होंने तरनतारन रोड पर नया कारखाना लगाया। उन्होंने कार्यक्रम लिया हम से वहाँ कीर्त्तन के लिए। जब हम वहाँ कार्यक्रम के लिए गए तो दास हैरान हो गया, इतनी बड़ी जगह कि कारखाने का दूसरा कोना नजर नहीं था आ रहा। कम से कम १०० कारीगर भीतर काम पर लगा था। दास ने कहा कि आपकी

तो छोटी-सी दुकान थी, उससे इतना बड़ा कारखाना, वह कैसे। वह कहने लगे, सतिगुरु जी की बख्शिश हुई है, जो यह सारी विधि बनी है।

दास कहने लगा, गुस्सा मत करना यदि एक बात करूँ। यह आपकी खुशी सभी से सहन नहीं होनी है। वह कहने लगा, फिर क्या करें? दास ने कहा, दफ्तर की कुर्सी पर बैठकर प्रतिदिन एक पाठ सुखमनी साहिब का आप या आपका भाई कोई भी कर ले, करना है। फिर आपका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा, अन्यथा आप से ईर्ष्या करने वालों से यह बर्दाश्त नहीं होना कि आपने छोटी-सी दुकान से इतना बड़ा कारखाना लगा लिया है।

यह सुखमनी साहिब की बाणी की विशेषता है कि ईर्ष्या करने वालों से हमारी रक्षा करती है। यहाँ एक बात याद रखना, दूसरे को आगे बढ़ता देखकर, दूसरे की तारीफ देखकर वही दुखी होता है, वही ईर्ष्या करता है, जिसे किसी महापुरुष की संगत प्राप्त नहीं हुई। यह ईर्ष्या की गांठें उसके भीतर ही होती हैं जिसका मन नहीं जागा। जिसका मन जाग जाए, वह दूसरे को बढ़ता देखकर खुश होता है, क्योंकि उसे यह सूझ आ जाती है कि हमारे जीवन का वास्तविक उद्देश्य तो है–

''भई परापति मानुख देहुरीआ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ॥''

(अंग १२)

वह किसी से ईर्ष्या की दीवारें नहीं डालता। वह सहज में, आनंद में, टिकाव में, घबराहट से, ईर्ष्या से, द्वेष से ऊपर उठकर सब की भलाई में जीवन बिताता है। किसी का बुरा न सोचता है, न करता है, किसी से वैर भाव नहीं रखता। संगत करने वाले का जीवन सामान्य व्यक्तियों के जीवन से भिन्न होता है। वह अपने मन को बुराई के समक्ष नहीं बेचता। वह अपने मन को ईर्ष्या, द्वेष, चुगली, निंदा, किसी का बुरा सोचना, बुरा करना ऐसी बुरी चीजों के समक्ष नहीं बेचता, चाहे पैर-पैर पर ईर्ष्या-द्वेष भावना खड़ी है, क्योंकि संगत करने से यह बुरी बातें भीतर से निकल जाती हैं।

यह सूझ आ जाती है कि किसी का बुरा करना, किसी से ईर्ष्या करना कितना बुरा है।

यहाँ एक बात दास स्पष्ट कर दे कि किसी का बुरा करना व ईर्ष्या करना कितना बुरा है कि ऐसा करने वाले का किया जप-तप, साधना सब व्यर्थ चली जाती है, इसके अलावा दूसरे से ईर्ष्या रखने वाले का, दूसरे का बुरा करने वाले का अपना बुरा अवश्य होता है। जैसे कि दृष्टांत भी है–

एक मेंढक एक तालाब में अपने साथियों सहित रहता था, परन्तु वह अपने साथियों से बड़ी ईर्ष्या करता था। उसने एक सर्प से दोस्ती कर ली और उसे कहा कि मैं प्रतिदिन अपना एक साथी तेरे पास बहाने से लेकर आया करूँगा और तुम उसे खा लिया करना। वह प्रतिदिन ऐसे ही करने लगा। एक-एक करके सर्प ने मेंढक के सारे साथी खा कर खत्म कर दिए। मेंढक बड़ा खुश, लेकिन अब सर्प को मेंढक खाने हेतु मिलने बंद हो गए। अब एक दिन जब मेंढक अपने मित्र सर्प को मिलने के लिए गया तो सर्प ने उसी मेंढक को ही खाने के लिए झपट लिया।

मेंढक ने बहुत निवेदन किया और कहने लगा कि मैं तो तेरा मित्र हूँ, तू मुझे क्यों खा रहा है। सर्प कहने लगा कि तू तो अपने साथियों का नहीं बना और मेरा कहाँ बनेगा। यह कहकर सर्प ने उस मेंढक को भी खा लिया। इशारा लेना, दूसरों से बुरा करने वाले का अपना भी बुरा ही हुआ।

एक अन्य दृष्टांत व्यक्त कर लें ताकि यह बात हमारे हृदय में बस जाए कि किसी का बुरा नहीं करना, किसी से ईर्ष्या नहीं करनी।

एक राजा ने विद्वान-पंडितों से कहा कि जो मुझे बढ़िया श्लोक सुनाएगा, उसे पाँच मोहरें ईनाम के रूप में मिलेंगी। एक पण्डित ने बहुत बढ़िया श्लोक सुनाया। राजा बड़ा खुश हुआ और उस पण्डित से कहा कि तू मुझे रोज नया श्लोक सुना जाया कर और पाँच मोहरें ले जाया कर। पण्डित ने रोज़ आना और श्लोक सुना कर राजा से पाँच मोहरों की हुण्डी लिखवा लेनी और जाकर खजाने

में से मोहरें ले लेनीं।

राजा के महल के बाहर जो सिपाही पहरे पर खड़ा होता था, उसे बहुत गुस्सा आना कि मैं सारा दिन यहाँ पहरा देता हूँ और मुझे एक मोहर मिलती है, जबकि यह पण्डित पाँच-सात मिनटों में ही एक श्लोक सुना कर पाँच मोहरें ले जाता है। वह अन्दर ही अन्दर उससे ईर्ष्या रखने लग गया और योजनाएं बनाने लगा उसके बुरे कीं।

एक दिन वह पहरेदार, पण्डित को कहने लगा कि राजा ने मुझे कहा है कि यह पण्डित जब श्लोक सुनाता है तो इसके मुँह में से बड़ी बदबू आती है, इसलिए तू मुँह पर कपड़ा बांध कर श्लोक सुनाया कर। पण्डित ने कहा, ठीक है। मैं आगे से इस तरह ही कर लिया करुँगा। उधर दूसरी ओर वह पहरेदार राजा को कहता है कि यह पण्डित बड़ा अभिमानी हो गया है, कहता है, जब मैं राजा को श्लोक सुनाने जाता हूँ तो मुझे उससे बदबू आती है, इसलिए मैं कल से मुँह पर कपड़ा बांध कर आऊँगा। यह बात सुनकर राजा को बहुत क्रोध आया।

अगले दिन जब पण्डित सचमुच मुँह पर कपड़ा बांध कर श्लोक सुनाने लगा तो वह और भी क्रोधित हो गया और उसने श्लोक सुने बिना ही एक हुण्डी लिख कर दे दी। पण्डित ने सोचा आज राजा ने मुझ से श्लोक सुने बिना ही मुझे मोहरों की हुण्डी लिख कर दे दी है। आज मैं यह हुण्डी पहरेदार को दे देता हूँ। उसने वह हुण्डी पहरेदार को दे दी।

पहरेदार जब हुण्डी लेकर खजाने के सिपाहियों के पास गया, यह सोच कर कि आज मुझे मोहरें मिलेंगी, सिपाही ने पकड़ कर उसकी जुबान काट दी, क्योंकि आज वह हुण्डी मोहरों की नहीं थी। उस पर्ची पर राजा द्वारा आदेश था कि जो यह पर्ची लेकर आए उसकी जुबान काट दी जाए।

यह दृष्टांत लिखने के अन्य कोई भाव नहीं, सिर्फ इतना कि अपने लिए सीख लेना। हम गुरसिक्ख हैं। हमने अपने सतिगुरु के दर्शाए हुए मार्ग पर चलने की कोशिश करनी है। हमारे गुरु

साहिबान ने अपने जीवन में निर्वेरता के नमूने दिखा कर हमें सूझ दी है। गुरु साहिब का इतिहास पढ़ें तो गुरु साहिबान से कितनी ईर्ष्या कमाई गई पर किसी भी गुरु साहिब ने ईर्ष्या का जवाब ईर्ष्या में नहीं दिया अपितु ईर्ष्या करने वालों का भी भला ही मांगा।

एक दिन दास को किसी ने प्रश्न कर दिया कि भाई साहिब, गुरु का सिक्ख तो किसी का बुरा नहीं करता, किसी से वैर नहीं रखता, ईर्ष्या नहीं रखता, क्योंकि गुरु नानक साहिब ने रंग भरा है अपने सिक्खों में 'सब के भले' का लेकिन यदि कोई गुरु के सिक्ख से ईर्ष्या करे, उसका बुरा करे, कोई जादू-टोना तबीज कर दे, फिर सिक्ख क्या करे?

दास को और मान आ गया गुरु अर्जुन साहिब पर कि उन्होंने हम जीवों पर कितना बड़ा परोपकार किया है जो इतनी बख्शिश भरी बाणी हमारे दामन में डाली। यह सुखमनी साहिब की बाणी जंत्र-मंत्र, वहम-भ्रम, भूत-प्रेतों से भी रक्षा करती है।

यहाँ दास एक बात स्पष्ट कर दे, क्योंकि कई कह देते हैं कि यह सब चीजें नहीं होतीं। सबका अपना-अपना विचार है, परंतु सुखमनी साहिब जी की बाणी की पंक्तियाँ पढ़ कर पता लगता है कि यह चीजें हैं।

''कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच॥''

(अंग २७६)

गुरु अमरदास जी जब गोइंदवाल गए, वहाँ भी दुरात्माओं का निवास था। गुरु साहिब ने गोइंदवाल को बसाने के लिए यह वचन किया, बख्शिश की कि जो यहाँ बसेगा उसे यह चीजें तंग नहीं करेंगी। इसके अलावा गुरु तेग बहादुर जी का आनंदपुर साहिब का जिक्र पढ़ने पर भी पता लगता है कि यह चीजें हैं।

आनंदपुर साहिब की धरती का पूर्व नाम 'माखोवाल' था जो कि एक दैत्य के नाम पर था। (जब गुरु गोबिंद सिंघ जी बाल्यावस्था में इस धरती पर गए, अपने पावन चरण इस धरती पर डाले तो गुरु तेग बहादुर जी ने कहा, बड़ा आनंद बना है, यहाँ

आनंद बांटा जाएगा, यहाँ लोग आनंद लेंगे, इसलिए आज से इस धरती का नाम आनंदपुर होगा।)

यह जिक्र दास ने तो लिया है ताकि पता लग जाए कि यह चीजें होती हैं। एक दिन माखोवाल दैत्य, गुरु तेग बहादुर जी के सामने आकर खड़ा हो गया और कहा कि मेरे ७०० चेले हैं, हम यहाँ रहते हैं, लेकिन जब से आपने यह ज़गह लें ली है, आपके सिक्ख यहाँ बाणी पढ़ते हैं और हम बाणी के आगे टिक नहीं सकते। जहाँ से हमारे कानों में बाणी की आवाज पड़े वहाँ से हमें आगे भागना पड़ता है। इशारा लेना कि यह चीजें हैं। गुरु तेग बहादुर जी ने दया के घर में आकर कहा था कि अब आप सरहिन्द जा कर बसो, दसवें जन्म में आपका भी उद्धार करेंगे।

इसके अलावा यदि गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय की भाई प्रहलाद सिंघ से घटित घटना लें तो उससे भी स्पष्ट होता है कि यह चीजें हैं। एक दिन भाई प्रहलाद सिंघ दौड़ा-दौड़ा, हाँफता हुआ सतिगुरु के पास आया और कहने लगा, ''सतिगुरु, मैं शौच के लिए गया था, मार्ग में देखा कि एक शरीर को भूत चिपका हुआ था।'' सतिगुरु दिव्य-दृष्टि से देख कर कहने लगे, ''जिस शरीर का तू नाम ले रहा है कि उसे भूत चिपका हुआ था, उस शरीर ने कभी जपुजी साहिब का पाठ नहीं किया। यह चीजें बनी ही उनके लिए हैं, जो बाणी से नहीं जुड़ते।''

यह चीजें हैं, लेकिन यदि आपके घर में सुखमनी साहिब का निवास है, वहाँ यह चीजें असर नहीं कर सकतीं। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे– जिस घर में दिन की शुरुआत जपुजी साहिब, पाँच बाणियों द्वारा होती हो, जिस घर में रोज श्री सुखमनी साहिब का पाठ होता हो, उस घर में जादू-टोने, जंत्र-मंत्र व अन्य बुरी चीजों को राख के डिब्बे में भी जगह नहीं मिलती। यह नहीं कि यह चीजें है नहीं, हैं लेकिन इन जंत्रों-मंत्रों-तंत्रों से बाणी बलवान है, सूरज प्रकाश में भी वचन हैं–

'जंतर-मंतर पुन तंतर महाना।
भूत प्रेत ते दैंत बलवाना।'

इन जंत्रों-मंत्रों, जादू-टोनों की विद्या जिन्होंने ली हो, वह यह विद्या दूसरे के बुरे के लिए उपयोग करते हैं परन्तु यदि आप सुखमनी साहिब की बाणी से प्रेम करते हो तो यह विद्या आप पर नहीं चल सकती, कोई आपका बाल भी बांका नहीं कर सकता।

अमृतसर में संगत के एक प्रेमी हैं। सुल्तानविंड गेट के पास, उनका लकड़ी के आरे का कारोबार है। उनके घर सुखमनी साहिब की ८ दिन की शृंखलाएं चल रही थीं। उनके साथ उन दिनों में जो बीती, जब उन्होंने दास को सुनाई, दास सुनकर हैरान रह गया।

साप्ताहिक शृंखलाएं चल रही थीं। एक दिन सायंकाल को आरे से वह प्रेमी अपने घर को गए तो उनका श्रमिक जो रेहड़े पर कटी हुई लकड़ियों की ढुलाई करता था, वह रेहड़ा लेकर जब गेट के पास पहुँचा तो वहाँ रेहड़ा अड़ गया। जब श्रमिक ने रेहड़ा पीछे किया यह देखने के लिए कि रेहड़ा क्यों अड़ गया था तो उसने देखा, वहाँ एक लकड़ी दबी पड़ी थी। जब उसने वह लकड़ी उखाड़ी तो देखा कि वहाँ खड्डा-सा था। उसे यूँ अनुभव हुआ कि खड्डे में कुछ दबा हुआ है। जब उसने मिट्टी एक तरफ की तो देखा कि एक कपड़े में कुछ चीजें थीं—सिंदूर, परांदी, जौं के दाने व कुछ अन्य इस तरह की टोने-टोटके की चीजें।

उस श्रमिक ने घर वालों को जाकर सारी खबर दी। जब उन्होंने जाकर यह सब कुछ अपनी आँखों से देखा तो वह भी हैरान हो गए। बात को समझने का यत्न कीजिए। इशारा कि किसी ईर्ष्या वाले ने उनका बुरा करना चाहा, लेकिन उनके घर में जो सुखमनी साहिब के पाठों के प्रवाह चल रहे थे, बाणी के प्रवाहों ने कोई नुक्सान होने से पहले ही बचाव कर दिया। ऐसी विधि बना दी कि उन चीजों का असर होने से पहले ही वह चीजें नजर में आ गईं।

दास का यह किसी से बीता जिक्र लिखने से सिर्फ यही भाव है कि यदि कोई ईर्ष्या-वश होकर सिक्ख का नुक्सान करना चाहे, यदि वह सिक्ख सुखमनी साहिब से जुड़ा है तो उस पर ईर्ष्यावादी का कोई भी प्रहार असर नहीं कर सकता।

अमृतसर ढाब वसती राम पर एक साबुन का कारखाना है जिसके मालिक का नाम त्रिलोचन सिंघ है। आनंद चमत्कार के लेखक भाई गुरमुख सिंघ जी ने यह जिक्र सुनाया कि उनका कारखाना बहुत बढ़िया चलता था, लेकिन अचानक धीरे-धीरे घाटे में जाना शुरु हो गया। (किसी का अच्छा-भला चलता काम जब नीचे आना शुरु हो जाए तो जिस के साथ यह बीतती है यह वही जान सकता है।) इतना घाटा पड़ना शुरु हो गया कि सफेदपोश परिवार, कुछ महीनों में कंगाली की हालत में पहुँच गया। जिधर हाथ डालें, मिट्टी हो जाए। सब ओर नुक्सान ही नुक्सान। धीरे-धीरे जमा राशि भी समाप्त हो गई। सारा पैसा फँस गया। बड़ी दयनीय हालत हो गई उस परिवार की।

किसी महापुरुष से उनका मेल-मिलाप था। जब उन्होंने जाकर अपनी सारी व्यथा बताई तो महापुरुष ने कहा कि अपने घर सभी सदस्य मिलकर दिन के समय श्री सुखमनी साहिब की सैंची पर अखण्ड शृंखला चलाओ, ४० दिन के लिए। सप्ताह बाद कड़ाह-प्रशाद की देग करवा कर अरदास करते जाओ। परिवार ने वचन माना और घर में सुखमनी साहिब की अखण्ड शृंखलाएं चला दीं।

सप्ताह बाद उन्होंने किसी से २०-२५ हजार रुपए उधार लेकर, साबुन बनाने के लिए जरुरी सामान तेल, कास्टिक-सोडा इत्यादि लिया और बड़े कड़ाहे में साबुन बनाने के लिए डाल दिया और नीचे आग जला दी कि साबुन तैयार करके बेचें, लेकिन परमात्मा की करनी, उस कड़ाहे में बहुत बड़ा छेद हो गया और तेल इत्यादि सारा सामान आग में जलकर राख हो गया। आगे ही नुक्सान बहुत हो चुका था, यह २५ हजार जो उधार लिया था यह सोचकर कि इससे थोड़ा बहुत काम शुरु करते हैं, वह भी मिट्टी हो गया, और कर्ज सिर पर चढ़ गया। परिवार के कई सदस्य तो यहाँ तक कहने लगे कि अच्छा सुखमनी साहिब का आँचल पकड़ा है, इसने कुछ संवारने की बजाय हमें और डुबो कर रख दिया है।

जब उन्होंने महापुरुष को यह सारी घटना सुनाई तो वह कहने

लगे कि आप घबराओ मत, इसमें कोई भला ही छुपा है, क्योंकि सुखमनी साहिब की बाणी कार्य संवारती है, बिगाड़ती नही। हमारा विश्वास है कि सतिगुरु ने आपको किसी आने वाले बड़े खतरे से बचाया है, आपकी रक्षा की है। अभी तो आपको केवल सप्ताह हुआ है बाणी के प्रवाह चलाते, आप चालीस दिन पूरे तो करो, गुरु साहिब भला करेंगे। महापुरुषों की अपनी कमाई थी, उनके वचनों में शक्ति थी, सारा परिवार उसी तरह लगा रहा। किसी ने विश्वास से पढ़ी व किसी ने बुझे मन से लेकिन पढ़ते सारे ही रहे।

परिवार के मुखिया ने फिर से कहीं से पैसे का प्रबंध किया कि दुबारा साबुन बनाने की तैयारी करें। उन्होंने नया कड़ाहा बनवाया और सोचा भट्ठी भी खोद कर दोबारा पक्की कर लें, क्योंकि सारी भट्ठी खराब हो गई थी। जब उन्होंने भट्ठी खोदी तो नीचे से एक घड़ा निकला। वह घड़ा देखकर बड़ा हैरान हुए कि यहाँ भट्ठी के नीचे घड़ा कहाँ से आ गया। जब उन्होंने घड़ा खोला तो उसमें कुछ चीजें, पुड़ियों में बंद पड़ी थीं। जब उन्होंने वह बंद पुड़ियां खोलीं तो उन में सारे परिवार के सदस्यों के नाम लिखे थे।

उन्होंने महापुरुष को वह घड़ा ले जाकर दिखाया जिस में यह सारे टोटके पड़े थे। महापुरुष ने किसी जोगी को, जिसे इन चीजों के बारे में ज्ञान था, यह दिखाया। उस जोगी ने बताया कि यह तो ऐसे टोटके हैं, जिससे परिवार के सदस्यों को भी नुक्सान हो सकता था।

महापुरुष उस परिवार को कहने लगे कि यह जो आपने अपने घर में सुखमनी साहिब के अखण्ड प्रवाह चला कर अरदास की है, उसने आपको आने वाली मुसीबत से बचा लिया है, यह सुखमनी साहिब की बाणी ने आपके सारे परिवार की रक्षा की है। अब नए तरीके से अपना करोबार शुरु करो लेकिन एक बात का ध्यान रखना, अपने घर में सुखमनी साहिब का पहरा हमेशा रखना। यह सुखमनी साहिब की बाणी का नियम कभी न छोड़ना, फिर आपका कोई भी बाल बांका नहीं कर सकेगा। वह परिवार हमेशा के लिए सुखमनी साहिब से जुड़ गया। आज सुखमनी साहिब की बरकत

से वह परिवार लखपती है।

देख लो जहाँ गुरसिक्खी नहीं, कैसे लोग दूसरों का बिगाड़ने के लिए जंत्र-मंत्र, काले इल्मों में फँसे पड़े हैं। यह चीजें यदि एक का कुछ संवारती हैं तो दूसरे का बिगाड़ती हैं। लेकिन गुरसिक्खी बड़ी महान है, गुरु का सिक्ख तो सब का भला मांगता है, दूसरे का बिगाड़ कर अपना संवारने वाली पंक्ति में गुरु का सिक्ख नहीं आता।

यह संसार है, कलियुग का पूरा जोर है। ईर्ष्या तो होनी ही है। गुरु साहिब के इतिहास की तरफ ध्यान दें। क्या गुरु साहिब से ईर्ष्या नहीं हुई? गुरु अंगद साहिब का ही इतिहास पढ़ें। गुरु अंगद साहिब को, गुरु नानक देव जी ने वचन किया था कि खडूर साहिब जाकर बसो, यहाँ पुत्र ईर्ष्या करेंगे। यदि गुरु अमरदास जी का इतिहास पढ़ें, कितनी ईर्ष्या की गुरु अंगद देव जी के सुपुत्र दातू जी ने कि एक दिन जब दीवान में बैठे हुए थे तो जोर से टांग निकाल मारी।

पृथी चंद ने कितनी ईर्ष्या की, गुरु अर्जुन देव जी से, ईर्ष्या-वश होकर कितने यत्न किए गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को जान से मरवाने के। धीरमल ने शीहे मसंद को कहकर गुरु तेग बहादुर साहिब जी पर यदि गोली चलवाई थी तो यह क्या था? इसका कारण भी तो ईर्ष्या ही था।

ईर्ष्या करने वालों ने नामदेव, कबीर जैसे बड़े-बड़े भक्तों को भी नहीं छोड़ा तो हम क्या हैं। ईर्ष्या करनी तो सांसारिक लोगों का स्वभाव है, लेकिन हमारे पिता ने एक हीरा, पारस दिया है, इसका सहारा लें, अपने घरों में इसकी बाड़ लगाकर रखें, इसका किल्ला अपने घरों में लगाकर रखें।

यह सतिगुरु के प्रदान किए अमूल्य खजाने की आठवीं विशेषता कि सुखमनी साहिब की बाणी जंत्र-मंत्र, जादू-टोने, वहम-भ्रम और किसी की भी ईर्ष्या से हमारी रक्षा करती है। यदि ईर्ष्या-वश होकर किसी ने कुछ बुरा कर भी दिया है तो जिस घर में सुखमनी साहिब का निवास है, वहाँ कोई बुरी चीज का असर

नहीं हो सकता।

लुधियाना का एक शरीर, दास को मिला और कहने लगा कि कोई एक साल हो गया है मेरे पिता जी दुकान पर नहीं जाते। कहते हैं मुझे दुकान पर डर लगता है, मेरे कदम ही उधर नहीं जाते। दास ने पूछा, कोई इलाज इत्यादि नहीं करवाया। वह कहने लगा कि ३-४ सियानों के पास गए थे लेकर। एक डेरे भी गए थे जहाँ बाल खोलकर चौंकी देते हैं, (दास उस डेरे का नाम लिखना उचित नहीं समझता) लेकिन कहीं से भी एक पैसे का फर्क नहीं पड़ा। दास ने पूछा सियानों ने क्या कहा था? उसने बताया कि उन्होंने कोई दवाई-सी पानी में घोलकर पिलाई जिससे पिता जी को उल्टियाँ आईं और वह सियाना कहने लगा कि इन्हें किसी ने ताबीज खिलाए थे, वह उल्टी द्वारा निकल गए हैं। यह अब स्वस्थ हो जाएँगे। आपका काम हो गया है। आप धन दे दीजिए। पर कितने दिन बीत चुके हैं, कोई बात बनती नजर नहीं आती, आप कोई मार्ग दीजिए।

दास ने कहा, हम सौदा सस्ता नहीं देते। पहले ५१ पाठ सुखमनी साहिब के करें, फिर बताएंगे क्या करना है। कोई १४-१५ दिन बाद उनके पिता का दास को फोन आया। मैंने सोचा अब यह समय मांगेंगे, पूछेंगे कब मिलेंगे। लेकिन दास हैरान हो गया जब उन्होंने कहा कि मेरा काम हो गया है, मैंने अब दुकान पर भी जाना शुरु कर दिया है। दुकान पर जाने से मुझे जो डर लगता था, जो मेरे कदम दुकान की ओर नहीं जाते थे, वह डर, वह भय, वह खौफ सुखमनी साहिब की बख्शिश के फलस्वरूप दूर हो गया है। उसने बताया कि अभी १५-१६ पाठ ही किए थे कि अंदर शांति आनी शुरु हो गई। दास के मन से निकला धन्य श्री सुखमनी साहिब! धन्य श्री गुरु अर्जुन देव जी!!

ऐसी बख्शिश है सुखमनी साहिब की बाणी में पता नहीं गुरु अर्जुन साहिब जी ने क्या भरा है इस बाणी में। जिस घर में सुखमनी साहिब का निवास है, उन्हें गुरु साहिब स्वयं अपनी कृपा करके वहम-भ्रम, भूत-प्रेतों, बुरी चीजों की आग से बचाते हैं।

यह जो वहम-भ्रम हैं ये भी तब तक हैं जब तक बाणी का निवास नहीं। सुखमनी साहिब की बाणी इन वहमों-भ्रमों से भी मुक्ति दिलाती है। कहीं जाते समय, किसी ने पीछे से आवाज़ मार दी, अब मेरा काम नहीं बनना, बिल्ली लाँघ गई, अब मेरा काम नहीं होना, उग्राही लेने जा रहा था, किसी ने छींक मार दी, अब उग्राही नहीं मिलनी। यह सब वहम-भ्रम हैं। दास दावे से, बाणी के भरोसे से लिख रहा है कि यदि आपके घर में बाणी का निवास है, सुखमनी साहिब का पहरा है तो चाहे कोई छींक मार दे, चाहे बिल्ली रास्ता काट जाए और चाहे पीछे से कोई आवाज मार दे, आपका कोई कार्य नहीं रुक सकता।

थोड़े दिनों की बात है कि हम अपनी गाड़ी में कहीं जा रहे थे। जत्था साथ था। हमारा एक साथी गाड़ी में बैठा-बैठा सुखमनी साहिब का पाठ थोड़ी ऊँची बोलकर जुबानी ही कर रहा था। हमारी कार के आगे से एक बिल्ली निकल गई।

हम में से ही एक शरीर कोई कम अवस्था वाला था, वहमों-भ्रमों में विश्वास रखता था, कहने लगा, बिल्ली ने रास्ता काट लिया है, कहीं कोई नुक्सान न हो जाए। दास ने उसका वहम दूर करने के लिए व्यंग्य में कहा कि जब बिल्ली एक बार निकल कर दोबारा निकले तो मार्ग काटती है। यह उसने मार्ग नहीं काटा क्योंकि यह एक बार निकली है। वह कहने लगा, मैंने सोचा शायद एक बार निकले तो मार्ग काटती है।

हम आगे जिस कार्य के लिए भी गए, हर तरफ समृद्धि, सारे कार्य बड़ी सुगमता से, निर्विघ्नता सहित सबकुछ ठीकठाक सतिगुरु की कृपा से सम्पूर्ण हुआ। जब वापिस आए तो दास ने उस शरीर का वहम दूर करने के लिए कहा कि तू तो कहता था बिल्ली मार्ग काट जाए तो कार्य सम्पूर्ण नहीं होता, कोई न कोई नुक्सान अवश्य होता है, लेकिन हमारे तो सारे कार्य गुरु साहिब की कृपा से बड़ी सुगमता से सम्पूर्ण हुए हैं, कोई मुश्किल नहीं आई, न ही कोई नुक्सान हुआ है। वह कहने लगा, आपने स्वयं ही तो कहा था कि एक बार निकलने से बिल्ली रास्ता नहीं काटती, जब दुबारा निकले

फिर रास्ता काटती है। दास ने कहा—ओए भोले! मैंने तेरा वहम निवृत्त करने के लिए तुझे विपरीत कहा था।

वास्तव में जो वहम मानते हैं, वह यही मानते हैं कि बिल्ली जब निकले तो रास्ता काटती है, बिल्ली के आगे से निकलने पर अपशुगन मानते हैं, लेकिन यदि वह दुबारा निकल जाए, वापिस आ जाए तो कहते हैं, अब रास्ता Clear हो गया है, अब सबकुछ ठीक रहेगा। वास्तव में बिल्ली ने रास्ता काटा ही था, पर क्योंकि हमारी गाड़ी में सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ी जा रही थी और जहाँ सुखमनी साहिब है, वहाँ वहमों-भ्रमों को कोई स्थान नहीं।

बाबा ईशर सिंघ जी वचन करते थे कि यदि कोई नित्यनियम करके, गुरु साहिब के दर्शन करके घर से निकले, फिर चाहे बिल्ली निकल जाए अथवा कोई छींक मार दे, उस पर किसी चीज का असर नहीं क्योंकि वह सर्वोच्च मालिक के चरणों में आराधना करके निकला है। वहम-भ्रम उनके लिए हैं जो साँई की शरण में नहीं आए, जिन्होंने सुखमनी साहिब की बाणी से प्रेम नहीं किया। हमारा विश्वास हो, फिर गुरु स्वयं कृपा करता है, लाज रखता है।

कुछ वर्ष पूर्व दास स्वयं उग्राही लेने जाता था। तरनतारन दास के साथ एक अन्य व्यापारी भी जाता था। उसका गोलियों-टाफियों का कार्य था। दोनों अपने-अपने स्कूटर पर जाते थे उग्राही लेने। उस व्यापारी के पाँच-सात साथी यहीं कार्य करने वाले दास को मिले और कहने लगे कि हमें एक बात समझ में नहीं आती कि हमारा एक जैसा व्यापार है, हमारी इतनी उग्राही फँसी हुई है तरनतारन साहिब। हमें तो मिलती नहीं और यदि कहीं मिलती भी है तो थोड़ी-बहुत, लेकिन पता नहीं क्या चक्कर है कि इस सिंघ को हर बार उग्राही मिल जाती है और आर्डर भी मिल जाता है।

अब दास तो जानता था कि रहस्य क्या है। उसने जैसे ही चाटीविंड से निकलना उग्राही लेने के लिए, सुखमनी साहिब का पाठ उसके मुँह में शुरु हो जाना। अब क्योंकि वह बाणी पढ़ता जाता था इसलिए सबसे अधिक उग्राही लेकर आता था। सबसे

अधिक आर्डर लेकर आता था, जबकि शेष व्यापारी मार्ग में परस्पर सांसारिक बातें करते जाते—अमुक व्यापारी ने यूं कर दिया, अमुक ने ऐसे कर दिया। वह शरीर जो सुखमनी साहिब पढ़ता जाता है वह अपने श्वास सफल कर रहा है, जबकि दूसरे शरीर व्यर्थ की बातें करके, निंदा चुगली करके अपने श्वास व्यर्थ गंवा रहे थे।

दास का विश्वास है कि जो शरीर घर से निकलते ही सुखमनी साहिब की बाणी अपने मुँह में आरम्भ कर देता है, गुरु साहिब स्वयं उनके हृदय पर बैठ जाते होंगे जिन से वह उग्राही लेने जा रहा है। वह स्वयं विधि बना देता है। दास यह बात दावे से लिख रहा है कि जो इस तरह मार्ग में सुखमनी साहिब की बाणी पढ़ते उग्राही लेने जा रहा हो, ऐसे शरीर को एक छोड़कर दस व्यक्ति पीछे से आवाज मार दे और चाहे जितने मर्जी कोई छींकें मार दे अथवा बिल्ली रास्ता काट जाए, उसका बाल भी बांका नहीं हो सकता। सारे वहम-भ्रम समाप्त हो जाते हैं जो बाणी से जुड़ जाए। बाणी में भी इस बात की गवाही दी है-

सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै॥ (अंग ४०१)

जो सुखमनी साहिब की बाणी से जुड़ जाए, वह सारे ही वहमों-भ्रमों से मुक्त हो जाता है। अन्यथा जब तक यह वहम-भ्रम चिपके हैं, बहुत तंग करते हैं। जो फँसे हुए हैं इन वहमों-भ्रमों में, लाख समझाने पर भी वह नहीं समझते, कुदरत द्वारा ही कोई कृपा हो तो हो। गुरुवार कपड़े नहीं धोने, शनिवार सिर नहीं धोना, मंगलवार नाखुन नहीं काटने एवं और पता नहीं कितने वहम हैं जिन में फँसी पड़ी है आज दुनिया। उनका यदि कोई वैसे भी नुक्सान हो जाए अथवा कोई थोड़ी-बहुत ठोकर भी लग जाए तो वह उस नुक्सान को इन चीजों से जोड़ देते हैं कि आज शनिवार सिर धोया था तो नुक्सान हुआ है, आज गुरुवार कपड़े धोए थे तो ठोकर लगी है। लेकिन यह सुखमनी साहिब की बाणी की बख्शिश है कि यह सारे ही वहमों-भ्रमों से मुक्ति दिलाती है।

आजकल एक दिशा-वहम (वास्तु शास्त्र) बहुत जोरों पर है। कोई थोड़ा-सा कह दे कि आपके घर में आपकी रसोई की दिशा

ठीक नहीं या बैडरुम की दिशा ठीक नहीं या गुरु साहिब जी के कमरे की दिशा ठीक नहीं और इसी कारण आपके कारोबार में मंदा है, दिशा सही न होने के कारण आपके घर में बीमारी है, जहाँ नहीं सूझ, नहीं भरोसा आपके पिता के दिए हुए खज़ाने पर तो वह ऐसे वहमों-भ्रमों में फंसाने वालों के पीछे लग कर अपने घरों की, दफ्तरों की दिशा बदलवाने चल पड़ते हैं।

एक संगत करने वाले शरीर ने अपने घर में गुरु साहिब का बड़ा सुंदर कमरा बनवाया हुआ था, लेकिन किसी ने वहम डाल दिया कि आपके कारोबार में इसलिए मंदा चल रहा है, क्योंकि आपके घर गुरु साहिब के प्रकाश की दिशा ठीक नहीं। देख लो जहाँ नहीं भरोसा अपने गुरु की समर्था पर, नहीं भरोसा गुरु की प्रदान की हुई बाणी पर, तो दूसरों की बातों में आकर उसके पैर डगमगा जाते हैं तो ही अरदास में भरोसे का दान मांगा जाता है। क्योंकि यह अतिआवश्यक है, जहाँ विश्वास है, भरोसा है वहाँ गुरु की बख्शिश होती है।

उस शरीर के दिमाग में यह बात घर कर गई। उसने गुरु साहिब के प्रकाश की दिशा बदलवा दी। दिशा बदलवाने के साथ ही कमरे की सारी सुंदरता ही खत्म हो गई। वह बात ही न रही क्योंकि कई बार सैटिंग हुई होती है, बदलवाने से फिर वह बात नहीं बनती।

दास ने उनसे विनती की कि प्रकाश की दिशा जिधर मर्जी हो उससे कारोबार पर कोई फर्क नहीं पड़ता। यह सिर्फ मन के वहम हैं। दास ने विनती की कि यदि तसल्ली नहीं तो दरबार साहिब जो हमारे लिए सबसे बड़ा केन्द्र है, वहाँ यदि अंदर जाओ तो दिशा अन्य तरफ है। बाबा बुड्ढा जी की बेर पर प्रकाश की दिशा अन्य तरफ है, जहाँ श्री अकाल तख्त साहिब है, वह दिशा अन्य तरफ है। यह हमारे लिए हमारा केन्द्र भी दरबार साहिब बहुत बड़ी मिसाल है। दास गुरु के भरोसे से लिख रहा है कि दिशा जिधर मर्जी हो, यदि हमारे पास सुखमनी साहिब का धन है तो फिर यह चीजें हमारे लिए कोई अर्थ नहीं रखती।

जगत फँसा पड़ा है वहमों भ्रमों में, लेकिन जिसके पास सुखमनी साहिब का धन है, वह घमण्ड में अथवा अभिमान में आ कर नहीं, नम्रता में कहे कि मेरे पास वह धन है जिससे मुझे कोई शगुन-अपशगुन नहीं लग सकता, यह वहम-भ्रम मेरे लिए नहीं हैं।

इशारा लेना सुखमनी साहिब जी की बाणी की आठवीं विशेषता, जिस घर में सुखमनी साहिब का निवास हो वहाँ जन्त्र-मन्त्र कोई असर नहीं कर सकते, बुरा करने वाले, ईर्ष्या करने वाले सुखमनी साहिब से प्रेम करने वाले का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। जो इस दरगाही बाणी का किल्ला अपने घर में लगा ले उसे वहमों-भ्रमों, भूतों-प्रेतों इन सब चीजों से मुक्ति मिलती है। यह गुरु साहिब ने बड़ा दरगाही किल्ला हमारी गोद में डाला है, इसका सहारा लें।

८. यदि किसी घर में एक पाठ श्री सुखमनी साहिब का प्रतिदिन प्रभात काल होता हो, उस घर में भूत-प्रेत और वहम-भ्रम निवास नहीं कर सकते। यह विशेषता पढ़ कर यदि कुछ शरीर भी सुखमनी साहिब जी की बाड़ लगा लें तो हमारा यह प्रयास सफल होगा।

—द्वारा : दास लेखक

नौवीं विशेषता

''श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी हमारी इज्जत भी बचाती है।''

कलियुग का घोर समय है। हम में अनेक कमजोरियाँ होती हैं, अथवा न भी हो कमियाँ किसी में, तो उसकी शोभा को देखकर उसकी प्रगति को देखकर, उसकी खुशहाली को देखकर कई ईर्ष्या-वश होकर, हर समय इसी कोशिश में रहते हैं कि कोई इस में कमजोरी ढूँढें, जिससे इसका अपमान हो, पीठ लगे। अर्थात् यह कलियुग है, सामान्य लोगों में इतनी सहन-शक्ति नहीं होती कि किसी को बढ़ता-फूलता देख सकें।

कुछ दिन पहले दास की इंगलैंड हाजिरी थी कीर्त्तन की। वहाँ सेवा ली सतिगुरु ने अपनी कृपा करके। वहाँ हमने जिनके घर पड़ाव किया। रोबिन सिंघ नाम है उनका। वर्ल्ड के सबसे धनवान सिक्खों में हैं शायद, पर नम्रता अत्यधिक है। हाथों से सेवा भी करते हैं। इंगलैंड का जो वीजा लगाते हैं, वहाँ के बड़े अफसर से उनकी बड़ी पक्की दोस्ती है।

भाई रोबिन सिंघ ने हमें एक दिन वचन सुनाया। कहने लगे कि वह मेरा अफसर दोस्त बताता है कि हमें पंजाबियों की अधिक जांच-पड़ताल करने की आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि इनके समीपवर्ती, इनके अपने ही रिश्तेदार या गांव के जान-पहचान वाले, इनके अपने भाई, सज्जन-मित्र ही हमें इनकी कमजोरियाँ आकर बता जाते हैं अथवा पत्र द्वारा अथवा फोन द्वारा बता देते हैं कि यह अमुक व्यक्ति जो आपके पास वीजा लगवाने आया है, इसकी

अमुक-अमुक कमजोरियाँ हैं, यह व्यक्ति गलत है। अर्थात् सहन-शक्ति नहीं, इसलिए हमेशा इस कोशिश में होते हैं कि कैसे दूसरे की इज्जत उछाली जाए। हमारा एक-एक रोम भी गुरु अर्जुन देव जी की देन नहीं दे सकता। श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी में वह खजाना डाला है कि यह हमारी इज्जत भी बचाती है।

सुखमनी साहिब से प्रेम करने वालों के जितने मर्जी निंदा-चुगली करने वाले, ईर्ष्या करने वाले पैदा हो जाएं, कोई उनका बाल भी बांका नहीं कर सकता। जो गुरु वाला बने, सुखमनी साहिब जी की बाणी का नेमी हो, मन से निर्मल, किसी का बुरा न चाहे, न बुरा करे, गुरु के बताए मार्ग पर चलने वाला हो, फिर उसका बुरा चाहने वाले उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। कोई चाहे भी उससे धोखा करना, हेराफेरी करना, नहीं कर सकता, गुरु उसके आसपास होकर उसकी रक्षा करता है, लाज रखता है। वह अपने प्यारों की, अपनी बाणी से प्रेम करने वालों की कभी पीठ नहीं लगने देता।

गज़नी शहर में, गुरु अर्जुन साहिब जी के समय एक सिक्ख हुआ है भाई कटारु। करियाने की दुकान करता था। हर समय गुरु अर्जुन साहिब के चरण हृदय में बसाकर रखने वाला, सुखमनी साहिब की बाणी का नेमी। सुखमनी साहिब के पाठ का नियम अदा करके अपनी दुकान पर जाता था। दुकानदारी भी ऐसी, खुला व दयालु स्वभाव। सौदा अच्छा व शुद्ध और पूरा तोलना, ठीक रेट लगाना।

(यहाँ एक बात याद रखना, जहाँ दुकानदारी में ऐसा स्वभाव हो, वहाँ गुरु भी दोनों हाथ खोलकर बरकतें डालता है।)

दयालु, खुला स्वभाव, सबका भला करने वाला स्वभाव। यदि कोई निर्धन, जरुरतमंद आकर कहता कि मेरे पास पैसे नहीं हैं, मुझे उधार सौदा दे दो, दयालु स्वभाव किसी को मना नहीं था करता। सौदा भी सही रेट पर बेचता, स्वभाव भी खुला व दयालु, नाम का रंग भी, इतने शुभ गुणों के कारण हर तरफ भाई कटारु की जय-जयकार होने लग गई। घर-घर में भाई कटारु की चर्चा

होने लग गई कि धन्य है गुरु का सिक्ख भाई कटारु।

(दास तो कई बार सोचता है कि गुरु का सिक्ख ऐसा हो, इतनी ऊँची व शुद्ध करनी का मालिक हो कि जो उसके दर्शन करे, उसके अन्तर्मन से निकले कि वाह भाई सिक्ख! तू इतना धन्य है और तेरा गुरु कितना धन्य होगा)

अब एक बात याद रखना, जिसकी शोभा हो, उससे ईर्ष्या करने वाले भी अवश्य ही होते हैं। भाई कटारु की भी शोभा कुछ लोगों से बर्दाश्त नहीं हुई और उससे ईर्ष्या करने लग गए। कहते हैं कि इसका बड़ा आदर है क्षेत्र में, लेकिन हमें कोई पूछता नहीं। ईर्ष्या-वश होकर हर समय योजनाएं बनाते हैं कि कौन-सा ढंग अपनाएं कि जिससे भाई कटारु की बदनामी हो।

बड़ी घटिया योजना बनाई। कहते हैं कि यह भोला-भाला सिक्ख है, इसकी दुकान पर जाकर चालाकी से इसके तौल बदल देते हैं और विभाग वालों को शिकायत कर देंगे, स्वयं जब विभाग वाले आकर इसके तौल चैक करेंगे तो तौल हल्के होने के कारण इसे सज़ा होगी। देखो कितनी गहरी योजना बनाई। कहते जब तौलों में फर्क निकलेगा तो सारे क्षेत्र में ही इसकी बदनामी होगी, सभी कहेंगे कि यह तो बड़ा दयालु बनकर दिखाता था, तो ही सौदा खुला तोलता था क्योंकि तौल ही हल्के रखे हुए थे।

अपनी बनाई योजना अनुसार ५-७ शरीर इकट्ठे होकर भाई कटारु की दुकान पर गए। उसे सौदा लेने के बहाने बातों में लगाकर उसके तौल बदल दिए।

चालाकी से उसके तौल उठाकर हल्के तौल रख दिए। उधर विभाग वालों को शिकायत की हुई थी। थोड़ी देर बाद विभाग वाले आ गए और कहने लगे कि भाई कटारु, तेरी शिकायत आई है और तेरे तौल चैक करने हैं। जब भाई कटारु ने गौर से अपने तौलों की ओर देखा तो देखकर स्तब्ध हो गया कि यह तो मेरे तौल ही नहीं हैं। समझ गया किसी ने चालाकी से मेरे तौल बदल दिए हैं, मुझे बदनाम करने के लिए। एक बात याद रखना! जिसका पिता, जिसका मालिक इज्जत बचाने वाला हो, उसे कौन बदनाम कर

सकता है। गुरु का प्यारा था, गुरु के चरणों में लीन होने वाला था, जानता था :

जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि॥

(अंग ५१६)

गुरु साहिब के चरणों पर भरोसा था। जानता था इस समय जो मुश्किल घड़ी बन गई है, उस में से गुरु साहिब ही निकाल सकते हैं, वह ही उसकी इज्जत रख सकते हैं, उसे बदनाम होने से बचा सकते हैं। उस समय नेत्र बंद करके गुरु साहिब के चरणों का ध्यान करके एकाग्रचित्त होकर अरदास की, सतिगुरु! कृपा करो, मेरी बांह पकड़ो, मेरी लाज रखो। सिक्ख की फरियाद, गुरु जहाँ भी मर्जी हो, पहुँच जाती है।

अमृतसर में बैठे गुरु अर्जुन देव जी के पास किसी सिक्ख ने मनसूरी टका रख कर माथा टेका। सतिगुरु वह टका कभी दाई तली पर रखते और कभी बाई तली पर। सिक्ख बड़े हैरान, कहते सतिगुरु! लोग कितना-कितना धन अर्पण कर जाते हैं, लेकिन आप जी ने कभी हाथ भी नहीं लगाया, खजाने में रखवा देते हो, आज यह क्या कौतुक है।

सतिगुरु कहने लगे– गज़नी में बैठा हमारा सिक्ख, भाई कटारु अरदासें कर रहा है, ईर्ष्या वालों ने उसके तौल बदल कर उसकी विभाग में शिकायत कर दी है। विभाग वाले उसके तौल चैक करने के लिए कभी बाएं छाबे पर रखते हैं और कभी दाएं छाबे पर। मैं इसलिए टका कभी दाईं तली पर रख रहा हूँ और कभी बाईं तली पर ताकि मेरे प्यारे के तौलों में फर्क न आए। ईर्ष्यालु उसके तौलों में फर्क डालकर उसकी बदनामी करना चाहते हैं, भाई कटारु सच्चा है, भोलाभाला है, हम उसकी इज्जत बचा रहे हैं।

अर्थात् यह संसार है, कई चाहते हैं कि दूसरे की इज्जत उछले और हम स्वाद लें, लेकिन जिसके पास सुखमनी साहिब जी का धन है, गुरु उसकी लाज बचाता है।

एक भाई त्रिलोका हुआ है, गुरुं अर्जुन देव जी के समय। यह गुरु साहिब के चरणों में आया और प्रार्थना की, "सतिगुरु जी! कोई उपदेश दीजिए, जिससे जीवन सफल हो जाए।" सतिगुरु ने पूछा, "भाई कार्य क़्या करता है?" भाई त्रिलोका कहने लगा, "जी मैं हकूमत के सुरक्षा दस्ते का सिपाही हूँ।" गुरु साहिब ने उसे ६ वचन दिए।

(दास यहाँ एक विनती कर दे कि इन वचनों को पढ़ कर छोड़ न देना, इन्हें विचार कर अपने लिए जीवन में चलने के लिए सीख लेना, क्योंकि इससे बड़ा अन्य कोई मार्ग नहीं है, अपने जीवन में सड़क लेने के लिए। गुरु नानक साहिब दस पातिशाहियों के रूप में जब शरीर करके आए, किसी भी सिक्ख को उन्होंने जो रास्ता दिया, उन्हें किताबों में पढ़कर अथवा संगत में सुनकर हमने अपने भीतर ध्यान देना है, स्वयं को तोलना है कि जो रास्ते गुरु साहिबान ने अपने सिक्खों को प्रदान किए, वह हमारे पास हैं या नहीं। यदि हैं तो सतिगुरु की कृपा, यदि नहीं हैं तो सतिगुरु की कृपा से उन्हें समझ कर उन सड़कों पर चलने का यत्न करना है, उन्हें अपने जीवन में लाना है ताकि हमारा भी जीवन सफल हो सके। पढ़ने का असली फायदा तो ही है अन्यथा बाणी में भी लिखा है :-

"पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ॥"

(अंग ४६७)

अर्थात् निरा पढ़ते जाने से बात नहीं बनती। यह दास ने थोड़ी-सी इसलिए विंचार की है कि हम कहीं इन वचनों को पढ़कर इसलिए न छोड़ दें कि यह वचन तो गुरु साहिब ने भाई त्रिलोके को दिए थे, हमने इन से क्या लेना है, नहीं! गुरु प्यारो! गुरु साहिब ने अपने जीवन काल में जो भी अपने सिक्खों को वचन दिए, वह हमारे लिए भी उतने ही कीमती हैं, उतने ही अनमोल हैं, उतने ही जरुरी हैं। दास का इन वचनों को लिखने का और आपका इन वचनों को पढ़ने का तो ही लाभ है यदि इन वचनों को पढ़कर अपने जीवन हेतु हीरे-मोती इकट्ठे कर लें।)

गुरु अर्जुन साहिब ने पहला वचन भाई त्रिलोके को दिया—

परमेश्वर के दिए पर संतोष करना।

दूसरा वचन था—

क्रोध का त्याग करना है।

क्रोध तन को गालता है। बाणी में भी मोहर लगी है—

''कामु क्रोधु काइआ कउ गालै॥
जिउ कंचन सोहागा ढालै॥''

(अंग ६३२)

तीसरा वचन—

जीवों पर दया करना।

चौथा वचन—

सुखमनी साहिब की बाणी पढ़नी व सिमरन करना।

पाँचवा वचन—

रज़ा मानना

छठा वचन—

शरीर में से अहंकार का त्याग करना।

भाई त्रिलोका ने यह गुरु साहिब के दिए ६ वचन अपने दामन में डलवा लिए, अपने हृदय की डायरी पर लिख लिए। भाई त्रिलोका की सुरक्षा दस्ते की नौकरी थी। अपनी हकूमत के बादशाह के साथ जाता था।

इतिहास लिखता है कि एक बार अपनी हकूमत के बादशाह के साथ, भाई त्रिलोका शिकार करने जा रहा था कि बादशाह ने शिकार करने के लिए अपनी तलवार निकाली। भाई त्रिलोके ने भी अपनी तलवार निकाली और एक हिरणी का शिकार किया। जब शिकार किया तो हिरणी का पेट फट गया। हिरणी के पेट में दो बच्चे थे, जो इसकी आँखों के समक्ष तड़प-तड़प कर मर गए। इसके मन ने आवाज दी कि आज गुरु साहिब के दिए तीसरे वचन का

अपमान हो गया है।

गुरु साहिब ने वचन दिया था कि जीवों पर दया करनी है। अब सोचता है, क्या करूँ? सुरक्षा दस्ते का सदस्य हूँ, बादशाह के साथ शिकार के लिए जाना पड़ता है, कौन-सा ढंग अपनाऊँ कि गुरु साहिब के वचन का अपमान न हो, गुरु साहिब का वचन संभाल सकूँ। सोच-विचार कर इसने ढंग क्या अपनाया—लोहे की तलवार निकाल कर काष्ठ (लकड़ी) की डाल ली कि काष्ठ की तलवार से जीवों की हत्या नहीं होगी। २-३ सप्ताह बीते, किन्तु जैसे दास ने पहले भी लिखा था कि बीच में से होते हैं शिकायतें करने वाले, इज्जत उछालने वाले। उसके साथियों में से ही किसी ने बादशाह को शिकायत कर दी कि भाई त्रिलोका लोहे की तलवार की जगह काष्ठ की तलवार रखता है।

बादशाह ने सोचा यदि अकेले त्रिलोके की तलवार की चैकिंग करूँगा तो उसे पता लग जाएगा और हो सकता है किसी ने झूठी शिकायत की हो और यदि ऐसा हुआ तो उसे बहुत बुरा लगेगा। यह विचार कर उसने एक दिन अकस्मात ही ऑर्डर निकाला कि आज सभी की तलवारें चैक करनी हैं। अब ध्यान देना, गुरु के वचनों को संभालने वालों के, सुखमनी साहिब की बाणी के नेमियों की गुरु कैसे लाज बचाता है। सुरक्षा दस्ते के ३०-४० सदस्य थे। सभी ने बारी-बारी अपनी तलवारें चैक करवानी शुरु कीं। अब भाई त्रिलोका, मन ही मन में गुरु साहिब के चरणों में अरदासें कर रहा है, अंदर सुखमनी साहिब की पंक्तियाँ पढ़ रहा है—

'अपुने जन का परदा ढाकै॥'

(अंग २८५)

अरदासें कर रहा है कि सतिगुरु आप ही कृपा करना, आप जी का वचन संभालने के लिए काष्ठ की तलवार डाली थी, आप ही कृपा करना, मेरी इज्जत रखना, मेरी लाज बचाना। लाईन लगी हुई थी, बारी-बारी सभी अपनी तलवारें चैक करवा रहे थे। जब भाई त्रिलोके की बारी आई, इसने गुरु साहिब के चरणों का ध्यान करके अपनी तलवार, म्यान में से निकाली तो अफसर को वह काष्ठ की

तलवार, लोहे की तलवार की तरह चमकती नजर आई। अब भाई त्रिलोका भी हैरान कि तलवार तो मेरी काष्ठ की ही है फिर अफसर की आँखों पर कैसे पर्दा पड़ गया।

प्यारो ! यह कोई सिर्फ बीती साखियाँ ही मत समझना, आज भी जिसके पास सुखमनी साहिब की देन है, यह हमारी इज्जत बचाती है। वह बात बन जाती है—

अखीआं विच घट्टा
मुँह विच डट्टा।
बिड़ बिड़ तके
बोल न सके।

अन्य भी कई पक्षों से परमात्मा अपने प्यारों की इज्जत रखता है, उनकी लाज बचाता है, किसी भी पक्ष से उनकी पीठ नहीं लगने देता।

गुरु साहिब के समय की भी ऐसी उदाहरणें मिलती हैं। सूरज प्रकाश ग्रंथ में एक कथा मिलती है। 'शीहा व गजन' की :

शीहा गजन दोनो भाई।
आए सतिगुरु की सरणाई।

यह दोनों भाई हुए हैं गुरु नानक साहिब के समय । गुरु नानक साहिब ने इन्हें वचन किया था कि दो समय सत्संग किया करो।

(यहाँ दास एक बात स्पष्ट कर दे, सत्संग से भाव सिर्फ समूह से मत लेना, समूह में भी संगत होती है, लेकिन जब आप दो-चार शरीर मिलकर भी गुरु के विचार, गुरु की कथा-कहानियाँ करते हो तो यह भी सत्संग है। सत्संग आप अकेले भी कर सकते हो, अकेले घर बैठ कर भी टेप लगाकर भी सत्संग हो जाती है, बाणी पढ़ कर संगत हो जाती है, सत्संग गुरु के इतिहास की कोई किताब अथवा कोई अन्य धार्मिक किताब पढ़कर भी अकेले हो जाती है।)

किसी ने बाबा नंद सिंघ जी को प्रश्न कर दिया था कि दो

समय सत्संग का क्या लाभ हैं ? बाबा जी कहने लगे, बर्तन इतना मैला नहीं होता कि कई जन्म बारी ही न आए, मैल साथ-साथ धुल जाती है। आप कभी नोट करो कपड़ा कम गंदा हो, बड़ी आसानी से धोने से मैल उतर जाती है, जितना कपड़ा अधिक मैला हो, उतना ही साफ करना कठिन होता है, समय भी अधिक लगता है। इसके अलावा कई कपड़े ऐसे भी होते हैं, जिन से कारें, मशीनों के पुर्जे इत्यादि साफ किए जाते हैं, जिनकी कालिख ऐसी पक्की होती है कि हजारों बार धोने से भी साफ नहीं होती। कपड़ा फट जाएगा लेकिन साफ नहीं होगा। बाबा जी वचन करते थे कि इसी तरह यदि कोई प्रभात काल (अमृत वेले) उठकर बाणी से जुड़ता है, उसंके रात के किए पाप धुल जाते हैं और जब रात को जुड़ता है तो दिन के किए पाप धुल जाते है, पाप जमा नहीं होते। दो समय सत्संग करने से साथ-साथ बर्तन साफ होता जाता है।)

इन दोनों भाईयों ने गुरु साहिब का वचन संभाल लिया। दो समय बाणी से जुड़ना, संगत भी करनी। इतिहास लिखता है, शीहे की लड़की की शादी आ गई। घर में कोई बहुत अमीरी नहीं थी बस गुजारा हो रहा था। मन में भावना बनी की विवाह से पहले घर में संगत के चरण भी डलवाएं जाएं। घर में सत्संग करवाया। बारात के लिए जो रसद लाई गई थी, उस में से अधिकांश रसद संगत के लंगर पर लग गई। समर्था अनुसार थोड़ा बहुत और राशन लाया गया।

प्राचीन समय ऐसा था, दो-तीन दिन बारात लड़की वालों के घर ठहरा क़रती थी, पर अचानक उन्हें संदेश मिला कि बारात सात दिन रुकेगी। उन्होंने तो प्रबंध किया हुआ था दो दिन के राशन का पर अब सोचते हैं कि बारातियों की खातिरदारी कैसे होगी। शीहे के अंदर भरोसा था जिस गुरु के चरण पकड़े हैं, वह बहुत समर्थ है, वह स्वयं सारे कार्य संवारेगा, इज़्जत रखेगा। कहने लगा किसी ने भी पदार्थों वाले बर्तनों पर से कपड़ा उतार कर नहीं देखना कि कितनी चीज़ रह गई है। सामान बनाते जाओ, बर्तनों में डालते जाओ और बांटते जाओ। और स्वयं गुरु साहिब के चरणों में

अरदास कर दी, सतिगुरु जी! कन्या का कार्य है स्वयं लाज रखना, इज्जत बचाना।

इतिहास लिखता है कि सात दिन सात रात बारात रुकी। सभी ने पकवान ग्रहण किए, किसी भी पदार्थ की कोई कमी न आई, यह गुरु साहिब का कौतुक ही था। बस प्रत्येक संगत का प्रेमी हाथ में कुछ न कुछ लेकर आ ही रहा था। गुरु साहिब ने संगत द्वारा बरकत डलवा दी क्योंकि उसका स्वभाव है– इज्जत रखना।

एक बार फरीद जी चले जा रहे थे। रास्ते में कब्रें आ गईं। वहाँ एक कब्र खाली पड़ी थी, उस कब्र में से आवाज़ आई, ''फरीद किधर जा रहा है, कहाँ दुनिया के झंझटों में फँसा पड़ा है, एक दिन तो तूने मेरे पास ही आना है, छोड़ प्रपंचों को और अभी ही आ जा मेरी गोद में।''

(यह पढ़ कर हो सकता है अनेकों के मन में शंका पैदा हो गई हो कि कब्र में से, मिट्टी में से आवाज़ कैसे आ सकती है। एक बात जान लेना, जो परमात्मा के भक्त होते हैं नाम-बंदगी में रंगे होते हैं, जिनकी वृत्ति नाम जप जप कर ऊँची हो जाती है, वह मिट्टी से, पानी से, हवा से भी बातें कर लेते हैं, उन्हें सृष्टि के पत्ते पत्ते में से, हर कण में से परमात्मा की आवाज़ सुनाई देती है।)

गुरुबाणी में इस समय की गवाही है :

फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघरिआ घरि आउ॥
सरपर मैथै आवणा मरणहु ना डरिआहु॥

(अंग १३८२)

कब्र में से आई यह आवाज़ सुन कर एक बार फरीद जी के पैर रुक गए, मन कांप गया, सोचा सचमुच ही एक दिन तो मैंने मिट्टी की गोद में ही आना है। फरीद जी एक दो मिनट रुके, अंतर्ध्यान हुए तथा फिर चल पड़े। मिट्टी में से फिर आवाज़ आई, ''फरीद, क्या तुम्हें मेरी गोद अच्छी नहीं लगी ?'' अब फरीद कहने लगे, ''ऐ मिट्टी! मुझे एक बात का जवाब दो कि तुम्हारे पास कौन से गुण हैं, जो मैं तुम्हारे पास आ जाऊं।'' मिट्टी कहने लगी, ''मेरे

पास तीन ऐसे अनमोल गुण हैं, जिनको सुनकर तुम हैरान हो जाओगे।''

फरीद जी मिट्टी से उसके गुण सुनने के लिए रुक गए। मिट्टी कहने लगी, ''मुझ में सबसे पहला अनमोल गुण है, जब प्राणी को कोई नहीं संभालता, कहते हैं ले जाओ इसको, तब मैं संभालती हूँ। दूसरा गुण मैं प्राणी के ऊपर नीचे पड़कर उसकी इज्जत बचाती हूँ। तीसरा गुण मैं मिट्टी हूँ और कुछ देर बाद प्राणी को अपना ही रूप अर्थात् मिट्टी ही बना देती हूँ।''

मिट्टी से उसके गुण सुनकर फरीद फिर चल पड़े। मिट्टी कहती है, ''क्या तुझे मेरे गुण अच्छे नहीं लगे? मेरे गुण सुनकर भी आगे चल पड़ा है।'' फरीद कहते हैं, ''मिट्टी! यह तीनों गुण मेरे मुर्शिद, जिसके मैंने चरण पकड़े हैं, उस में भी हैं।''

प्यारो! आप यह बात स्वयं पर ले आओ। यह तीनों गुण आपके मुर्शिद, आपके पिता, आपके मालिक, आपके गुरु नानक– जिसके आप ने चरण पकड़े हैं, उसमें भी हैं।

पहला गुण–

किसी प्राणी को चाहे घर से लाख धक्के पड़ते हों, लाख तिरस्कार पड़ते हों, यदि वह गुरु के द्वार जाए, गुरु घर जाए, कोई नहीं कहता, यहाँ क्यों आया है।

दूसरा गुण–

जिस बारे हमारा विचार चल रहा है, यदि आप गुरु नानक के घर से जुड़े हो, आपके घरों में प्रभातकाल (अमृत वेला) है, नाम-बंदगी की देन है, सुखमनी साहिब की देन है, कोई आप पर एकदम परेशानी बन जाए, कोई संकट काल बन जाए, कोई सिर पर मुश्किल आ जाए, वह लाज बचाता है, जैसे मर्जी कठिन समय निकाले, हमारी बांह पकड़ता है, संकटकाल से बचाता है।

तीसरा गुण–

बाणी से, सिमरन से जुड़ने वालों को गुरु नानक अपना रूप

बना देता है। संगत करने वाले में, बाणी से एकाग्रचित जुड़ने वाले में धीरे-धीरे गुरु नानक के गुण आने शुरु हो जाते हैं।

हे मिट्टी! मेरा मालिक संभालता भी है, इज्जत भी रखता है और तू अपना रूप मिट्टी बनाएगी। मेरा स्वामी अपना रूप स्वामित्व वाला बना देता है। इसलिए प्यारो! हमारी गोद गुरु नानक ही हो।

अमृतसर में एक चन्नण सिंघ नामक कालोनी है। उस कालोनी में रहने वाले परिवार की एक महिला का पति पंजाब रोडवेज की बस का ड्राइवर था। उसकी बस के नीचे कोई व्यक्ति आ गया। अब बन गई सिर पर एकदम मुश्किल। नौकरी से छुट्टी हो गई, केस पड़ गया। (जब तक केस चलता है, थोड़ा बहुत वेतन मिलता है।) अब अकस्मात ही विपत्ति बन गई, नौकरी भी गई, वेतन भी थोड़ा– सा मिलना जिससे घर का निर्वाह भी न होना, ऊपर से केस भी पड़ गया, उसका खर्चा भी और सज़ा का भी डर। कोई साल बीत गया केस लड़ते, तारीखें पड़ती जाएं, कोई फैसला न हो।

भगवान की करनी, कोई गुरमुख प्यारा उन्हें मिल गया। उसने पूछ लिया, यह जो भी आपसे दुर्घटना हुई है, यह अचानक हुई है या जानबूझकर? उसने बताया कि अचानक यह दुर्घटना हुई है। उस गुरमुख प्यारे ने प्रेरणा दी कि गुरु नानक का घर बहुत बड़ा है, उसका सहारा लो। यह भी कोई कर्मों की खेल है जो कोई परीक्षा की घड़ी बन गई है। आप दरगाही बाणी, बख्शिशों से भरी अनमोल बाणी सुखमनी साहिब का सहारा लो, मालिक अवश्य आपकी इज्जत बचाएगा, आपकी लाज रखेगा। उसने रास्ता दिया कि रोज बाबा दीप सिंघ जी के द्वार पर प्रेम से सुखमनी साहिब का पाठ करो और श्रद्धा से एक घण्टा झाड़ू की सेवा करो, सप्ताह बाद देग कराकर अरदास करते जाओ कि बाबा जी कृपा करो, केस चल रहा है, स्वयं ही कोई मार्ग निकालो, हमारी लाज रखो।

अब वह ड्राइवर इतना श्रद्धालु नहीं था, लेकिन उसकी पत्नी के अन्दर बड़ी श्रद्धा थी गुरु घर के प्रति, बाणी के प्रति। ड्राइवर तो न माना, मगर उसकी पत्नी ने सुखमनी साहिब का आँचल

पकड़ लिया। उसने प्रतिदिन बाबा दीप सिंघ जी के द्वार पर जाकर सुखमनी साहिब का पाठ भी करना और श्रद्धा से झाड़ू भी देना।

ड्राइवर के भीतर धैर्य नहीं था। उसने कहना तू चाहे जितनी मर्जी बाणी पढ़ती जा और चाहे जितनी मर्जी बाबा दीप सिंघ जी के द्वार पर जाकर अरदासें करती जा, अनुरोध करती जा, मुझ पर जो केस बना है, उससे मुझे कोई नहीं बचा सकता, मुझे सज़ा होकर ही रहनी है, परन्तु पत्नी धैर्यवान थी। उसने अपने भरोसे में दरार न आने दी और रूटीन से अपना नियम अदा करती गई।

जिस दिन केस की तारीख थी, उसने पति को भी निवेदन करके प्यार से मना लिया कि आज अवश्य बाणी पढ़कर बाबा जी के चरणों में हाजिरी लगा कर कचहरी जाओ। पति सहमत हो गया। पत्नी के कहे अनुसार बाबा जी के द्वार पर सुखमनी साहिब पढ़ कर, कुछ देर झाड़ू की सेवा की और देग करा कर अरदास की कि बाबा जी! आप ही कोई विधि बनाओ।

दास विचार कर रहा है सुखमनी साहिब की बड़ाई पर कि जब इस बाणी का सहारा कोई ले ले तो कैसे मार्ग निकल आता है, लाज रह जाती है। अब जब वह सुखमनी साहिब का सहारा लेने के पश्चात कचहरी गया तो वहाँ उनके वकील ने जज के सामने यह प्वाइंट रखा, कहने लगा, "जज साहिब, मैं आपके ध्यान में एक बात लाना चाहता हूँ कि इस ड्राइवर की बस के नीचे जो व्यक्ति आया था, वह पिछले टायर के नीचे आया था।

(यहाँ एक बात ध्यान में रखना कि जब अगले टायर के नीचे कोई व्यक्ति आए तो ड्राइवर की गलती होती है, लेकिन यदि पिछले टायर के नीचे आए तो इसमें ड्राइवर की कोई गलती नहीं मानी जाती जबकि नीचे आने वाला का अपना ही कसूर होता है।) जब वकील ने जज के आगे यह प्वाइंट रखा, तो उसने एक दो गवाहियां लीं, सबूत चैक किए और फैसला दे दिया कि व्यक्ति पिछले टायर के नीचे आया था, इसलिए ड्राइवर की कोई गलती नहीं, इसे बरी किया जाता है।

अब स्वयं ही आप अनुमान लगा लो कि वही केस जिसे चलते

साल हो गया था, कोई रास्ता नहीं था मिल रहा, परिवार वालों को भी यह यकीन हो गया था कि सज़ा निश्चित है, लेकिन सुखमनी साहिब की बाणी ने कैसे बांह पकड़ ली, परिवार की इज्जत रख दी। देखो! वही वकील साल से केस लड़ रहा था, परन्तु उसके दिमाग में यह प्वाइंट पहले नहीं आया, परन्तु जब गुरु-कृपा करे, उधर से मीटर चले तो फिर वह कैसे दिमाग में ला देता है।

दास का यह किसी का बीता जिक्र लिखने से भाव है कि जीवन में एक जैसा समय कभी नहीं रहता। कभी सुख होते हैं और कभी दुख। कई बार बड़ा सुन्दर सुख का समय चल रहा होता है कि अचानक दुख का समय आ जाता है, अचानक मुश्किल समय बन जाता है, लेकिन एक बात याद रखना कि यदि हमारे घरों में सुखमनी साहिब का पहरा है, तो वह लाज रखेगा, स्वयं हमारी बांह पकड़ेगा, इज्जत रखेगा। अर्थात् कर्मों अनुसार कई बार कोई ऐसा समय आ जाता है, बन जाता है मुश्किल समय, लेकिन जिसकी वह मालिक लाज रखे फिर उसे कोई ध्वस्त नहीं कर सकता, क्योंकि यह उसका आदिकाल का स्वभाव है कि वह अपने प्यारों की, भक्तों की इज्जत रखता आया है।

यदि द्रोपदी के कर्मों अनुसार उस पर मुश्किल समय आया तो परमेश्वर ने स्वयं उसकी लाज रखी। कौरव उसकी इज्जत उछालना चाहते थे, पर भगवान ने ऐसी लाज रखी कि वह कपड़े उतारते जा रहे हैं और उधर से लाखों मीटर कपड़ा चला आ रहा है।

दास तो कई बार सोचता है कि हम है क्या हैं, विशुद्ध-पुतले, सिर्फ उसकी डोरी काम करती है। उससे हर वक्त डर कर रहना चाहिए। यदि वह साथ न हो तो क्या का क्या बन जाता है। यदि वह चाहे तो किसी को आकाश पर चढ़ा दे और यदि उसकी कृपा उठ जाए, आँख झपकने के समय में आकाश पर चढ़ा हुआ आदमी भी सीधा जमीन पर आ गिरता है। यदि वह साथ हो तो हमारे कर्मों में लिखी मुश्किल घड़ियाँ भी काट देता है। इसलिए अवश्य अरदास किया करो, सतिगुरु! कृपा करना, यदि हमारे कर्मों में लिखी भी

है कोई परीक्षा तो हमारी लाज बचाना, हमारी इज्जत रखना।

गुरु अर्जुन साहिब ने भाई माधोदास को भेजा था कश्मीर प्रचार करने हेतु। बड़े रंग में, प्रेम में, गुरु साहिब के चरणों में लीन होकर कथा-कीर्तन करता था, संगतें भी शामिल होती थीं। कई बार रात के २ बज जाने, रंग में समय का पता ही न लगना।

एक बार कश्मीर के एक घर में चोरी हो गई। वहाँ के राजा ने कानून बना दिया कि रात १२ बजे के बाद जिसे बाजार में गुजरते देख लिया, उसे फांसी की सजा दी जाएगी। संगतों को जब इस कानून के बारे में पता चला तो उन्होंने भाई माधोदास जी को विनती की कि ११ बजे तक समाप्ति कर दिया करो। उन्होंने इस तरह ही करना शुरु कर दिया। लेकिन एक दिन ऐसा प्रेम में भीगे हुए, नेत्र बंद करके गुरु-चरणों में लीन हुए कीर्तन कर रहे थे कि समय का पता ही न लगा।

संगत अपने समय पर धीरे-धीरे उठनी शुरु हो गई और अपने घरों को चली गई, लेकिन एक नवयुवक रह गया। जिसका नियम था समाप्ति के पश्चात जाने का। जब समाप्ति हुई तो साढ़े बारह बज चुके थे। वह नवयुवक अपने घर जा रहा था कि मार्ग में पुलिस ने पकड़ लिया और राजा के समक्ष पेश किया और कहा कि यह नवयुवक १२ बजे के बाद सड़क पर घूमता पकड़ा गया है। राजा ने हुक्म किया कि इसे सूली पर चढ़ा दो।

अब जब उसे सूली पर चढ़ाने लगे तो उससे पूछा गया कि तेरा कोई सज्जन-मित्र है? क्या तू किसी से मिलना चाहता है? वह नवयुवक कहने लगा कि भाई माधोदास जी, जिनका मैं सत्संग सुनने जाता हूँ, उन्हें बुला लो।

भाई माधोदास जी को बुलाया गया और उन्हें बताया गया कि इस नवयुवक ने कानून की उल्लंघना की है, इसे फांसी की सज़ा दी जानी है। माधोदास जी ने कहा कि यह चोर नहीं है, यह हमारे साथ सत्संग कर रहा था। इसने कोई गलत काम नहीं किया। इसे छोड़ दीजिए। वह कहने लगे कि हम इसे छोड़ नहीं सकते, क्योंकि यह कानून है, इसे फांसी अवश्य दी जानी है। माधोदास जी कहते

हैं कि अच्छा फिर आप अपना काम करो और मैं अपना करता हूँ। माधोदास जी ने चौकड़ी मार ली और वृत्ति ले गए गुरु अर्जुन साहिब के चरणों में। विनती की कि सच्चे पातशाह! यह नवयुवक रोज का संगी है, इसे फाँसी की सजा मिलने जा रही है, आप कृपा करके आओ, अन्यथा लाज लग जाएगी।

उस समय लकड़ी की सूली होती थी, नीचे से लकड़ी मोटी व ऊपर से जाकर पतली व तीक्ष्ण, अड्डे पर चढ़ाकर उसे पेट में चुभा दिया जाता था। इधर माधोदास जी गुरु साहिब के चरणों में लीन होकर प्रार्थना कर रहे थे, उधर लकड़ी की सूली हरे-भरे पौधे का रूप धारण कर गई। अब लकड़ी तो पेट में चुभ सकती है, लेकिन पौधा नहीं।

यह सारा दृश्य देखकर राजा भी और उसके सिपाही भी हैरान हो गए। समझ गए कि यह कोई पूर्ण संत है। माधोदास जी के चरणों में झुक कर माफी मांगने लगे।

इशारा लेना—कर्मों मुताबिक अकस्मात यदि कोई मुश्किल घड़ी आ गई तो गुरु के चरणों में प्रार्थना करने के फलस्वरूप लाज रखी गई, सूली हरी हो गई, गुरु नानक आ गया। भाई माधोदास जब धन्यवाद करने आए तो सतिगुरु गुरु अर्जुन देव जी ने यह शब्द उच्चरित किया—

''मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सि तरिआ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ॥

(अंग ४६५)

अर्थात् यदि हम भी गुरु के बने होंगे, हमारे घरों में अमृत वेला होगा, बाणी का निवास होगा, सुखमनी साहिब का पहरा होगा, यदि हमारे कर्मों में कोई बदनामी की रेखा ऊपर आ भी गई तो वह हमारी इज्जत रखेगा। यह रेखाएं होती हैं—एक रेखा होती है प्रभुता की, आदर की। यह रेखा ऊपर को जा रही होती है कि जगत में तेरा आदर होगा, प्रभुता-बड़ाई, मान-सम्मान की रेखा लेकिन कई बार साथ ही एक रेखा दूसरी ओर से उस रेखा को काट रही होती

है, जिसका मतलब होता है ईर्ष्या करने वाले तुझे काटने के लिए आएंगे, तेरे निंदक भी होंगे। भाव प्रभुता की रेखा के साथ कई बार बदनामी की रेखाएं भी होती हैं। यह कर्मों की रेखाएं होती हैं। हमारे हाथों पर, मस्तक पर यदि कोई श्रद्धा से संगतों के जूते साफ करे, जूठे बर्तन साफ करे, गुरु को यह अशुभ रेखाएं मिटानी पड़ती हैं। जब कोई श्रद्धा से बाणी पढ़े तो गुरु उसके अशुभ लेख बदल देता है। गुरुबाणी में लीन होने वालों की, गुरु से प्रेम करने वालों की यदि कोई बदनामी की रेखा ऊपर आ भी जाए, वह इज्जत रखता है। ईर्ष्या करने वाले, निंदा करने वाले उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते, गुरु उसकी इज्जत बचाता है।

गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के समय, अमृतसर के निकटवर्ती गांव की एक औरत, जिसका नाम संती था, उसकी बुताले शादी हो गई। संती के माता-पिता गुरु के सिक्ख थे, लेकिन कर्मों की खेल संती का जहाँ विवाह हुआ, वह सारा परिवार सखी-सरवर का चेला था। संती गुरु की बाणी पढ़ने वाली थी, गुरुघर से प्रेम करने वाली थी। उसकी सास से यह बर्दाश्त न हुआ। उसने इन्हें अपने घर से बाहर निकाल दिया और एक कच्ची कोठरी डलवा दी।

संती खुश थी कि अब वह बिना किसी रोकटोक के बाणी पढ़ सकेगी। उसने अपने पति को प्रेरणा देकर, गुरु की साखियां सुना कर गुरु घर से जोड़ लिया।

संती के घर कुछ समय बाद एक पुत्र ने जन्म लिया, जिसका उन्होंने नाम रखा पल्ला। लेकिन परमात्मा की नियति कुछ समय बाद संती के पति का देहांत हो गया, लेकिन संती ने धीरज नहीं छोड़ा और अपने पुत्र को गुरुमत्त के मार्ग पर चलाया। उसे गुरु की साखियां, गुरु के इतिहास सुनाने जिससे 'पल्ला' गुरु-घर का प्रेमी बन गया। उसके मन में, गुरु साहिब के दर्शनों की तीव्र लालसा उत्पन्न हो गई। उसने अपनी माता से पूछना कि क्या कभी हमें भी गुरु साहिब के दर्शन होंगे। माता भी धैर्यवान थी, प्रेम वाली थी, कहती है कि सतिगुरु अन्तर्यामी हैं, उन्हें जहाँ भी कोई याद करे, वह स्वयं आकर दर्शन देते हैं।

अब मन में हर वक्त दर्शनों की अभिलाषा थी, मन में सच्चा प्रेम था गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी के लिए। हर वक्त अपने पल्लू से गुड़ की रोड़ी बांध कर रखनी कि जब गुरु साहिब मिलेंगे यह उन्हें भेंट करूँगा। दिन-रात प्रार्थनाएं करता था। कोई करे तो सही प्रेम से गुरु को मन से याद, टैलीफोन आ जाते हैं, चिट्ठियाँ पहुँच ज़ाती हैं।

गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को उसके प्रेम का संदेश पहुँचा। गुरु साहिब अपने कुछ सिक्खों सहित पल्ले के गांव बुताले पहुँचे।

यह सारा गांव सखी सरवर को मानने वाला था। उन्होंने गुरु साहिब का कोई आदर-सत्कार न किया। गुरु साहिब ने ध्यान किया कि मेरा प्यारा कहाँ है, और सीधा वहाँ जाकर घोड़ा खड़ा किया जहाँ पल्ला बैठा, गुरु साहिब को याद कर रहा था। गुरु साहिब ने उसे दर्शन देकर आनंदित किया, जो पल्लू में गुड़ की रोड़ी हर वक्त साथ रखता था। अब खोलता है कपड़े की गांठ कि गुड़ भेंट करुं और गांठें न खुलें। दुनिया का मालिक छठे पातशाह जी कहने लगे आ पल्ले, तेरी गाँठें मैं खोल दूँ, वह क्या गाँठ खोलनी थी, उसकी जन्म-जन्मांतरों की गाँठें खोल दीं।

पल्ले ने गुरु साहिब के आगे गुड़ की रोड़ी रखकर माथा टेका। सतिगुरु कहते हैं कि पल्ले! हमें बड़ी भूख लगी है। हमारे सारे सिक्ख भी भूखे हैं, हमें अपने घर ले जाकर भोजन करवा। पल्ला बड़ा प्रसन्न, गुरु साहिब को अपने घर ले गया। माता भी गुरु साहिब के दर्शन करके सूझ-बूझ भूल गई। पल्ला कहने लगा, ''माता! गुरु साहिब ने भोजन करना है, उनके लिए भोजन तैयार कर।''

सारे गाँव वाले इन से बहुत ईर्ष्या करते थे। वह सभी छत्तों पर जा खड़े हुए और हंसने लगे कि इनके घर में तो अपने लिए एक समय से अधिक का राशन नहीं होता, यह गुरु साहिब और उनके साथ कम से कम १०० सिक्खों को भोजन कैसे करवाएंगे।

उन सभी ने मिलकर सलाह की कि कोई इन्हें उधार भी न दे, फिर इनका तमाशा देखेंगे। यह अपने गुरु साहिब को भोजन

नहीं करवा सकेंगे और स्वयं इनकी बदनामी होगी। हम भी सभी मिलकर इनका मज़ाक उड़ाएंगे। लेकिन वह क्या जानते थे, दीन-दुनिया का मालिक, सभी की लाज बचाने वाला दाता जिनके घर बैठा है, उसका कोई अपमान कैसे कर सकता है।

अन्तर्यामी सतिगुरु, पल्ले को कहते हैं कि अपने गले में पल्लू डाल ले और यह जो गाँव वाले छत्तों पर खड़े हैं आपका मज़ाक उड़ाने के लिए, तमाशा देखने के लिए, उन सभी को हाथ जोड़कर, अपने घर, भोजन के लिए निमंत्रण देकर आ। जब पल्ले ने गुरु साहिब की आज्ञानुसार गाँव वालों को जाकर कहा कि आप भी हमारे घर आकर भोजन करो, तो वह कहते हैं कि अब तो इसका पूरा ही तमाशा बनेगा। जिसके घर अपने खाने के लिए रोटी नहीं, वह सभी गांव वालों को कहाँ से ख़िलाएगा ?

गुरु साहिब, अपने प्यारों की इज्जत रखने वाले दाता हैं। पल्ले को दो रुमाल दिए और कहा कि यह अपनी माता को दे और कह कि यह रुमाल आटे पर डाल दे और एक दाल पर। रुमाल उठाकर नहीं देखना।

पल्ले की माता संती ने घर में जो थोड़ा-सा आटा था, वह गूंथा और जो थोड़ी—सी दाल थी, वह पकाई और गुरु साहिब के प्रदान किए हुए रुमाल ऊपर डाल दिए। संती रोटियाँ पकाती गई और पल्ला सभी को खिलाता गया। सभी सिक्खों ने भी और सभी गांव वालों ने भी भोजन किया।

गुरु साहिब ने ऐसी कृपा-दृष्टि की, ऐसी बख्शिश की कि कोई भी कमी न आने दी, अपने सिक्खों की, अपने प्यारों की पीठ नहीं लगने दी। ऐसे उनकी इज्जत बचाई कि सारा गाँव गुरु साहिब के चरणों पर नतमस्तक हो गया और कहते हैं कि हम तो इनकी गरीबी का उपहास उड़ाना चाहते थे, लेकिन हमें पता नहीं था कि इनका गुरु इतना समर्थ है, अपने सिक्खों की कभी पीठ नहीं लगने देता।

प्यारो ! अब भी गुरु साहिब कहीं गए नहीं। आज भी अपने प्यारों के, नाम जपने वालों की इज्जत बचाते हैं। अमृतसर का एक

गांव है मजीठा। भाई साल्हो जी का स्थान है। वहाँ सेवा निभा रहे हैं बाबा गुरदयाल सिंघ जी। हर अमावस को लंगर लगता है।

उन महापुरुषों ने एक वचन सुनाया। कहते हैं कि एक बार सोमवती अमावस थी। उस दिन संगत का बहुत अधिक समूह हो गया। हर बार दो-अढ़ाई बोरियां लगती थीं आटे की। इतनी है थी, पर संगत ज्यादा होने के कारण, सेवादार ने उन्हें आकर बताया कि आटा बहुत थोड़ा रह गया है जबकि संगत अभी बहुत रहती है लंगर ग्रहण करने वाली।

महापुरुष सोच में पड़ गए, क्योंकि उन्होंने हाथ कभी किसी के आगे फैलाया नहीं था। मन में सोचते हैं कि और १०-१५ मिन्ट तक लंगर किसी को नहीं मिलना, क्योंकि आटा समाप्त होने वाला है। यह तो बड़ी अपमान वाली बात हो जाएगी कि महापुरुषों के स्थान पर लंगर ही समाप्त हो गया।

उन्होंने वचन सुनाया। कहते कि मैंने गुरु साहिब के चरणों में अरदास की– सतिगुरु! कृपा करना, आप ही लाज रखना और आप वहाँ से चुपचाप चले गए। मन में यही कि सामने तिरस्कार सुनना बहुत कठिन है, बड़ा अपमान होगा, बाद में देखा जाएगा। कहते हैं कि मैं साढ़े बारह बजे का वहाँ से निकला और श्री सुखमनी साहिब का गुटका पकड़ लिया। पाँच पाठ हो गए तो अरदास की कि भाई साल्हो जी, आपका स्थान है, आप ही लाज रखना।

शाम के ६ बजे वापिस डेरे लौटा। मन में यही था कि सेवादार कहेगा कि संगत भूखी गई, आज बड़ी बदनामी हुई, लेकिन जब सेवादार को मिले तो वह कहने लगा कि आप कहाँ चले गए थे। आपके जाने के थोड़ी देर बाद ही कोई शरीर आकर ११ बोरियां आटे की दे गया जिन में से २ लगी हैं और ६ बोरियां अभी भी शेष हैं। महापुरुष कहते हैं कि सेवादार की यह बात सुनकर मेरी आँखों में अश्रु आ गए कि हे सतिगुरु! सुखमनी साहिब की बाणी कैसे इज्जत बचाती है।

गुरु नानक बाणी से प्रेम करने वालों की, बंदगी करने वालों की हमेशा रक्षा करता है, इज्जत रखता है। किसी प्रकार की

मुश्किल घड़ी नहीं देखने देता, स्वयं लाज रखता है। जो उसके रंग में रंगे गए, उनकी सब जिम्मेदारियाँ स्वयं संभालता है।

यह सुखमनी साहिब जी की बाणी की नौवीं विशेषता कि सुखमनी साहिब की बाणी हमारी इज्जत भी बचाती है। जीवन में कई प्रकार की मुश्किलें बनी रहती हैं। कभी कोई अचानक सिर पर मुसीबत आ जाती है। कई बार कर्जा इतना सिर पर चढ़ जाता है कि इज्जत उछलने का डर होता है। कई बार बच्चा कोई ऐसी हरकत कर देता है, जिससे इज्जत उछलने का डर होता है, कई बार आप से ईर्ष्या करने वाले आपकी इज्जत उछालना चाहते हैं, कई बार आपसे खुद से ही कोई ऐसी भूल हो जाती है, जिससे आने वाले समय में बदनामी का डर होता है, घबराया मत करो, घर में सुखमनी साहिब की सैंचियां लगा लिया करो। जब लगे कोई ऐसी घड़ी आने वाली है तो करो सैंची पर पाँच पाठ एक चौकड़ी पर उसके रंग में। कुछ दिन चलने दीजिए। मना लो गुरु जी को। बात तो गुरु को मनाने की है। फिर देखो गुरु कैसे इज्जत बचाएगा। सच्चे मन से उसका सहारा लो, वह कठिन समय गुजार देगा, मुश्किल घड़ी देखने ही नहीं देगा।

दास को एक गुरमुख प्यारे ने अपनी आपबीती सुनाई। कहने लगा—एक बार किसी जगह स्टेज पर मुझसे कोई गलत विचार किया गया, गलत कथा सुनाई गई। उस समय तो पता न लगा, लेकिन जब स्टेज से उतरा तो किसी ने कहा कि मैं तेरी अपने इलाके के कुछ सिंघों को शिकायत करूँगा यह तूने जो विचार किया है, वह गलत है। वह कहता है कि जब मैं घर पहुँचा और बैठ कर सोचा तो मन में यह महसूस होना शुरु हो गया कि सचमुच आज मैं जो स्टेज पर विचार करके आया हूँ, वह गलत था। सोच में पड़ गया कि अब क्या करूँ।

उस समय गुरु साहिब के कमरे में जाकर दामन फैला लिया। स्वयं पर सज़ा लगा ली कि मैं अपने नित्यनियम के अलावा १३ दिन के लिए रोज सुखमनी साहिब का पाठ करूँगा, आप कृपा करो, जो मुझसे भूल हो गई है, मेरी भूल पर पर्दा डाल दो। उसने

बताया कि उस बात का यूं पर्दा पड़ गया कि वह बात निकली तक ही न। गुरु को मना लें तो वह हमारी भूलों पर भी पर्दा डाल देता है।

यह सुखमनी साहिब की बाणी बड़ा अनमोल खजाना है। इस दरगाही बाणी का सहारा लो। यह इज्जत भी रखती है।

६. समाज में रहते यदि हम पर कोई संकट (मुश्किल, कर्जा, वासनाएं इत्यादि) बन जाए तो श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी पढ़ने से गुरु साहिब हमारी इज्जत भी बचाते हैं। हमारा प्रयास आप जी सुखमनी साहिब का कम से कम एक पाठ रोजाना करके आप संगत ही सफल कर सकते हो।

—द्वारा : दास लेखक

"धुर की बाणी आई॥
तिनि सगली चिंत मिटाई॥"

(अंग ६२८)

कलियुगी जीवों के कल्याण हेतु पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी की रचित बाणी श्री सुखमनी साहिब जी की बड़ाईयां अपरंपार हैं। अनंत बड़ाइयां हैं श्री सुखमनी साहिब जी कीं। गुरु अर्जुन देव जी की प्रदान की इस अनमोल बाणी से कितनों ने लाभ प्राप्त किया, कोई गिनती नहीं और कितने लेते रहेंगे कोई गिनती नहीं। गुरु अर्जुन देव जी, जिन्होंने यह अमृत रूपी सुखमनी साहिब की देन हमारे दामन में डाली। शरीर का एक-एक रोम भी उनकी देनें नहीं दे सकता। किसी प्यारे ने सुखमनी साहिब जी की महिमा इस प्रकार लिखी है -

यह पन्ने नहीं यह अक्षर नहीं
यह सीना है गुरु अर्जुन का।
सुखमनी प्रेम से पढ़नी जो
यह दर्शन है गुरु अर्जुन का।
चित्त में गुप्त खजाना था
सुखमनी रूप बना दिया।
दयालु श्री गुरु अर्जुन ने
संगत की झोली डाल दिया।
यह हाथों के प्रयोग हैं
इस मृत रूह जिवा दिए।
कोढी जैसे वजीर खां
इस कंचन जैसे बना दिए।
मंगते और भिखारियों को
इस शाहे शहंशाह बना दिया।
यदि शहंशाह ने छूहा इसे
तो रब्ब के साथ मिला दिया।
यह कुंजी है दौलत की
इस में गुप्त खजाना है
यह अमृत सचखंड का
यह दरगाही खजाना है
इस में कुछ कुछ चुभन है।
चुभन में मीठी पीड़ा है।
इन चुभन को कोई समझ सके
बदली तकदीरें हैं।
इस में ऐसी शक्ति है।

जो फरशों अर्श पहुँचाती है।
सिक्ख की सब से उत्तम जगह
गुरु नानक की झोली पाती है।
सुखमनी खजाना रहमत का
यह झोलियां भरती जाती है।
यह खजाना जिस के अंदर बसा
उसे दुनिया शीश झुकाती है।

इस कवि ने अंत में एक बात लिखी है ध्यान देना :–

अंत में लिखता है–

सिक्खी सिदक की बेड़ी है
सिदक ही पार लंघाता है।
बेसिदका तभी प्यारे दरदी
पढ़ के भी गोता खाता है।

इशारा लेना–

बाणी वही है लेकिन यदि पढ़ने वाले के भीतर धीरज नहीं, भरोसा नहीं बाणी की समर्था पर, बाणी की महिमा पर तो फिर वह बात नहीं बनती, धीरज के बेड़े पार हैं। ऐसे धैर्यवान भी दास ने देखें हैं जो सुखमनी साहिब की बाणी पढ़े बिना सांसारिक कार्य की शुरुआत नहीं करते। हम कलियुगी जीवों पर दया करके, पता नहीं अपनी कितनी कमाई देकर गुरु साहिब ने यह हीरे-लालों जैसा खजाना हमारी गोद में डाला है। हम सांसारिक लोग सुखमनी साहिब की बड़ाइओं की गिनती नहीं कर सकते, सुखमनी साहिब की विशेषताओं को कलमबद्ध नहीं कर सकते। एक किताब क्या, सैंकड़ों किताबें भी लिख लें तो श्री सुखमनी साहिब की बड़ाई वर्णन नहीं की जा सकती।

लेखक के हाथ में कलम होती है। कलम जो लिखती है वह लेखक के वश में होता है, कलम के नहीं। सुखमनी साहिब की

विशेषताओं पर किताब लिखते समय यही भावना थी, यही अरदास थी गुरु साहिब के चरणों में कि गुरु अर्जुन साहिब जी! अपनी कलम बना कर जो भी इस बाणी के बारे में लिखवाना हो लिखवा लेना। जिस बाणी को पढ़ने से हमारे श्वास सफल होते हैं, हमारी हर जगह रक्षा करती है, हमारा लोक-परलोक सुखद करती है, हमारे दुखों-क्लेशों का नाश करती है, मन को शांति मिलती है, तुरीयावस्था बनती है, जो बाणी तत्व वस्तु, सहज टिकाव की बख्शिश दिलाती है, जिस बाणी को पढ़ने से अगम्य आनंद की प्राप्ति होती है, प्रभु से मिलाप कराती है, इस महान बाणी की विशेषताओं को जो भी पढ़े उसका इस बाणी से प्रेम हो जाए।

एक अभिलाषा है, सुखमनी साहिब की बाणी का महातम किसी तरीके से अधिक से अधिक दुनिया तक पहुँच सके। इस अनमोल बाणी से लगाव वह नहीं करता जिसे इसकी विशेषताओं के बारे में पता नहीं, जो इसके गुणों से, महातम से परिचित नहीं।

गुरु साहिब कृपा करें, सुखमनी साहिब जी की विशेषताएँ पढ़कर, इस अनमोल खजाने से हमारी मजबूत गांठ पड़ जाए। जब शारीरिक रोगों से दुखी, कारोबार के मंदे के कारण दुखी, गरीबी से दुखी, वहमों-भ्रमों में फंसे हुए, धागों-ताबीजों वालों की ओर भटक रहे लोग, गुरु साहिब की कृपा से लिखी इस पुस्तक में जब कोई जिक्र पढ़ें सुखमनी साहिब की बख्शिश का, उन्हें भी रंग लग जाए, वह भी इस बाणी का सहारा ले लें तो दास समझेगा यह पुस्तक लिखने का मकसद सफल हो गया।

गुरु साहिब की इस महान बख्शिश की महिमा लिखी नहीं जा सकती, लेकिन जो जो भी कोई बीते जिक्र, कौतुक सुखमनी साहिब की महिमा के गुरु साहिब ने स्वयं सिर पर हाथ रख कर दास से लिखवाएं हैं, अरदास है सतिगुरु के चरणों में कि उन्हें पढ़कर सभी को सुखमनी साहिब की बाणी पर विश्वास प्राप्त हो। सतिगुरु स्वयं ही कृपा करें, हम सभी को इस दरगाही बाणी से जोड़ें, सुखमनी साहिब की बाणी से हमारा अन्तर्मन से प्रेम हो जाए, हम गुरुबाणी के साथ लगें, गुरु अर्जुन साहिब की इस बख्शिश का लाभ हम सभी

के दामन में पड़े, गुरु साहिब की इस अनमोल बख्शिश का हम लाभ प्राप्त कर सकें।

गुरु-घर के कूकर, दास-गरीब की सभी के चरणों में एक प्रेम भरी विनती है कि गुरु साहिब की कृपा से सुखमनी साहिब की बख्शिशों पर लिखी यह पुस्तक पढ़कर आप जी सभी सुखमनी साहिब का नियम बनाओ। जो बिल्कुल नहीं पढ़ते तो चाहे शुरु-शुरु में १२ अष्टपदियां प्रतिदिन शुरु कर दें, फिर धीरे-धीरे वृद्धि करते जाएं।

आज से ही यह प्रण कर लो कि श्री सुखमनी साहिब का कम से कम एक पाठ रोजाना जरूर करना है और जितना ज्यादा हो सके उतना अधिक लाभ है इससे हम अपने पिछले बीते साल जिन में हमने श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी नहीं पढ़ी वह भी श्वास सफल कर लेंगे और आगे भी श्री सुखमनी साहिब जी की बाणी के फलस्वरूप हमारा जन्म सफल हो जाएगा।

एक ही चाव है दास का, क्या बच्चे, क्या वृद्ध, क्या युवा, हरेक की इस दरगाही बाणी से प्रीत हो जाए।

दास गुरबाणी के प्यार में यह बचन लिख रहा है, यदि श्री सुखमनी साहिब जी का पाठ रोजाना नियम से करें तो कई आने वाले दुख-क्लेश, ताप-संताप, आधियां-व्याधियां पहले ही किनारा कर जाती हैं। श्री सुखमनी साहिब जी से प्रेम करके देखो तो सही।

आप भी इस अनमोल बाणी से जुड़ो और अपने परिवार, अपने संबंधियों, जान-पहचान वालों को भी सुखमनी साहिब की महिमा की किताब पढ़ाकर सुखमनी साहिब से जोड़ो। आज से एक प्रण भी कर लो कि कोई भी घर में दुख आए, मुसीबत आए सुखमनी साहिब का सहारा लेना है, ताबीजों-धागों, जंत्रों-मंत्रों वालों का द्वार नहीं खटखटाना, गुरु साहिब कृपा करें, हम सभी का इस पवित्र, अनमोल, बख्शिशों व रहमतों से भरी बाणी से अटूट-प्रेम बने।

"हभि गुण तैडे नानक जीउ मैकू थीऐ
मै निरगुण ते किआ होवै॥"

(अंग ६६४)

सथु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई.......॥

(अंग ४४८)

☆☆☆

माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट) द्वारा विधवा महिलाओं की मदद हेतु एवं अन्य भलाई के धार्मिक कार्यों हेतु निम्नलिखित प्रेरणा यूनिट गुरु महाराज की कृपा से चल रहे हैं।

१. श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी सत्कार कमेटी श्री अमृतसर, होशियारपुर, लुधियाना, दिल्ली, शाहबाद मारकंडा, कुराली, गांव मुछल, पट्टी, तरनतारन इत्यादि अन्य शहरों में।

२. माता कौलां जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतें) तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।

३. माता कौलां जी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।

४. माता कौलां जी कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।

५. माता कौलां जी बंदी छोड़, चैरिटेबल अस्पताल, तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।

६. माता कौलां जी पब्लिक स्कूल, तरनतारन रोड,श्री अमृतसर।

७. माता कौलां जी संगत निवास (सराय, निकट गुः बाबा अटल राय साहिब जी, श्री अमृतसर।

८. माता कौलां जी सिक्ख चेतना मल्टी मीडिया, तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।

९. गुरुधाम दर्शन स्नान (निष्काम यात्रा बस) तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।

१०. द्विमासिक धार्मिक रसाला (पत्रिका) धन्य धन्य माता कौलां जी सिफति सालाह।

११. माता कौलां जी अनहद-नाद गुरुबाणी कैसटें एवं आडियो सी.डी. और वी.सी.डी. यूनिट तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।

१२. माता कौलां जी भलाई मिशन निष्काम आनंद कारज, तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।

१३. बाबा दीप सिंघ जी चैरिटेबल अस्पताल, हरनाम नगर, माडल टाऊन, लुधियाना।

१४. बीबी भानी जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतें), हरनाम नगर, माडल टाऊन, लुधियाना।

१५. माता सदा कौर जी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, सराय रोड, जण्डियाला गुरु।

१६. माता कौलां जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतें) सराय रोड़, जण्डियाला गुरु।

१७. बाबा नंद सिंघ जी चैरिटेबल अस्पताल, सराय रोड, जण्डियाला गुरु।

१८. भाई मरदाना जी कीर्तन प्रशिक्षण केन्द्र, तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।

१६. माता कौलां जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतें), अहमदाबाद।

२०. माता कौलां जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतें), मेरठ।

२१. माता कौलां जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतें), नासिक।

२२. माता कौलां जी विधवा बहन भलाई केन्द्र, सूरत।

२३. श्री गुरु रामदास जी भलाई केन्द्र, पटियाला।

२४. माई भागो जी विधवा बहन भलाई केन्द्र, तिलक नगर, दिल्ली।

२५. माता साहिब कौर जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतें) चण्डीगढ़।

२६. बाबा जवाहर सिंघ जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतें) होशियारपुर।

२७. भाई घनईया जी पैथालोजी व डिस्पैंसरी, देहरादून।

२८. मदर कौलां जी वैल्फेयर सैंटर, अमरीका।

२६. बाबा दीप सिंघ जी भलाई केन्द्र, ग्वालियर।

३०. माता नानकी जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतें) सैदां गेट, जालंधर।

☆☆☆

सभा द्वारा निर्माणाधीन कार सेवा गुः पहुविंड साहिब में

- गुः साहिब आगमन स्थान धन्य-धन्य बाबा दीप सिंघ जी।
- प्रकाश स्थान हाल पहले से तीन गुणा बड़ा किया जा रहा है।
- सुन्दर पार्क।
- माता जीऊणी जी लंगर हाल।
- फूलों से सजी हुई (२०० गाड़ियों के लिए) पार्किंग।
- नए समय की कम्प्यूटर तकनीक से भाई भगतू जी अजायब घर।
- बाबा दीप सिंघ जी इंगलिश मीडियम डे बोर्डिंग स्कूल।
- कलगीधर संगत निवास।

सभा द्वारा हो चुकी कार सेवा

- गुरुद्वारा माता कौलां जी श्री कौलसर साहिब, नजदीक गु:, बाबा अटल राय साहिब।
- गुरुद्वारा सत्संग सभा धन्य-धन्य बाबा दीप सिंघ जी शहीद, बाज़ार लुहारा, चौक लक्ष्मणसर।
- अनेकों गुरुद्वारों में सोने की पालकियाँ, सोने के दरवाजे, सोने की खिड़कियों की सेवा।

☆☆☆